आखिरी छलांग

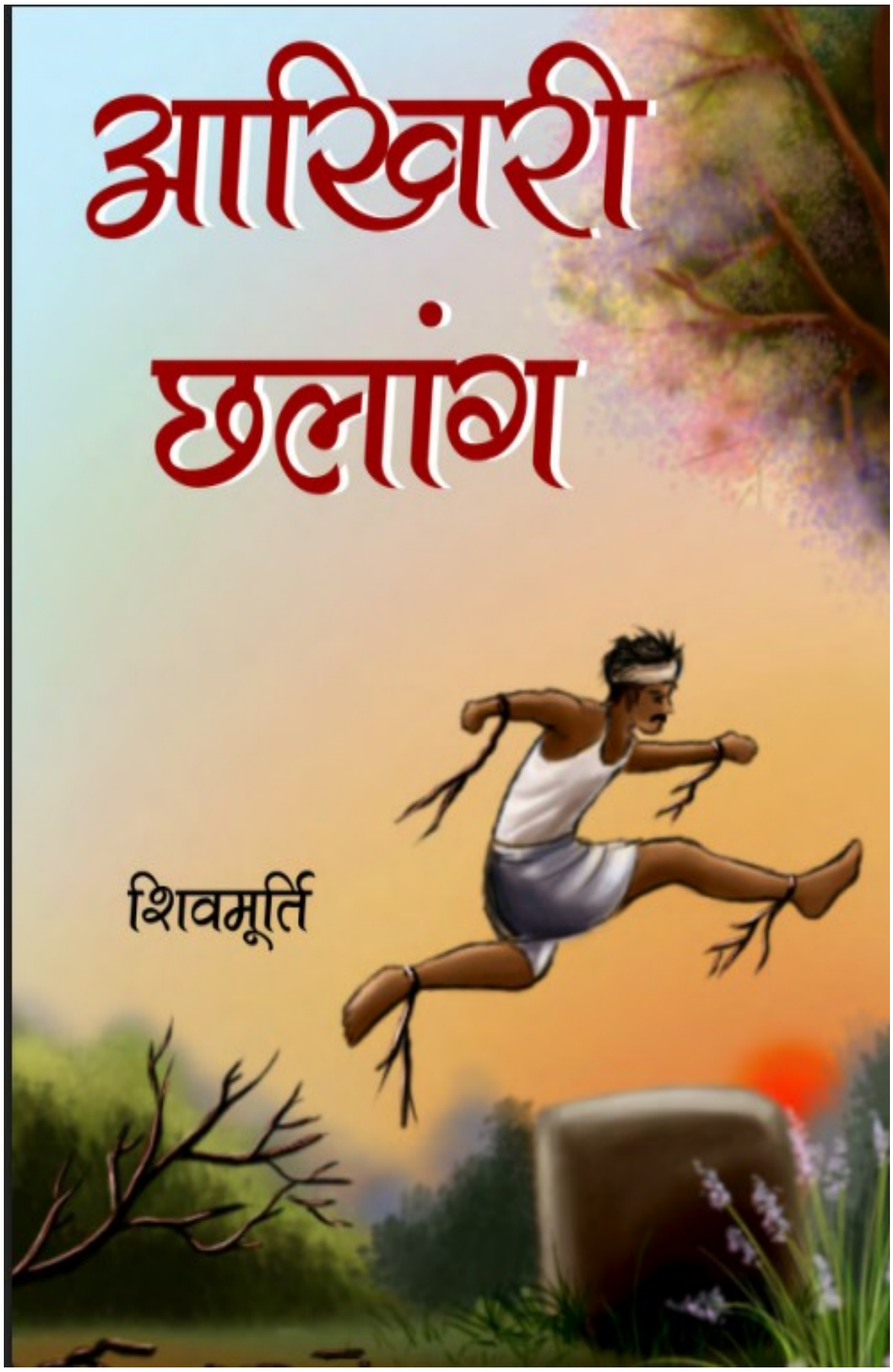

शिवमूर्ति

आखिरी छलांग

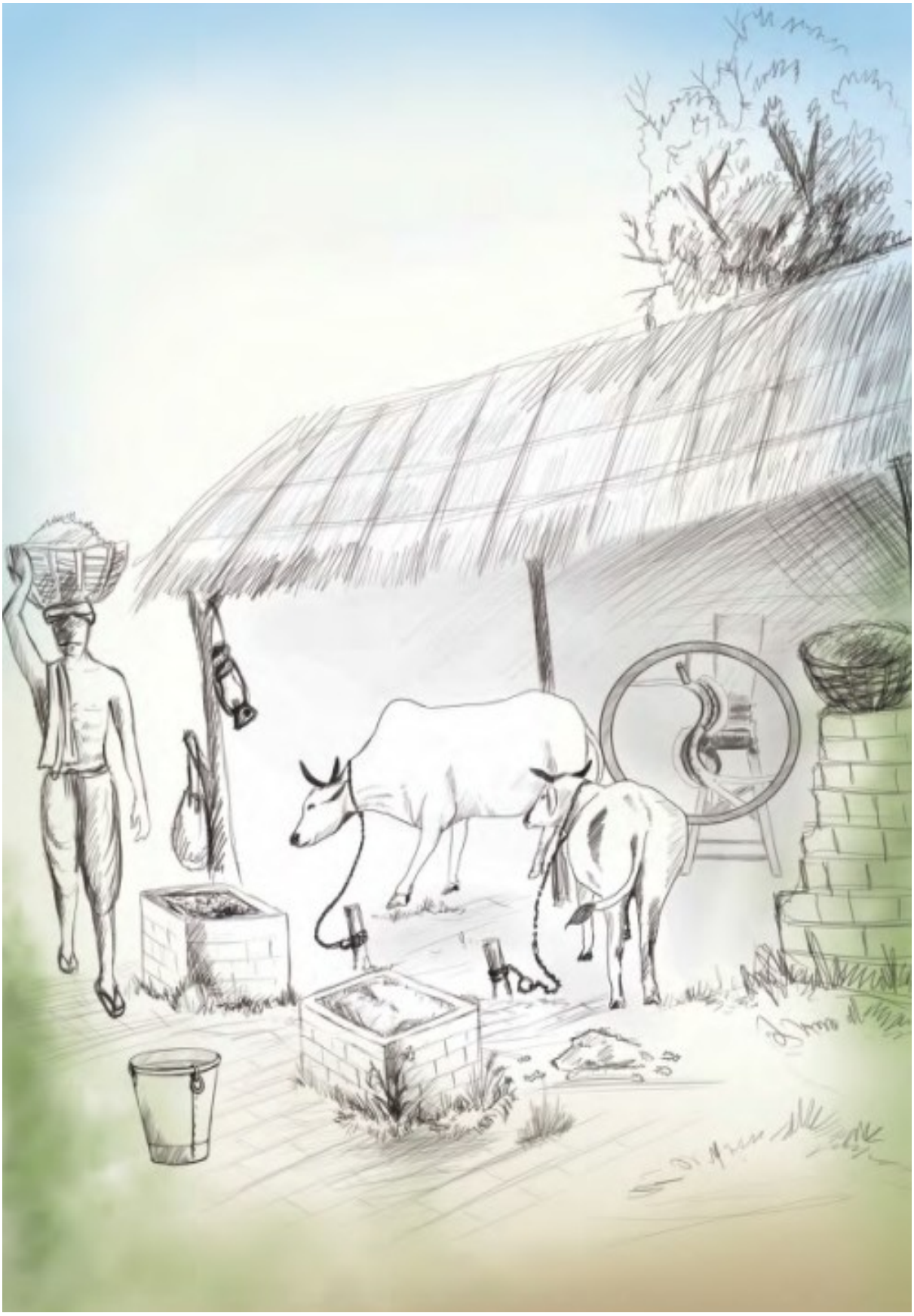

पहलवान ने चरी का बोझ चारा मशीन के पास पटका तो पास में सोया पड़ा कुत्ता चौंककर भौंकते हुए भागा।

सिर से अँगौछा उतारकर उन्होंने चेहरे का पसीना पोंछना शुरु ही किया था कि ललिया के हुँकारने और चितकबरे के फुफकारने की आवाज़ एक साथ आई।

-सबर करो। सबर करो। उन्होंने बैलों की तरफ़ देखते हुए कहा।

भूखे प्यासे होने पर दोनों बैल अलग-अलग तरह से ध्यान आकर्षित करते हैं। ललिया थूथन उठाते हुए गले से हूँ- हूँ की आवाज़ निकालता है और चितकबरा गर्दन नीचे झुकाकर, दोनों सींग आगे करके नाक से फो-फो करके गुस्सा दिखाता है।

काटने लगी। थोड़ी दूर बँधा बछड़ा, गाय और भैंस उठकर खड़े हो गये। गाय खूँटे के चारो तरफ़ चक्कर

ओसारे से बाल्टी उठाकर वे कुएँ की ओर जाने लगे तो घर से बाहर आती-पत्नी बोली-इतने तड़पे नहीं जा रहे हैं। अभी बिटिया आ रही है। पिलायेगी। आपको लम्बे रास्ते जाना है। धूप तेज़ होने से पहले नहा-खाकर जल्दी निकल जाइए।

पहलवान ने जैसे सुना ही नहीं। कुएँ के कुंड से पानी निकाल-निकालकर सारे जानवरों को पिलाया। फ़िर ओसारे की अलगनी से धोती लेकर नहाने के लिए कुएँ की ओर बढ़े।

पहले वे नहाने के लिए सगरे पर ही जाते थे। चाहे जितनी देर होती रहे। बिना नागा। दस-पाँच मिनट गहरे नीले पानी में तैरे और गहराई तक डुबकी लगाये बिना उनका नहान पूरा ही नहीं होता था। कहते थे कि जब चिखुरी साह ने गाँव वालों के नहाने के लिये इतना बड़ा पक्का सागर बनवा दिया है, अपनी जिन्दगी भर की कमाई गाँव वालों के नहाने के लिये लुटा दी है तो उसमें न नहाकर कुएँ या गड़ही में नहाना सगरा और चिखुरी साह दोनों का अपमान है।

पर इधर कुछ दिनों से पहलवान को एक-एक करके इतने 'झोड़' लगे कि उनकी एक ढर्रे पर चलने वाली आत्मतुष्ट दिनचर्या में खलल साफ़ दिखने लगा है। कितने दिन हो गये सगरे में नहाये। अब अपने दरवाज़े के कुएँ से ही दो चार लोटे पानी दायें-बायें डालकर नहान पूरा करने लगे हैं।

थोड़ी देर बाद पत्नी फ़िर अंदर से निकलीं तो क्या देखती है कि धोती तार पर लटकी है और पप्पू के बाबू नीम की छाया में खड़े लोटे वाले हाथ को हवा में हिला हिलाकर अकेले ही कुछ बोले जा रहे है।

यह लक्षण भी पिछले साल भर से ही उभरा है। खेती-बारी का काम करते हुए, कहीं बैठे या चलते हुए अकेले पड़ते ही वे मन ही मन न जाने क्या बड़बड़ाने लगते हैं; जैसे सामने खड़े किसी आदमी से बात कर रहे हों। होंठ चलते दिखाई पड़ते हैं। कभी कभी आवाज़ भी निकलने लगती है। तब किसी के टोकने पर चौंककर चुप हो जाते हैं। कोई सामने रहा तो झेंपकर मुस्कराने लगते हैं।

1

पत्नी को पता है की पिछले कुछ बरस से इनके मन का बोझ धीरे-धीरे बढ़ रहा है। सयानी बेटी के लिए दो साल से वर खोज रहे हैं लेकिन कहीं कामयाबी नहीं मिली। पिछले साल तो किसी तरह बेटे की इंजीनियरी की फ़ीस भर दी गई। इस साल कोई रास्ता नहीं दिखता। तीन साल हो गए गन्ने का बकाया अभी तक नहीं मिला। सोसाइटी से ली गयी खाद का क़र्ज न चुका पाने के चलते पिछले साल पकड़ लिए गए थे। हर दूसरे महीने ट्यूबवेल के बिल की तलवार सिर पर लटक जाती है। बेटी का विवाह कही तय भी हो जाये तो उसके खर्च का इन्तज़ाम कैसे होगा? यह सब स्थायी चिन्ता के कारण बने हुए हैं। मन रोज़-रोज़ छोटा होता जा रहा है। पहले इनके अट्टहास को बीघा भर की दूरी से सुना जा सकता था। अब हँसी निकलती भी है तो बेआवाज़।

इसलिए अब अपने आदमी की इस आदत का वे मज़ाक नहीं उड़तीं। उनकी बेख्याली को किसी ऐसे तरीके से दूर करती हैं जिससे उन्हें झेंपना न पड़े। इस समय भी वे चुपचाप ओसारे में चली गई और वहीं से आवाज़ लगाई खाना तैयार है। नहा लीजिए तो रोटी सेकें।

सुनकर पहलवान चैतन्य हुए। लोटा रख दिया और बाल्टी से ही पानी उठा उठाकर सिर पर डालने लगे - हर-हर गंगा पारबती। पाप न रहि जाय एक रत्ती।

सुनकर पत्नी मुस्कुराई - जाने किस जन्म में जाने कौन से पाप किए हैं, जो रोज़ रोज़ धोने के बाद भी अभी तक नहीं छूटे। जो सचमुच रात दिन पाप में लगे हैं वो भी क्या कभी उन्हें धोने की सोचते होंगे।

धोती बदलकर पहलवान ने उसका एक सिरा कन्धे पर डाला और नीम के नीचे स्थापित शंकर भगवान को जल चढ़ाया। गीली मिट्टी से माथे पर तिलक लगाया और बचपन में याद हनुमान

चालीसा के अंशों को बुदबुदाते हुए आँगन में आ गये। इधर उनमें यह नया परिवर्तन हुआ शंकर जी को जल चढ़ाने का। लोन बकाया में पकड़े जाने के बाद एक दिन कहीं से तीन चार श्वेत श्याम चिकने पत्थर लाये। नीम की जड़ के पास आठ-दस ईटों को जोड़कर छोटा सा चबूतरा बनाया और इन पत्थरों को इसी पर स्थापित कर दिया। गाय के कच्चे दूध से धुलते ही यह पत्थर शंकर भगवान बन गए। किसी ने उन्हें बताया है कि बासी मुँह नहाकर शंकर भगवान को जल चढ़ाने से अनिष्ट की शान्ति होती है। पहले उन्हें सबेरे खाने के लिए कुछ न कुछ मिलना ज़रूरी होता था। चाहे चबेना ही। पर अब तो दस ग्यारह बजे तक, कभी-कभी तो बारह-एक बजे तक भी मुँह में कुछ नहीं जाता और उन्हें भूख महसूस नहीं होती। तीन साल पहले तक जब तक बड़ी बेटी नहीं ब्याहे थे, उन्हें लगता ही नहीं था कि वे पैंतालीस पार कर रहे है, कि उनके शरीर या मन में पचीस तीस की उम्र वाली ताक़त नहीं रह गयी है। पर इधर देखते देखते बहुत अन्तर आ गया है। पता नहीं कब से उन्होंने अपनी लम्बी मूँछों को छोटी कराना शुरू कर दिया। जिन लोगो ने उन्हें नागपंचमी के दिन लम्बी छलाँग लगाते देखा है वे उनमें आये इस परिवर्तन को देखकर आसमान की ओर देखने लगते है।

पत्नी ने आँगन में छाँह की तरफ़ पीढ़ा रख दिया था। वे आकर बैठे। पत्नी ने रसोई से परसी हुई थाली लाकर उनके सामने रखी। भात के सफ़ेद गोले के ऊपर रखी ताज़ा सिंकी फूली हुई रोटी देखकर अच्छा लगा। रोटी का टुकड़ा तोड़ते हुए भाप की गर्मी हाथ में लगी और पकी रोटी की गंध मन मुदित कर गई। लोटे का पानी हथेली पर लेकर उन्होंने थाली के चारो तरफ़ अर्पित किया और तर्जनी के नाखून से लोटे को दो बार बजाया-- टन टन ।

2

पत्नी एक हरा मिर्च और ताज़ा धुली लम्बी मूली थाली में रख गई। वे चुपचाप खाने लगे।

अगली रोटी के साथ पत्नी एक गिलास मड्ढा भी दे गईं। फ़िर एक एक रोटी सेंककर थाली में डालती रहीं। सिर झुकाकर खाते पति को देखकर उन्हें अपने दिवंगत ससुर की याद आ गई। धीरे-धीरे ये भी ससुर के रंग-ढंग अपनाते जा रहे हैं। अभी चार-पाँच साल पहले तक घर में कोई और न रहे तो ये खाने की थाली हाथ में लेकर चूल्हे तक चले आते थे। उनकी देह से देह सटाकर उकडू बै बैठते थे और अपने हाथ से एक आध कौर उन्हें खिलाने की कोशिश करते थे। अब धीरे धीरे पुरखा बनते जा रहे हैं। बोलते हैं तो लगता है कि कितनी दूर से बोल रहे हैं। उन्हें भी पता है कि घर गृहस्थी का बढ़ता बोझ इन्हे घुन की तरह अंदर से खोखला कर रहा है। लेकिन मन मारने से क्या होगा ?

वे एक हाथ में लोटा और दूसरे में कुत्ते के लिए 'कौरा' लेकर बाहर निकले। कुत्ते को बुलाकर कौरा दिया और कुल्ला करने लगे। ओसारे से सींक निकालकर दाँत खोदते हुए थोड़ी देर बेटी को चारा मशीने चलाते हुए देखते रहे। झुककर चरी का 'चान' उठाती और मशीन के दाँतो में ठेलती बेटी उन्हें पहले से ज्यादा हृष्ट-पुष्ट लगी। वे खैखारते हुए मँड़हे में बिछी अपनी चारपाई पर आकर बैठ गये। पत्नी हुक्का भर कर ले आई और पायताने बैठकर उनके पाँव दबाने लगी। वे लेटकर हुक्का पुड़काने लगे। नेपथ्य से आती चारा मशीन की खचर पचर उनकी आँखों में नींद उतारने लगी। पत्नी ने हुक्का लेकर दीवार के सहारे टिका दिया। खरटि सुनकर वे आश्वस्त दिखीं। उन्होंने लोगो को कहते सुना है कि आदमी बहुत चिंता या शोक में होता है तो नींद गायब हो जाती है। कम से कम पहलवान के साथ अभी यह स्थिति नहीं आई है । पति के लिए पहलवान सम्बोधन याद करके अब उन्हें थोड़ा अजीब लगता है। कहाँ तब के वे पहलवान और कहाँ आज के 'ए'। दिनोंदिन सिकुड़ते सिमटते जाने वाले। पहलवान कि पहलवान की परछाई?

हो जाएगी। अचानक खरटिं बंद हो गए। उन्हें जग हुआ जानकार पत्नी धीमे से बोलीं- उठिये, नहीं तो देर

पहलवान की आँखें खुल गयीं।

पत्नी उठकर अंदर गई और एक हाथ में उनका कुर्ता, जाकिट और दूसरे में पम्प जूता लेकर लौटीं। कुर्ता जाकिट अलगनी पर टाँग कर वे पुराने कपड़े से जूते की धूल साफ़ करने लगीं।

बेटी के लिए वर की तालाश में निकलने का उनका आज का प्रोग्राम कई दिन पहले बना था लेकिन बीच में खेलावन सिकरेटरी ने आज ही के दिन जिलाधिकारी कार्यालय पर धरना प्रदर्शन का कार्यक्रम बना लिया।

दरअसल पिछली खरीफ़ की शुरुआत में तो बहुत अच्छी बरसात हुई थी। लगता था, इस साल कहीं धान रखने की जगह नहीं बचेगी, लेकिन उत्तरा नक्षत्र ने धोखा दे दिया। झकझोर पुरवा बहने लगी। नीले आसमान में सफ़ेद बगुलों की तरह बादलों के टुकड़े दिखते और ग़ायब हो जाते। भीषण सूखे के सारे लक्षण प्रकट हो गए। राजधानी तक हल्ला मच गया। एक चौथाई फ़सल सूख गयी तो क़रीब दस दिन बाद नहर में पानी आया। और आया तो इतनी तेजी से चढ़ा कि पटरी बह गयी। इस गाँव और सामने वाले गाँव की सिंवार रात भर में ही डबाडब भर गई।

हुआ यह कि पिछली गर्मी में न तो नहर के पेटे में जमने वाली सिल्ट (बालू) निकाली गई न पटरी की मरम्मत की गई। फ़र्जी बिल बनाकर पेमेंट ले लिया गया। जब पटरी कट गई तो अपनी गर्दन बचाने के लिए नहर विभाग द्वारा दोनों गाँव के ख़िलाफ़ नहर काटने के लिए रिपोर्ट लिखा दी गयी।

कई साल पहले, सन '68 में सुखे के समय फ़सल बचाने के लिए गाँव वालो ने सचमुच नहर की पटरी काट दी थी। काट क्या दी थी, नयी पाइप डालने के लिए पटरी खोदने लगे तो पानी का बहाव इतना तेज़ था कि सँभाला ही नहीं जा सका। पटरी कटती चली गयी। उस समय जो मुक़दमा गाँव वालो के ख़िलाफ़ लिखाया गया वह बीस बाईस साल तक चला। तारीख पर तारीख। फ़िर पूरे गाँव पर सामूहिक जुर्माना हुआ। उस समय तो गाँव वालो की कुछ ग़लती भी थी। नहर चढ़ी होने के दौरान पाइप डालने का काम नहीं करना चाहिए था। लेकिन इस बार तो बिना ग़लती के ही सब लोग नाथ दिए गए थे।

इसलिए तय हुआ की इस ज्यादती के ख़िलाफ़ धरना प्रदर्शन करके ज्ञापन दिया गया। मांग की जाय कि जल्दी से जल्दी नहर में मौजूद सिल्ट और पटरी की दशा की टेक्निकल जाँच करायी जाए ताकि बिना सफ़ाई मरम्मत कराये फ़र्जी भुगतान लेने और फ़र्जी मुक़दमा दर्ज कराने का आरोप सिद्ध हो सके। वरना फ़िर बीस - बाईस साल तक पूरे गाँव को बिना क़सूर फ़र्जी मुक़दमा झेलना पड़ेगा।

तय हुआ था की सवेरे दस बजे दोनों गाँव के लोग सगरे पर इकट्ठा होंगे। यहीं से चार ट्रैक्टरों में बैठकर चलेंगे। लेकिन बारह बजे तक सिर्फ पचीस-तीस आदमी इकटठा हुए।

पचीस - तीस लोगो से क्या जुलुस बनेगा, काका? खीझकर खेलावन ने वयोवृद्ध लल्लू सिंह से पूछा -- तीन - तीन बार आदमी घर तक बुलाने गया तब यह हाल है।

लल्लू सिंह सबसे पहले आने वालों में से थे। कुढ़ कर बोले सब साले जनाना पैदा हुए हैं। सिपाही चौकीदार तक से डर जाते हैं।

- जबकि इसी गाँव में जज, अफसर, दरोगा, वकील मिलाकर दर्जनों हैं। पहलवान बोले।

- यह भी एक कारण है। जज साहब के पिताजी या दरोगा जी के भाई जानते हैं कि एक फोन आने की देर है। एफ. आई. आर. से उनका नाम निकाल दिया जायेगा। तब क्या जरूरत है उतनी दूर गोड़ तुराने जाने की ?

खेलावन ने असहमति में सिर हिलाया यह दो चार लोगो का कारण हो सकता है काका। ज्यादातर ठाकुर बाभन इसलिए नहीं आये क्योंकि इस प्रदर्शन का कार्यक्रम खेलावन जैसी पिछड़ी जाति के आदमी ने बनाया है।

-- अरे, मैं नहीं आया तुम्हारी अगुवाई में चलने के लिए? लल्लू सिंह ने सान्त्वना दी - ऐसी बात मत सोचो ।

- आपकी बात दूसरी है काका। चार लोगो ने अपना ट्रेक्टर लाने की हामी भरी थी। दो ही आये। क्या इसके पीछे कोई राजनीति नहीं है कि ठाकुरों के दोनों ट्रैक्टर नहीं आये और कुर्मी और प्रजापति के आये। हीरा सिंह के बेटे लल्लन ने तो डीजल भराने के नाम पर कल ही दो सौ रुपये एडवांस लिए थे।

4

और आज किसी से कह रहा था कि ट्रेक्टर सीज हो गया तो रिलीज कराने में हज़ार रुपये खर्च करने पर भी दस दिन लग जायेंगे। इसका हर्जा खर्च कौन देगा? भला बताइये, यह बात सोचनी थी तो एडवांस लेने के पहले सोचते। हम दूसरा इन्तज़ाम करते।

- इस तरह की सोच हो भी तो उसे उभाड़ने से कोई फायदा नहीं होगा खेलावन। भुअर पंडित ने समझाया - तुमने एक जरुरी काम की शुरुआत की है। फ़िर से सबको इकट्ठा किया जायेगा।

-ज्ञापन लिखने का काम शीतला मास्टर को सौंपा गया था। पता चला कि उनकी ड्यूटी मतदाता सूची बनाने में लग गयी। लग गयी तो लग गयी। लेकिन ज्ञापन का मसौदा तो देकर जाना चाहिए था।

पहलवान को लगता है कि इतनी पढ़ाई लिखाई करने और देश दुनिया घूमने के बाद भी गाँव का आदमी सामूहिक हित के काम के लिए एकमत होने के मुद्दे पर भी जाति - पाँति की भावना से उबर नहीं पता। इसी तरह की बात उन्होंने एक बार अख़बार में पढ़ी थी कि जिनकी नीतियों और षडयन्त्रों के चलते किसान का जीना दूभर हो रहा है, उनसे लड़ना तो दूर, किसान को उनकी पहचान ही नहीं है। हमारी सरकार की नीतियाँ तो हवा हवाई हैं ही, वे बाहर की कम्पनियों के साथ भी ऐसे-ऐसे एग्रीमेंट कर रही है जो सौ साल पहले गिरमिटिया मजदूरों के साथ हुए एग्रीमेंट से भी ज्यादा ख़तरनाक हैं और गाँव के लोग झबिया में बंद उन मुर्गों की तरह हैं जो बेचने के लिए शहर ले जाये जा रहे हैं। रात होते होते इन्हे किसी न किसी मांसाहारी के पेट में समा जाना है। लेकिन इन्हें अपनी जान पर मंडराते इस ख़तरे का रंच मात्र एहसास नहीं है। छुरी तेज़ करके इन्तज़ार में बैठे कसाई के बारे में

इन्होने कभी सुना ही नहीं है। झबिया के अंदर वर्णवाद और नस्लवाद का घमासान चल रहा है। लाल सुनहरे पंख वाले और लम्बी कलँगी वाले या उन्नत नसल के मुर्गे, देशी, मटमैले या छोटी कलेंगी के मुर्गो को हेय दृष्टि से देखते हुए उन पर अपनी शक्ति और श्रेष्ठता का रौब झाड़ रहे हैं। उनको लतिया रहे हैं। नोच खसोट रहे हैं। उनके लेखे झनिया के अंदर विजय मिल गयी तो समझो विश्व विजय कर लिया। एकदम ठीक लिखा था अख़बार ने। पहलवान सोचते हैं - जातिवादी अलगाव न होता तो कितनी मजबूती आ जाती गाँव में! फौलाद जैसी मजबूती।

खेलावन कहते है अचानक किसी दिन बिना जमानती वारंट जारी हो जायेगा। तब सभी अलग - अलग जमानत कराने दौड़ेंगे। वकील खोजेंगे। हज़ार बारह सौ खर्च करेंगे। लेकिन अभी....।

बड़ी देर तक भुनभुनाने और बिसूरने के बाद सब लोग वापस लौटे।

पहलवान वहीं से चरी काटने चले गये। रास्ते में ही सोचा कि अभी भी वरदेखी के लिए निकला जा सकता है। उनके फुफेरे भाई तीरथ ने अपने पड़ोस के गाँव के इस लड़के के बारे में बताया है। आठ कोस का रास्ता है। पुरानी साइकिल है, तब भी दो-ढाई घंटे में आराम से पहुँच जाएंगे।

वे उठे। बण्डी पहनी। धोती खोलकर नए ढंग से पहनी। साइकिल निकालकर पोंछा। दोनों टायर दबाकर हवा का अंदाज़ लगाया। कुर्ता जाकिट पहना। तलवे की धूल झाड़कर जूता पहना। पत्नी ने बालों में तेल लगाकर कंघी पकड़ा दी। उन्होंने बालों में लगा तेल पोंछकर चेहरे और मूँछ पर मला और छूहे में टंगे शीशे में झाँककर कंघी करने लगे। अँगोछा गले में डालकर एक बार फ़िर शीशे में देखा। खुद को अच्छे लगने लगे। पत्नी को देखा। पत्नी उन्हें ही देख रही थी। मुस्कुरा दी। वे मुस्करा तो नहीं पाये लेकिन आँखों के फैलने से लगा कि उनके अंदर भी थोड़ी हरियाली उतर आई। उन्होंने कम्बल लपेटा और बहार आकर साइकिल के कैरियर में दबाने लगे। पत्नी भी बाहर निकल आईं। पहले ऐसा नहीं होता था। इतना एकान्त होने पर कहीं जाने के पहले वे उन्हें अवश्य ही बाँहों में भर कर चूमते। शरीर के कोमल भाग पर

वे उनके पंजो का दबाव महसूस करतीं।

आँचल के खूँट से दस का नोट खोलकर पति के हाथों में पकड़ते हुए बोलीं- रख लीजिए। कहीं पंचर वंचर हो जाये...। और अपने भैया से कहियेगा कि वही समझदारी से सारी बात करें। उन्हीं को बोलने देना। खुद आगे-आगे मत हाँकिएगा। नहीं तो बनता काम भी बिगड़ जायेगा।

वे भड़क गए - मैं बिगाड़ लूँगा तो तुम्हीं क्यों नहीं चली जाती बड़का साफा बाँधकर।

पत्नी हँसते हुए बोली- मेरा मतलब, बेटी के बाप बनकर जाइए। रुस्तम पहलवान बनकर नहीं। काम बनता है थोड़ा दब कर बोलने से।

- तो क्या में झगड़ा करने जाता हूँ?

पत्नी को पछतावा होने लगा कि जाते समय क्यों ऐसी बात छेड़ दी! फ़िर मानो सन्धि प्रस्ताव किया - धूप बड़ी तेज़ हो गई है। सिर में अँगोछा बाँध लीजिए।

वे चल पड़े। लम्बा कुर्ता हवा से फरफराने लगा। पत्नी उन्हें जाते हुए देखती रही।

चेहरा जरूर सँवरा गया है पर सज-धज लेते हैं तो अभी भी आँखों में बस जाते हैं। लम्बा शरीर । बोलती आँखें। मूँछे छोटी करवा लिए हैं फ़िर भी... पहले जब बड़ी बड़ी मूछें रखते थे तब देखते जरा । घर गृहस्थी का जंजाल ही ऐसा है कि बड़े बड़ो को कजरी कबीर भूल जाती है। उन्हें अपने बाबा द्वारा गाये जाने वाले गीत की एक कड़ी याद आ गयी-

महँगी के मारे बिरहा बिसरिगा, भूलि गयी कजरी कबीर देखिके गोरिया के उमड़ल जोबनवा, उठे ना करेजवा मा पीर

कर पाता। अर्थात, महँगाई ने ऐसा मारा है कि गोरी का उमड़ता हुआ यौवन भी कलेजे में पीर नहीं पैदा

बहुत दिनों बाद इस रस्ते पर आना हो रहा है। जब बुआ जीवित थीं तो अक्सर आना-जाना होता था। मकर संक्रांति के दिन 'खिचड़ी' पहुँचाना तो उन्ही के ज़िम्मे रहता था। बुआ उन्हें देखकर कितनी खुश हो जाती थीं। यह ख़ुशी और वात्सल्य उनके रोम-रोम से प्रकट होता था। कहतीं आज सबेरे से ही मेरी बाई आँख फड़क रही थी। तभी जान गयी कि मेरा दुलरुआ भतीजा आ रहा है। कितना खिलाती

पिलाती थीं ! दो तीन दिन से पहले आने नहीं देती थीं। फुफेरे भाई तीरथ उनसे दो साल बड़े थे। लाग - डाट करके सेरों दूध पिला देती थी।

जहाँ आज पक्की सड़क है, वहाँ पहले कच्ची लीक थी। बड़े सवेरे पैदल चलने पर कहीं दोपहर तक आठ कोस जमीन तय होती थी। बीच में एक दो जगह किसी बाग़ में रुक कर सुस्ताते थे या किसी कुएँ तालाब पर हाथ पैर धोकर थकान उतारते थे। पानी पीते थे।

यह जो आम और महुए के चार-पाँच बूढ़े पेड़ दिखायी पड़ रहे हैं जिनकी जड़ो के आसपास की मिट्टी कट कर बह गयी है, यहाँ बहुत बड़ा बाग़ था। बीच में ताल और किनारे - किनारे भीटे पर पेड़।

6

अब ताल भठ गया है। भीटा समतल हो गया है।

यहाँ एक साधू की कुटी थी। पानी पीने के लिए जो भी राहगीर, कुटी पर रुकता, बाबा उसे दो बतासे देते थे। कब के मर खाप गए होंगे। कुटी की ज़मीन सड़क में समा गयी है। टूटी छूहियों वाला कुआँ अभी भी पटरी के किनारे तिरस्कृत खड़ा है। यहाँ से शुरू होता था बेलसौना वाला महाऊसर जो शिवगढ़ तक फैला था।

अरे, महुए का वह विशाल छतनार पेड़ भी नहीं है! इस महाऊसर के रास्ते में उस पेड़ के अलावा कोस सवा कोस में दूसरा कोई पेड़ नहीं था। धूप में तप कर आते राहगीर मन ही मन तय करते थे कि किसी तरह उस महुए तक पहुँच जाएँ तो उसकी छाया में बैठकर सुस्तायें। यहीं एक काला मरकहवा साँड़ रहता था। रास्ते में मिलने पर मारने के लिए दौड़ा सकता था लेकिन महुए के नीचे मिलने पर नज़र उठाकर ताकता तक न था। मस्ती में बैठा पागुर करता रहता था। आसपास के गाँव वाले गर्भाधान के लिए अपनी गायें हाँककर उसके पास लाते थे। कभी वह तुरन्त गाँववालो की मनोकामना पूरी करने लगता, कभी बाल ब्रह्मचारी की तरह बिना गायों की ओर नज़र उठाकर देखे उनसे दूर किसी दिशा में चल पड़ता। गाय वाले परेशान हो जाते। पता नहीं कब कैसे मरा होगा !

नहर की क्रासिंग आ गयी। यहाँ से नहर की पटरी पकड़ना था। कच्ची पटरी पर जो सर्पिल लीक बन जाती है उस पर साइकिल चलने का अपना अलग ही मज़ा है। नहर में पानी चल रहा था। इसके

किनारे खेतीबारी का काम तेजी पर था। खेत की दशा देखकर ही पता चल जाता है कि इसका मालिक आलसी है या मेहनती। खुद जुटता है या हलवाहों के भरोसे रहता है।

एक किसान खेत हेंगाता (पाटा देता) मिला। उसकी घरवाली लाल साड़ी का कछाड़ मारे कुदाल से कोन गोड़ रही थी। उसका तीन साल का नंग- धडंग बेटा हेंगा के पीछे-पीछे पैर पटकता ठुनकता चल रहा था। शायद बाप से हेंगा पर बैठाने की ज़िद कर रहा था। हेंगा पर बैठने का आनंद उसके लिए ऐसा ही था जैसे औरों के लिए पहली पहली बार मोटर रेल क्रूज या हवाई जहाज़ में बैठने का होता है। लेकिन बाप ने उसे सख्ती से डाँट दिया होगा। तनिक सी असावधानी के चलते हेंगे के नीचे पिस जाने का जोखिम कौन बाप उठाएगा ! लड़के की कमर में काले मोटे सूती धागे की करधनी बंधी थी। करधनी की लटकन के सिरे पर लगी लाल भुंडी (गोली) उसके बाल लिंग पर हलके हलके उठ गिर रही थी। उन्हें बच्चे की माँ की समझदारी पर ख़ुशी हुई। बच्चा छुन्नी की बजाय इस भुंडी को ही खींचता नोचता रहे, इसकी व्यवस्था

बैलों के पले शरीर और चमकते रोयें से ही यह साफ़ था कि यह औरत अपने हाथ से बैलों की सानी पानी करती होगी। सहसा उन्हें अपने दाहिने बैल की याद आयी। उसके पिछले बाएँ खुर में भादों से ही कीड़े पड़े हैं। दो बार कम्पाउण्डर बुलवा कर बीस-बीस रूपये फ़ीस देकर उन्होंने दवा डलवाई लेकिन अभी तक उसका लँगड़ाना पूरी तरह बंद नहीं हुआ है। पता नहीं कैसी दवा डाला? हर चीज़ में नकल घुस गयी है।

सहसा पटरी के किनारे दौरी में रखी यूरिया के झक्क सफ़ेद दानो को देखकर उनकी चिन्तन धारा बदल गयी। गेहूं की बोवाई एकदम सिर पर है। उन्हें खाद खरीदने के लिए कम से कम दो हज़ार रुपयों की तुरन्त जरूरत है। इन्तज़ाम न हो पाने के चलते सरसों और बरसीम तो बिना खाद डाले ही बोना पड़ा।

टेलीग्राम ग्रुप @WinRookgNorol से जुड़ें

जिस परिवार में बाहर से नगदी की आमदनी नहीं है उसका आज के ज़माने में गुज़र होना मुश्किल है। जैसे गड्ढे से खोदी गयी मिट्टी उसी गड्ढे को भरने के लिए पूरी नहीं पड़ती वैसे ही खेती किसानी की आमदनी खेती-किसानी के खर्चे भर को भी नहीं अँटती। और कहाँ से अँटे! डीजल, बिजली, खाद कीटनाशक, जोताई -मड़ाई मजूरी सबका रेट तो हर साल दस पाँच रुपये बढ़ जाता है। नहीं बढ़ता तो किसान की पैदावार का दाम। इसलिए जितनी लम्बी खेती उतना ही लम्बा घाटा। जितनी ज्यादा पैदावार उतना ज्यादा घाटा। पहलवान को लगता है कि जैसे नहर के पेटे के भीतर सिल्ट भरती है, किसान की तक़दीर में भी साल दर साल सिल्ट भरती जा रही है।

सोचा था इस साल वरुणा सारसों बोयेंगे। कहते हैं बड़ी अच्छी पैदावार होती है लेकिन मौके से हाथ में पैसा न आ पाने के चलते नहीं बो सके। आलू का बीज खरीदने के लिए पैसा जुटाना पहाड़ हो गया। दस रुपये किलो रुपये का बीज ख़रीद कर बोये हैं। डर है की तैयार होने तक आलू का रेट गिर कर दो रुपये किलो से भी नीचे न चला जाय। आषाढ बीतते बीतते जैसे ही किसान के घर से निकल कर बाज़ार में पहुँची, फ़िर दस रुपये किलो बिकने लगती है। सारे हालत तो मर जाने के हैं। जिन्दा कैसे रहा जाए !

वे मन ही मन तत्काल खोपड़ी पर सावर खर्चा का हिसाब लगाने लगे। ट्यूबवेल का बिल सवा चार सौ रुपये। इंजीनियरिंग पढ़ रहे बेटे का मासिक खर्च डेढ़ हजार रूपयें। खाद के लिए दो हज़ार रुपये। बैल का खुर ठीक न हुआ तो ट्रैक्टर से खेत की जोताई के लिए हज़ार-बारह सौ रुपये। धन का भाव इस समय गिर कर पांच सौ रुपये कुन्टल हो गया है। यही दो महीने रोक जा सके तो छः पौने छः सौ का रेट मिल सकता है। लेकिन लगता है कि रोकना नहीं हो पायेगा। बछड़े को वे जेठ से ही बेच रहे हैं। पाँच हज़ार का धन है लेकिन उन्होंने मन में सोच रखा है कि चार हज़ार से ऊपर जितना भी मिल जायेगा उतने में दे देंगे। अगहन तक न बिक तो फ़िर जेठ आषाढ़ तक बैठाकर खिलाना पड़ेगा। बैलों को आज कल पूछता कौन है ! नयी पीढ़ी के लड़के लड़कियाँ हाथ में गोबर छूने को तैयार नहीं। लोगों के खूंटे से बैल तेज़ी से ग़ायब हो रहे हैं। बछड़ा नहीं बिका तो आठ दस कुन्टल गेहूँ तुरन्त बेचना पड़ेगा। बखार एकदम ख़ाली हो जायेगा। फिर अगले महीने से क्या बेच कर भेजेंगे?

सबसे ज्यादा चक्रव्यूह में फँसें हैं वे बड़े बेटे को इंजीनियरिंग की पढाई में डालकर। चार साल तक हर महीने डेढ़ हजार का खर्चा। पहली कोशिश में भर्ती का टेस्ट पास कर गया तो सारा गाँव-जवार बड़ाई करने लगा। पड़ोसी खेलवान सबेरे सबेरे दरवाजे पर आकर हँसते हुए बोले- अब तिजोरी खरीदने का इन्तज़ाम करिए पहलवान भइया। नोट रखने की जगह नहीं बचेगी घर में। पुआल और भूसा सम्भालने के दिन गए समझो। भगवान ने छप्पर फाड़ कर दे दिया।

ऐसे माहौल में जब गाँव के ज़्यादातर लड़के आवारा और पियक्कड़ निकल रहे हैं उनके बेटे की सफलता से सारा गाँव खुश था। यह तो बहुत बाद में पता चला कि अब इंजीनियरिंग पढ़ना बी.ए., एम.ए. करने जैसा नहीं है। एकमुश्त पचास-पचपन हज़ार की फ़ीस भुगतान करना उनके क्या किसी भी खेतिहर के बस की बात नहीं रह गयी है। पहले सिर्फ़ पैसे के बल पर भर्ती होने वाले लड़को से ज्यादा फ़ीस लेने का रिवाज़ था। अब तो सब धान बाइस पसेरी हो गया है।

कितनी मुश्किल से पिछले वर्ष फ़ीस का जुगाड़ किया गया। ट्यूबवेल के लिए लाया गया लोन जिस साल पटाया, उसी साल बेटी के ब्याह के लिए खेत रेहन रखना पड़ा। अगले साल किसी तरह पेट काटकर बीस हजार रुपये जोड़े थे कि मूलधन देकर रेहन खेत छुड़ा लेंगे। तब तक बेटे ने इतने बड़े खर्चे

में डाल दिया। वे तो पीछे हैट गए थे। इतना बड़ा बोझ उठाने की औक़ात नहीं। जोगी के मामा जोगी की पढाई - लिखाई में रूचि रखते थे। अच्छा नंबर लाने के लिए ललकारते रहते थे। इंटर कॉलेज में पढ़ाने लगे हैं। जोगी की माँ ने उनके पास आशीर्वाद लेने भेजा तो यह सन्देश भी देने के लिए कह दिया कि फ़ीस के डर से बप्पा की हिम्मत इंजीनियरिंग कराने की नहीं है। सुनकर दस हज़ार की मदद उन्होंने कर दी। तीरथ भैया को पता लगा तो पाँच हज़ार यह कह कर दे गए कि लौटाने की जरूरत नहीं। जब जोगी इंजीनियर बन जायेंगे कमाने- धमाने लगेंगे तब अगर लौटना चाहेंगे तो लौटा देंगे। हिसाब लगाया गया कि खोराकी और बीज के लिए छोड़कर अगर घर का सारा अनाज बेच दिया जाता तब भी बीस- बाइस हज़ार से ज्यादा का न होता । तब छः हजार का बाँस बेचा गया। आठ हज़ार की पड़िया बेची गयी। तब भी पूरा नहीं हुआ तो पत्नी के दो थान गहने बेचने पड़े। यध्यपि पत्नी ने बेचने की पेशकश अपने ओर से की थी, लेकिन उन्हें तो पता ही है किसी स्त्री के गहनों का बिकना उसे कितना खलता है! और यह गहने तो उन्होंने खुद गढ़ाए भी नहीं थे। सास-ससुर के चढ़ावे में मिले थे। एक बार बड़ी बेटी की शादी का खर्च जुटाने के लिए भी पत्नी ने इन्हें बेचने की पेशकश की थी। तब उन्होंने खुद ही टाल दिया था। उस दिन उन्हें बेचने ले जाते हुए कलेजा काठ का हो गया। छोटी बेटी की शादी जल्दी तय हो गयी तो खेत बेचने के अलावा उसका खर्च जुटाने के लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मन में किसी कोने से आवाज़ आती है कि अभी इतनी जल्दी शादी तय होने वाली नहीं दिखती। यह आवाज़ सुनकर जहाँ एक मन चिन्तित होता है वहीं दूसरा मन राहत महसूस करता है कि

खेत बेचने से अभी कुछ दिन और बचा जा सकेगा, लेकिन अगले तीन साल तक लगातार पचास-पचपन हज़ार रुपये फ़ीस कहाँ से भरी जायेगी, इसे सोच कर आँखों के आगे अँधेरा छाने लगता है।

सचमुच, पता नहीं धूप से, साइकिल चलाने से यह खर्चों के हिसाब से दिमाग़ गर्म हो जाने के कारण उन्हें आँखों के आगे लाल पीले चकत्ते नज़र आने लगे। लगा जैसे चक्कर आ रहा है। थोड़ा आगे पटरी के किनारे ही आम का घना पेड़ था। बगल में ट्यूबवेल चल रहा था। वे छहाने और पानी पीने के लिए वहीं उतर पड़े। साइकिल स्टैण्ड पर खड़ी करके वे ज़मीन से थोड़ा ऊपर उभरी पेड़ की मोटी साफ़ जड़ के ऊपर बैठ गए। सिर में टक टक की आवाज़ हो रही थी। कुर्ता पसीने से भीग गया था। सिर से अँगोछा उतार कर उन्होंने पसीना पोंछा। ट्यूबवेल की पाइप से पानी की मोटी धार गिर रही थी। पानी सामने के खेत में जा रहा था। खरीफ़ से खाली हुआ खेत रबी की बुवाई के लिए भरा जा रहा था। एक आदमीं नंगे बदन, धोती को लँगोटी की शक्ल दिये झुककर फावड़े से पानी के आगे बढ़ने की राह आसान कर रहा था। आठ - दस सफ़ेद बगुलों का झुंड उस आदमी के आस-पास दाएँ-बाएँ होता हुआ खेत से निकलते कीड़ों -पतंगों को चुगने में व्यस्त था। थोड़ी देर सुस्ताने के बाद पहलवान उठ कर ट्यूबवेल तक गये। पेट भर पानी पिया ! फ़िर लौटकर जड़ के दोनो तरफ़ घुटने के पास से पैर मोड़कर अँगोछे का सिरहाना बनाकर लेट गये। धीरे - धीरे बहने वाली हवा उन्हें सहलाने लगी। थोड़ी देर के लिए आँखें झंपीं तो क्या सपना देखते है कि तहसील के वसूली अमीन को अपनी तरफ़ आता देखकर वे भाग कर भूसे के ढेर में छिप रहे हैं। अमीन रावण की तरह अट्हास करता हुआ लाठी के हूरे से जगह-जगह भूसे के ढेर को कोचता है। अचानक लाठी का हूरा उनके पेट में इतनी ज़ोर से लगता है कि वे दर्द से चिल्ला पड़ते हैं। चिल्लाने के साथ ही वे पेड़ की जड़ से गिरते-गिरते बचे। एक बार फ़िर पसीने से सराबोर। अँगोछे से पसीना पोंछकर वे उठ कर खड़े हो गये । दिल अभी तक धाड़ - धाड़ धड़क रहा था। साल भर से कुछ ज्यादा हुऐ होंगे जब अमीन के बीच बाज़ार में उन्हें पकड़ा था। पाँड़े बाबा के फाँसी लगाने के चार पाँच महीने पहले की घटना। लेकिन लगता है की अभी कल की ही बात है। अमीन का जो भय उस दिन मन में घुसा वह निकलने का नाम नहीं लेता है। अचानक सपने में उसका चेचक के दाग़ वाला छेनहा चेहरा प्रकट होता है और धीरे-धीरे बड़ा आकार लेने लगता है।

9

लाल आँखें, बड़े-बड़े छितरे दाँत और जमीन से आसमान तक गूंजता उसका भयावह अट्टहास।

पहलवान ने फ़िर साइकिल सँभाली।

उस दिन पकड़े जाने के पहले तक अमीन से सीधा सामना होने की नौबत नहीं आयी थी । अमीन का चपरासी ही यदाकदा दरवाजे तक पहुँचता था। उसे वे कभी सुर्ती खिलाकर कभी मठ्ठा पिलाकर मना लेते थे। बाज़ार में मिलता तो चाय पिलाकर चिरौरी कर लेते थे। चपरासी काफ़ी अरसे से इसी हलके में था। पहलवान की पहलवानी के चर्चे सुन चुका था इसलिए तरह दे जाता था, लेकिन उस

सारे बाज़ार में हल्ला हो गया पहलवान पकड़ लिए गये।

बाज़ार से वापस लौट रहे थे। जैसे ही निकास पर पहुंचे, दो रोंयेदार काले हाथों ने आगे से साइकिल का हैंडिल जकड़ लिया।

पहलवान ने दोनों पैर साइकिल के दोनो तरफ़ ज़मीन से टिकाकर पूंछा का है चैतू ?

- अमीन साहब बुला रहे हैं। चपरासी ने उंगली उठाकर इशारा किया।

अमीन सामने ही दिख रहा था। नहीं तो चपरासी को नज़रअंदाज़ करके चल देते। वे साइकिल से उतरकर चपरासी के साथ लौट पड़े। तीन साल पहले खाद के लिए कोआपरेटिव से कर्ज लिए थे। इधर ऐसा खर्चे पर खर्चे का सिलसिला चला कि बेबाकी की नौबत ही नहीं आ सकी।

वही पहलवान जो कभी ताल ठोंककर पूरे इलाके को ललकारते थे और कोई हाथ मिलाने की हिम्मत नहीं करता था, अपने से एक हाथ छोटे मरियल से अधेड़ चपरासी द्वारा सरे बाज़ार राह रोककर पकड़ लिए गये थे। पहलवान के बाये पंजे में अपना दाहिना पंजा फँसाये वह उन्हें लेकर लाले बनिया की चक्की की ओर चला। पहलवान उसके साथ ऐसे चल रहे थे जैसे पगहे में बंधा बकरा चिकवे के पीछे-पीछे घिसटता चला आता है। मिमियाता तक नहीं। चपरासी ने रास्ते में ही बता दिया था कि बिना बेबाकी किए आज छूटना मुश्किल है। अमीन साहब वैसे तो अच्छे आदमी हैं लेकिन बेबस हैं। जब से नया तहसीलदार आया है सारे वसूली स्टाफ़ को डण्डा किए हुए है।

लोगो ने पहलवान को कुश्ती का जोड़ा खोजने के लिए लाल लँगोट की पट्टी को घुटनों तक लटकाये अखाड़े का चक्कर लगाते देखा था। विपक्षी को चित करने के बाद दोनों हाथ जोड़ कर पब्लिक की वाहवाही स्वीकार करते देखा था। लम्बी कूद का चैंपियन बन कर प्रशंसको के कंधे पर बैठ कर लाले बनिया की इसी चक्की पर इनाम लेने के लिए आते देखा था। पकड़कर बैठाये गए बेबस श्रीहीन पहलवान को देखने का पहले कोई मौका नहीं मिला था। और बैठाये भी कहाँ गये थे? उसी लाले

बनिया की चक्की के बाहर बने शेड के नीचे। जमीन पर उकड़। बैठने के लिए कोई बेंच पटिया पत्थर तक नहीं। कैसे लगते होंगे? देखने के लिए भीड़ उमड़ी आ रही थी।

10

लाले बनिया के चौकीदार द्वारा दी गई चारपाई पर अमीन बैठा था। तहसील के उत्तरी हलके से बदल कर वह जल्दी ही इधर आया था। उसकी नियुक्ति सीज़नल अमीन के तौर पर थी। पूरी तरह अस्थायी। तहसील स्तर से हर महीने की वसूली का टारगेट फ़िक्स था। टारगेट न पूरा करने वाले अमीनों को सीधे घर का रास्ता दिखा दिया जाता था।

इस बाज़ार में आस-पास के दस बारह गाँवों के लोग बाज़ार करने आते हैं। एक ही जगह बैठकर कई गाँव के बकायेदारों को पकड़ा जा सकता है। घर से चलते समय ही उसने बकायेदारों की एक सूची बना कर जेब में रख ली थी, ताकि बार-बार रजिस्टर न खोलना पड़े। बेबाकी न करने वाले काम से काम पांच बकायेदारों की गिरफ़्तारी करनी थी। तहसीलदार साहब ने कहा था कि गिरफ़्तार लोगो को हवालात तक लाने के लिए वे खुद अपनी जीप लेकर बाज़ार पहुँचेंगे। फ़ोन पर उन्हें ख़बर करने भर की जरूररत है... लेकिन एक आदमी की गिरफ़्तारी पर ही इतनी भीड़ !

पहलवान सिर झुकाये बैठे थे।

सारे बाज़ार में उनके पकड़े जाने की चर्चा हो गयी है, सिर्फ़ यही सोचकर वे गुमसुम हो गये। अभी-अभी उन्होंने चारों तरफ़ से जोड़ बटोरकर बेटे की फ़ीस का इंतज़ाम किया था। आज के दिन तो शायद घर में एक रूपया भी न निकले। दस किलो आलू बेचकर नून तेल जैसी ज़रुरी चीजें खरीदने आए थे । बत्तीस सौ रुपये का बकाया उन्हें बत्तीस लाख का लग रहा था। कहीं इसने ले जाकर हवालात में बंद कर दिया तब तो नाते - रिशतेदारों तक में बेइज्जत हो जायेंगे।

भीड़ में कौन क्या पूछ रहा है, कुछ सुनाई नहीं पड़ता। तब तक भीड़ को चीरकर सफ़ेद लुंगी लपेटे एक छः फुटा नौजवान प्रकट हुआ। उसके पीछे अपनी भरी भरकम गद्देदार कुर्सी को दोनों हाथों से सिर के ऊपर उठाये पास के हेयर कटाई सलून का नाइ था।

पहलवान को पहचाना - पड़ोस के गाँव के लल्लन पहलवान, जिन्हें बचपन में उन्होंने कुश्ती के दाँव सिखाये थे।

लपक कर पहलवान का पैर छूते हुए नौजवान ने कहा हम लोगो के रहते आप जैसे उस्ताद को जंमीन पर बैठाना पुरे इलाके की हतक है। अमीन साहब को शायद पता नहीं की आपकी हस्ती क्या है !

उन्होंने अपने अँगोछे से कुर्सी को झाड़ते हुए कहा- आइये विराजिए।

और पहलवान के 'न - न' करते हुए भी कई हाथों ने उन्हें उठकर कुर्सी पर बैठा दिया।

भीड़ में ज़ोरदार ताली बजी।

अमीन को यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने लल्लन पहलवान को पास बुलाकर कहा - यह आदमी सरकारी बकायेदार है। सरकारी हिरासत में है। हिरासत के आदमी को जहाँ बैठाया जायेगा वहीं बैठना पड़ेगा। जिसको कुर्सी या सिंहासन पर पर बैठना हो वह बेबाकी के बाद अपने घर ले जाकर बैठाए।

11

- क्या बात करते हैं अमीन साहेब! बकायेदार कोई चोर डकैत होता है कि आप उसकी तौहीन करेंगे? आपको सिर्फ बकाया वसूलने का अधिकार है, बेईज्ज़त करने का नहीं। हमको नहीं पता की पहलवान कितने के कर्जदार है लेकिन ये इज़ाज़त दें तो अभी इसी बाजार में इनके नाम पर चार- छः हज़ार मिन्टों में झड़ जायेंगे।

अरे ऐसी बात क्यों कर रहे हैं लल्लन बाबू! पहलवान उन्हें रोकते हुए बोले - पब्लिक से इनाम इकराम लेना दूसरी बात लेकिन कर्जा चुकाने के चन्दा माँगना तो कफ़न के लिए चंदा जुटाने जैसा होगा।

- नहीं, एक बात कह रहे हैं। फ़िर अमीन की ओर देखकर कहा जिसे पकड़कर गामा पहलवान बन रहे हो वो अभी पाद दे तो उड़ जाओगे। मूत दे तो उसी धार में बह जाओगे। कहीं हाथ डालने के पहले समझा - बूझा जाता है।

अमीन की समझ में नहीं आया की क्या बोलें।

बकायेदार को ज़मीन पर बैठाने का उद्देश्य उसे उसकी हीनदशा महसूस कराना रहता होगा। जमीनदारी के ज़माने में तो उसे जेठ की धूप में मुर्गा बनाया जाता था। कोड़े से पिटवाया जाता था। बकायेदार को कुर्सी पर बैठाना जबकि खुद अमीन को मामूली सी चारपाई पर बैठकर अपनी

अमीनगीरी की इज़्ज़त बचानी पड़ रही हो। उस पर ऐसी लगने वाली बात! बर्दाश्त से बहार है। अमीन की समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करना चाहिए।

पप्पू की अम्मा को ख़बर लगी तो परेशान हो गयीं। लपककर खेलावन के घर गयीं। लेकिन वे ड्यूटी पर गए थे। अब किसके पास जायें? कौन है जो पहलवान को छुड़ा सके? सामने से पी.सी.एस. आता हुआ दिखा। पप्पू की अम्मा ने आवाज़ देकर उसे रोक। बताया।

पी.सी.एस. ने दिलासा दिया- मैं अभी जाकर देखता हूँ।

- मैं भी चलूँ?

- क्या ज़रूरत है?

- मन नहीं मान रहा है। अच्छा पप्पू के बाबू के कान में धीरे से कहना की मेरे पास सात सौ रुपये रखे हैं। चाहे तो किसी को भेजकर मँगवा लें।

भीड़ ने चारो तरफ से अमीन की चारपाई को घेर लिया है। एक आदमी कहता है पकड़कर बैठाने से क्या होगा ? किसान कोई सेठ - साहूकार है की तिजोरी से नोट निकालकर बेबाकी कर देगा !

गाँव - गाँव पैदल घूमकर चूनपान बेचने वाला बगल के गाँव का बढ़ा सम्पत भीड़ से निकलकर एकदम अमीन के मुँह से तर्जनी सटाकर बमकता है बड़ी बड़ी मीलों, फैक्ट्रियों पर सिर्फ बिजली का ही लाखो का बकाया है, उनसे वसूलने की हिम्मत तुम्हारे बाप की भी नहीं है।

सारा क़ानून सिर्फ किसानों, मजदूरों के लिए है?

12

फ़िर एक हाथ से कान ढककर और दूसरी तर्जनी अमीन की ओर उठाकर गाने लगता है-

जेकर लाख रुपैया बाकी

ओकर तलुआ अमीनवा चाटी सौ-सौ रुपये वाले खेवन बंदीखानवा

दूसरा भी सबके बीच में आ गया।

ऐसा इल्जाम ! ऐसी गाली! अमीन को लगा की उसे नंगा कर दिया गया। उसने डाँटना शुरू किया - क्या चाहते हो तुम लोग? बलवा करने का इरादा है? कानून अपने हाथ में लोगे? लेते समय मीठा लगता है, चुकाते समय तीता ? अभी तहसीलदार साहब फ़ोर्स लेकर आ रहे हैं। उन्हीं को दिखाना यह फुटानी।

लेकिन अन्दर ही अन्दर वह डर गया। बकाये का रजिस्टर मोड़कर झोले में डाल लिया। भीड़ का क्या ठिकाना! रजिस्टर ही छीनकर जला दें। वह अपने चपरासी को खोज रहा है। पता नहीं कहां ग़ायब हो गया! आज कुछ हुआ तो इसको खड़े-खड़े बर्खास्त करवायेंगे।

अमीन को क्या पता जिस गीत की चोट से वह इतना तिलमिला गया है उसके असली चोट करने वाले पुरुष जननांग के फड़कते पर्यायवाची की जगह 'तलुआ' रखकर बूढ़ा इसकी धार को पहले ही कितना कुन्द कर चुका है।

- पहलवान की बेज्जती इलाके की बेज्जती है। भीड़ से आवाज आती है।

पहलवान कुर्सी उतरते हैं और हाथ जोड़कर भीड़ से कहते हैं इसमें कैसी बेज्जती भाईयों ! खाये हैं तो चुकाना ही पड़ेगा। बाता-बाती से क्या होगा? आपलोग अपने-अपने घर जायें।

प्रकट होने के पहले एक मिनट तक पीछे रुककर हालात का जायजा लेता है पी.सी.एस.।

सदैव प्रथम श्रेणी में पास होने वाला लड़का रहा है राजेश्वर उर्फ पी.सी.एस। एम.ए. में फिलासफी में टॉप किया है। उनके बाप रघुनन्दन राय का अरमान था कि आई.ए.एस. नहीं तो गांव के दूसरे लड़कों की तरह पी.सी. एस. तो बने उनका बेटा। लेकिन पता नहीं किस कु-घड़ी में उसे छात्र राजनीति का रोग लग गया। अब उसका एक पैर गांव में रहता है तो दूसरा दिल्ली लखनऊ इलाहाबाद। शुरु में मज़ाक में लोगों ने उसे पी.सी.एस. कहना क्या शुरु किया, अब गाँव में उसका नाम चल पड़ा।

मिडिल स्कूल के रिटायर्ड तिवारी 'पंडित जी' कहते हैं- यह इस गाँव का और रघुनन्दन राय का दुर्भाग्य है कि इतना जहीन लड़का कुसंगति में पड़कर राह से बेराह चल पड़ा। नहीं तो उसके जैसा तार्किक, उसके जैसा छाँहकर देने वाला वक्ता कौन है गाँव में?

पहलवान तो पूरे गाँव की 'नाक' हैं। ऐसे गाँव जिसमें डी.एम., एस.डी.एम, डॉक्टर, इंजीनियर और जज से लेकर दर्जनों लेक्चरर, वकील दरोगा तक पैदा हुए हैं। उस गाँव की इज़्ज़त दो पैसे के अमीन के हाथों निलाम होगी।

13

-हटिए सब लोग, एक किनारे। क्या बात है? वह धड़धड़ाकर भीड़ के केन्द्र में पहुँचता है और अमीन की आँख में आँख डालकर पूछता है- लैण्ड रेवेन्यू एरियल की वसूली का प्रोसीजर तो पढ़ाया गया होगा ट्रेनिंग में? कि बिना ट्रेनिंग के ही बस्ता पकड़ा दिया गया? एकबारगी कैसे पकड़ लेंगे? पहले साइटेशन नोटिस जारी करोगे कि नहीं? हफ़्ते दस दिन की मोहलत दोगे की नहीं? कब दिया नोटिस? किसको दिया? काका, आपको कोई नोटिस मिली है?

पहलवान से कुछ बोलते नहीं बना। उन्होंने धीरे से इनकारी से सर हिलाया।

सोचिएगा। -पहले साइटेशन नोटिस दिखाइए। फ़िर अरेस्ट वारंट दिखाइए। तब पकड़ने की बात

अमीन भीड़ देखकर ही डर रहा था। अब यह कानूनी भतीजा भी आ गया। नोटिस जारी करने का कानून तो बना दिया अफसरों ने लेकिन नोटिस देने की कार्यवाही कहाँ तक कर सकता है कोई! बड़ी मुश्किल से तो बकायेदार पकड़ में आता है। कब कहाँ कौन पकड़ में आ जाए तब उसे पकड़ेंगे कि नोटिस जारी कराने भागेंगे. लेकिन बात फँसती है तो ऊपर के अधिकारी सारी ग़लती मातहतों की ही निकालते हैं। वक़्त की नज़ाकत को देखकर वह हालात को सँभालने की कोशिश करता है-

- आप तो पढ़े लिखे आदमी लगते हैं आप ही बताइये।

- बता तो रहा हूं। राजेश्वर रुखाई से बोलता है, हिन्दुस्तान सन् '४७ में आज़ाद हो चुका है। साठ साल पहले। आप अंग्रेज़ों के नहीं, हिन्दुस्तानी अवाम के नौकर हैं। अवाम के नौकर होकर अवाम को गैरकानूनी तरीके से परेशान करेंगे?

- इसमें गैरकानूनी क्या है? कर्ज लिए हैं यह सच है कि झूठ? हमारा हरकारा एक दर्जन बार दरवाजे तक जाकर तगादा कर चुका है। यह सही है कि झूठ? फ़िर भी हम कहते हैं कि हवालात में बन्द करने का हमें कोई शौक़ नहीं है। आज बेबाकी नहीं कर सकते तो अभी तहसीलदार साहब खुद आ रहे हैं। उनके सामने दो आदमी ज़मानत ले लें कि हफ्ते दस दिन में मूल-सूद अदा हो जाएगा तो छोड़ देंगे।

- अरे जब पकड़ ही गैरकानूनी है तो ज़मानत देने और छोड़ने की बात कहाँ से पैदा हो गयी? पी.सी.एस. ने पहलवान की बाँह पकड़ कर उठाते हुए कह- चलिए काका।

पहलवान सुनते आए थे कि कानूनी ज़ोर के आगे शरीर का ज़ोर काम नहीं आता। कानून की माया अपरम्पार होती है। इसलिए डर रहे थे। लेकिन पी.सी. एस. द्वारा कानून से ही अमीन को परास्त होते देख उठ खड़े हुए। जाते-जाते अमीन से बोले--बकाया तो देना ही है अमीन साहेब। जुगाड़ नहीं लग पाया। खर्चे पर खर्चा लगा रहा। इसलिए अदा नहीं कर पाए। अब आगे कहना नहीं पड़ेगा। जैसा भी होगा पहले सरकारी कर्जा पटायेंगे।

पहलवान चले तो पब्लिक ने हर्षनाद किया बोलो, सियावर रामचन्द्र की जय।

पहलवान को अपने शरीर में इतनी ताकत नहीं महसूस हो रही थी कि साइकिल पर बैठ पाते। पैदल ही पैर घसीटते, साइकिल का सहारा लिए हुए गाँव तक पहुँचे। पहलवानिन सड़क के मोड़ पर इन्तज़ार करती खड़ी थी। पहलवान का चेहरा स्याह और सूना था। पानी पीने के पप्पू की अम्मा के आग्रह को अनसुना करके वे मड़हे में पड़ी चरपायी पर गिर पड़े थे।

14

पप्पू की अम्मा को उन्होंने इशारे से बता दिया कि उन्होंने चुपचाप पड़े रहने दें।

वह जानते कि इस तरह बेइज्जत हेने की नौबत आ जाएगी तो पत्नी का एकाध थान गहना बेचकर ही अदा कर देते। इधर तीन चार साल में ऐसा कोई साल नहीं गुज़रा जब वे किसी बड़े खर्चे की चपेट में न आए हों। अभी-अभी तो बेटे की इंजीनियरिंग की फ़ीस जमा करने में घर की सारी लेईपूँजी साफ़ हुई। पिछले साल बेटी ब्याहने के लिए खेत गिरवी रखना पड़ा। उसके पिछले साल ट्यूबवेल की बाक़ी रह गई क़िस्तों के चलते बैंक वाले मोटर और पंखा खोलकर ले जाने की धमकी दे गए तो ब्याज सहित आठ बकाया क्रिस्तें एक साथ चुकानी पड़ी। खाद का यह लोन उसके भी एक साल पहले का है। सोचा ही नहीं था कि बीस-बाइस सौ का यह कर्ज इतना भारी पड़ेगा कि जेल जाने की नौबत आ जायेगी।

उनके पिता अपने पिता के बारे में बताते थे। पचास-साठ साल पहले की घटना कि एक बार बाबा आँगन के ओसारे में बैठकर दोपहर का भोजन कर रहे थे तो दादी के मना करते-करते पिता के छोटे भाई ने अन्दर आकर बताया कि मालगुजारी वसूलने वाले आए हैं। सुनकर बाबा के हाथ का कौर

छूटकर थाली में गिर गया। बाबा से आगे खाया नहीं गया। वे उठ गए। हाथ मुँह धोया और वहीं ओसारे में पड़ी चरपायी पर पड़ गयें।

दादी ने पहले बेटे को डाँटा यही समय था ऐसी खबर देने के लिए। दो कौर चैन से खा लेने

दिए होते।

फ़िर कहा कोई पूछने आए तो कह देना, नहीं हैं। रिस्तेदारी गए हैं। कब आयेंगे, पता नहीं।

बाबा शाम तक, जब तक पता नहीं चल गया कि जिलेदार वापस चला गया, बाहर नहीं निकले।

पिता बताते थे कि दस-पाँच रुपये ही देना होता था लेकिन इतनी छोटी रकम भी नहीं जुटती थी। गाली गुप्ता मार-पीट सुनना सहना पड़ता था। वह ज़मींदारी का ज़माना था। आज इतने दिनों बाद भी किसान की ज़िन्दगी में बहुत कुछ नहीं बदला, जितना बदलना चाहिए था।

औंधे मुँह पड़े पहलवान करवट हुए तो सामने छूहे की खूँटी पर रखी अपनी फोटो पर नज़र पड़ी। रामनगर मेले में दंगल में हरियाणवी पहलवान को चित करने पर विधायक जी ने इनाम में उन्हें चाँदी की यह गदा भेंट की थी। उसी गदा को विधायक जी के हाथ से प्राप्त करते हुए खींची गई फोटो। उनकी रानें, जँधाएं कितना मजबूत थीं! सीना कितना चौड़ा था। आज उन्हें उनसे एक हाथ छोटे मरियल से अमीन ने ऐसा चित किया वे कराह भी नहीं पा रहे हैं। अखाड़े में सीखे सारे दांव ज़िन्दगी के इस रणक्षेत्र में बेकार साबित हो गए।

पड़े-पड़े शाम हो गयी। चिड़ियों की चहचहाहट मन्द पड़ गयी। अँधेरा घिर आया। पहलवान के मन में घिरा अँधेरा बाहर के अँधेरे से भी ज़्यादा घना था। उन्हें लगा कि चरपायी नाव बन गई है और धीरे-धीरे डोल रही है। चारपायी ही डोल रही है या मँड़हां भी?

जोगी की अम्मा को लगा कि सदमा गहरा है। सारी रात पड़े ही रह जायेंगे। उठने के लक्षण नहीं दिखते। तो वे खेलावन के बुला लाई। ख़बर पाकर और भी चार छः लोग आ गये।

सब लोग देर तक पहलवान को ऊँच नीच समझाते रहे--किसान के घर में जन्म लेकर न कोई पहले कोई सुखी रहा है न आगे कोई रहेगा। इन्हीं परिस्थितियों में ज़िन्दगी की नाव खेना है।

पहलवान कुछ बोल नहीं रहे थे। केवल सुन रहे थे।

-जिन किसानों का सब कुछ बना-सँभला देखते हैं वह भी झूठ है। उनके घर में जरुर बाहर से चार पैसे भेजने वाला कोई होगा। खेती की कमाई से खेती का ही खर्च पूरा नहीं कर सकता कोई माई का लाल।

- दूसरे मुल्कों की क्या दशा है भइया? क्या पूरी दुनिया के किसान इसी तरह हैं? न मरनें में न जीने में।... कोई खेलावन से पूछता है।

-ऐसा नहीं है। पश्चिम के देशों में किसानों को भारी सब्सिडी दी जाती है। सस्ती दर पर खाद बिजली बीज दवा वगैरह। मैंने कहीं पढ़ा था, अमेरिका अपनी गायों को रोज़ चौबिस डालर की सब्सिडी देता है।

-एक डालर कितना होगा?

-पचास के नोट से जरा सा कम समझो।

- चौबिस डालर माने हज़ार रुपये से ऊपर

-रोज़ हजार रुपये? ऐसा कहीं हो सकता है?

- बिलकुल, ऐसा ही। खेलावन जोर देकर कहतें हैं-तब जाकर वहाँ के किसानों को पोसाता है। अपने यहाँ किसानों के बारे में इस तरह सोचने वाला कौन है?

- अपने यहाँ क्यों नहीं सोचा जाता?

- अपने यहाँ उसी के बारे में सोचा जाता है जो सोचवाने में समर्थ हो। उद्योगपति लोग समर्थ हैं क्योंकि वे चुनाव के समय नोट देते हैं।

- हम भी तो वोट देते हैं।

-वोट नहीं देगें तो क्या उसका अचार डालेंगे। अरे जान बचानी है तो इस तरह का कानून पास कराना होगा जैसा उद्योगपतियों ने अपने लिए पास कराया है।

-उनके लिए क्या कानून है भइया?

-उनका कानून बनाने में आला दर्जे का दिमाग़ लगा है। वे लिमिटेड कम्पनी बनाते हैं। करोड़ों नहीं, अरबों का लोन लेते हैं। सब्सिडी लेते हैं। फ़िर भी अगर उनकी कम्पनी 'सिक' हो जाए अर्थात डूबने लगे तो उसकी सेहत सुधारने के लिए बी आई एफ आर है, डिफरमेंट है।

16

- कम्पनी भी बिमार होती है?

- अक्सर, लेकिन उनके कानून की खूबी देखिए कि कम्पनी की बिमारी का असर उसके डायरेक्टरों की सेहत पर नहीं पड़ता। उसी बोर्ड में तो मेरे समधी बड़े बाबू हैं। वे बताते हैं कि कम्पनी भले अरबों-खरबों की बकायेदार हो जाये लेकिन डायरेक्टकर को आप इसके लिए नहीं पकड़ सकते। उनका कानून कहता है कि डायरेक्टर सिर्फ लाभांश का हकदार होता है। कम्पनी की देनदारी उसकी पर्सनल जिम्मेदारी नहीं है।

- अरे भाई, वह गाँव का निरहू-घुरहू थोड़े है कि जो चाहे सौ-दो-सी के बकाये के लिये गिरेबान पकड़ कर अन्दर कर दे? वे सब करोड़पति होते हैं।

- तभी तो कह रहा हूं कि निरहू-घुरहू को बचाना है तो उसी तरह का कानून पास कराना होगा।

- यह देश करोड़पतियों से नहीं, निरहू-घुरहू लोगो से ही जिन्दा है खेलावन। बड़ी देर से चुप बैठे फौज से रिटायर सूबेदार हरदयाल कहते हैं निरहू-घुरहू नहीं बचेंगे तो दश बीस साल में पूरा देश कटोरा लेकर भीख मांगता नज़र आएगा। मेरी बात गलत साबित हो जाय तो गधे के पेशाब से मूँछ मुड़ा दूँगा।

पप्पू एक थाली में पाँच-छः कप चाय लेकर आये।

खेलावन बोले-उठिए चाए पीजिए। किसान के घर में जन्म लिया है तो कलेजा काठ का करना पड़ेगा। पता नहीं कब-कब कैसे-कैसे झोड़ लगेंगे।

उन्होंने पहलवान का हाथ पकड़कर खींचा तो वे उठकर बैठ गये। पप्पू की अम्मा ने उनका अगोंछा लेकर उसका एक कोना लोटे के पानी से भिगोया और उनका चेहरा पोंछने लगीं। मँड़हें में डिबरी की काँपती लौ अँधेरे से लड़ते-लड़ते लड़खड़ा रही थी।

-इज्जत चली गयी खेलावन भाया... इतना देर बाद पहलवान के मुँह में बोली लौटी।

-पागल न बनिए। इज्जत जाती है घटियारी काम करने से। किसी की बहन-बेटी को गलत निगाह से देखने से। लेन-देन तो सारी दुनिया करती है। समझिए एक झूठा सपना था जो बीत गया।

- बहुत कमजोरी लग रही है। लगता है पैरों में जान नहीं है। जरा मुझे खड़ा करिए तो।

खेलावन और पप्पू ने बाँह पकड़ कर पहलवान को चरपायी के बगल में खड़ा किया।

पहलवान धीमें सधे क़दमें से चलते हुए बाहर अँधेरे में गुम हो गये। लघुशंका से निपटने के बाद उठने के पहले उन्हें कुछ देर तक ताक़त जुटानी पड़ी।

यहाँ से नहर की पटरी छोड़ कर खड़ंजे पर उतरना होगा। अपनी पकड़ याद करते-करते कब इतनी दूर निकल आए, पता ही नहीं चला। तीरथ का घर नजदीक आने के साथ-साथ उनका मन फ़िर घबरा रहा है। पता नहीं कैसे होंगे लड़के वाले ! कैसा व्यवहार करें! पत्नी को उनके बात-व्यवहार की योग्यता पर विश्वास नहीं। इसीलिए आते हुए सहेजा है कि तीरथ भैया को ही बोलने दूँ। पिछली बार की असफलता से

भी उसका भरोसा उठा होगा। लेकिन पिछली बार तो अपनी पकड़ की घटना से मन इतना दब गया था कि उन्होंने अपनी ओर से जुबान तक नहीं खोली। जो कुछ लड़के वाले पूँछते रहें, वे बताते रहें। पता चला था कि लड़के वालों का संयुक्त परिवार है। भट्टा है, ट्रैक्टर है। खाते-पीते लोग है। लड़का भी परिवार के करोबार में हाथ बंटाता है, बेटी सुखी रहेगी। जाने पर सब लोग बड़े प्रेम से मिलें। खूब स्वागत सत्कार भी हुआ, लेकिन रात में बात-चीत के दौरान जब लड़के वालों ने उनकी माली हालत का अनुमान लगा लिया तो सबेरे-सबेरे फैसला सुना दिया। बल्कि सीधे-सीधे फैसला भी कहाँ सुनाया,

लड़के के चाचा और बड़े भाईयों के झगड़ने के दौरान कान में पड़े शब्दों से ही उन्हें फैसले की जानकारी हो गयी।

-क्या है इनके पास जो बाबू जी इस तरह लड्डू हुए जा रहें हैं। न कोई कोटा परिमिट न कोई कालेज भट्टा, न कोई टरक ट्रैक्टर न कोई ठेका पट्टा। कहाँ से सँभालेंगे हमारी हज़ार लोगों की बारात? शादी का बजट कितना है? कौन सी गाड़ी देंगे? साफ-साफ बात होनी चाहिए।

सुनकर वे बिना मुँह धोये ही चल पड़े। किसी ने यह भी नहीं कहा कि एक कप चाय पीकर जाइये। गाँव के बाहर चाय की दुकान पर रुके तो पता चला कि भट्टा तो दो साल से बन्द है। ट्रैक्टर बिक गया। बस पक्का मकान भर देख लीजिए। कई साल से कोई मोटी मुर्गी तलाश रहें हैं कि फँस जाये तो हलाल कर डालें।

सुनकर उनका मलाल कुछ कम हो गया था।

यह रहा सामने बुआ का गाँव। घर के पिछवाड़े वाला गूलर का पेड़ अभी भी जस का तस खड़ा है। बगल वाले घर की लड़की सतनी गिलहरी की तरह इस पर चढ़ कर गूलर तोड़ती थी। गूलर को फोड़ने पर अन्दर से सैकड़ों मच्छर निकलते जिन्हें वह फूंक मार कर उड़ाती और अपने हाथ से उन्हें पकी गुलाबी गुलर खिलाती थी। पता नहीं अब कहाँ और कैसी होगी! कितनी मोह लेने वाली हँसी थी उसकी ! मौक़ा मिला तो उसके दरवाज़े तक जायेंगे। क्या पता हो मायके आई हो तो भेंट हो सकती है।

यह रहा बुआ का घर। तीरथ भैया ने मँड़हे की जगह पक्की दलान बना लिया है। बैलों की नाद पक्की करा लिया है। बैल शायद खेत जोतने गयें होंगे। एक छोटी बछियाँ बँधी है अर्थात घर में दूध होता है। दुआर लम्बा चौड़ा साफ-सुथरा है। नीम के नीचे सुतली से बँधे दो पर्लंग पड़े हैं। कोई दिख नहीं रहा। वे साइकिल खड़ी करके पलंग पर बैठ गये।

छोटा भाई कई साल पहले मिलिटरी में भर्ती हो गया था। तीरथ खेती-बारी संभालतें हैं। दोनों भाईयों में सुमति है इसलिए परिवार की 'मरजाद' बनी हुई है। जिस दिन कुमति बैठी, भाई-भाई में फूट पड़ी, सब ढह जायेगा। यही घर-घर का लेखा है।

तीरथ का बेटा अन्दर से निकला। पहचान कर पैर छुआ और अन्दर जाकर माँ को बताया। फ़िर तीरथ बहू निकली। एक हाथ में चबैना की मौनी और दूसरे में लोटा लेकर। लड़का बाल्टी में पानी भर लाया। दुबारा अन्दर जाकर तीरथ बहू कमोरी में सिखरन लाई। हाथ-मुँह धोकर चबैना चबाकर उन्होंने एक

लोटा सिखरन पिया तो थकावट आधी हो गयी। खाने-पीने के बाद रात में दोनों भाई घर-गृहस्थी के झमेलों की चर्चा करते रहें। तीरथ ने बताया कि उनके यहाँ इस समय न डाई मिल रही न यूरिया। भादों से यही हाल है। आये दिन हल्ला होता है कि आज आ रही कल आ रही है। सैकड़ों लोग सबेरे से ही कोऑपरेटिव सोसाइटी के गोदाम के सामने खड़े इन्तज़ार करते हैं और शाम को खाली हाथ लौट आते हैं। बिना खाद डाले बुवाई करनी पड़ी तो पैदावार घट कर आधी हो जायेगी।

18

लड़के वालों के बारे में बताया कि आदमी तो ठीक-ठाक है। खुद ही एक बार मिलने पर बोले थे कि कोई अच्छे ख़ानदान की लड़की हो तो रिश्ता कराइए। पता चला कि इधर कई पार्टियाँ बातचीत करने गई लेकिन बात आगे नहीं बढ़ पायी। लड़के के बाप हैं तो कोई नहीं कह सकता कि किस करवट बैठेंगे?

सबेरे पहली मुलाक़ात में तो लड़के के बाप झुन्नू बाबू पहलवान को एखलाक्की आदमी लगे। हाथ जोड़कर स्वागत किया। हालचाल पूछा, लड़के के मामा से परिचय कराया। 'आपके आने की ख़बर पाकर यह भी दर्शन करने चल आये। कचहरी में पेशकार हैं।' फ़िर बेटे को बुलाया। उसने आकर तीरथ और पहलवान के पैर छुए। 'यही हैं हमारे सुपुत्र राजेश कुमार'। झुन्नू बाबू ने बताया। पहलवान मन ही मन अपनी बेटी से इस लड़के का जोड़ मिलाने लगे।

अन्दर से हरी धनिया की महक आने लगी। थोड़ी देर में बेटा एक थाली में प्याज की पकौड़ियाँ और तीन कटोरियों में धनिया टमाटर की चटनी ले आया। पकौड़ी खाते हुए झुन्नू बाबू ने बताया, इन्हीं पेशकार साहब की पैरवी, गंगा माई के आशिर्वाद और लक्ष्मी जी की कृपा से हम भी इस साल एक बड़ा काम कर डाले। बेटे को नौकरी लगवा दिया।

- हाँ, तीरथ भैया बता रहा थे। सबके बूते की बात नहीं है आज कल बाल-बच्चों को नौकरी से लगवाना। सुना कहीं से बहुत सटीक जुगाड़ भिड़ाया।

- जुगाड़ तो सब इसका है। झुन्नू बाबू ने अँगूठे और तर्जनी से सिक्का खनकाने का इशारा करते हुए कहा- दो साल से डेली-वेजेज में खट रहे थे। ऊबकर भागने लगते थे। इनके मामा समझाते थे कि लगे रहिये। यही काम आयेगा। और काम आया। रेगुलर होने का चान्स आया तो तय किया कि पैसे का मोह नहीं करना है। लग तो गए पूरे एक। उन्होंने तर्जनी उठा कर कहा लेकिन ज़िन्दगी भर का बन्दोबस्त हो गया।

मिल गई। लड़के के मामा बोले-आज के जमाने में सरकारी नौकरी मिल गयी तो समझिये जागीर

बिल्कुल सही तीरथ भैया ने स्वीकार में सिर हिलाया।

-पाँच हज़ार रुपये महीने तो पगार ही है। साथ ही ऐसी सीट मिल गई है कि सौ-दो-सौ रुपये रोज ऊपर से बरसेगा। जिसकी बेटी बहू बन कर आयेगी, समझिये राज करेगी... झुन्नू बाबू ने खुलासा किया।

तीरथ भैया ने देर तक हामी में सिर हिलाया। फ़िर बोले सो तो है ही। यही सब तो मैंने पहलवान भैया से बताया। जैसे आपका बेटा कमासुत और संस्कारवान है, वैसी ही इनकी बेटी भी रुप-गुण सम्पन्न है। इन्टर फाइनल कर रही है इस साल। हाईस्कूल फस्ट डिवीजन पास हुई है। कुल-परिवार, कद-काठी, शील-संस्कार हर लिहाज़ से हजारों में एक बैठेगी। बड़े छोटे का आदर-प्रेम करने की शिक्षा दी गयी है। आप जैसे संस्कारी घर में आएगी तो सुखी रहेगी और सुखी रखेगी। यही सब सोचकर पहलवान भैया आये हैं आपके दरवाजे पर अपनी अरदास लेकर।

19

झुन्नू बाबू पहलवान की तरफ देखते हुए बोले- हम तो जो हैं तीरथ जी ने बताया ही होगा। खेती-बाड़ी, बाग-बगीचा, मान-सम्मान, घर-दुआर किसी से छिपा तो हैं नहीं। रही बात रिश्ते की, उसके बारे में हम क्या कोई भी कुछ नहीं कह सकता। वह तो जहाँ बदा होगा, जहाँ विधाता ने लिखा होगा वहीं होगा।

पहलवान देख रहे थे, न घर जैसा घर न दुआर जैसा दुआर। सौ साल पुरानी कच्ची दिवारों में जगह-जगह दरें फट रहे थे। सामने खलिहान में जितना पुआल है उसी से पता चल रहा कि मुशकिल से साल भर खाने भर धान पैदा हुआ होगा। दो बैल ज़रुर सामने खूँट् पर बँधे हैं लेकिन उनके नीचे मौजूद ओछरा को देखकर तथा जिस तरह खूँटे के गिर्द घूम-घूम कर अपनी बेचैनी और परायापन दिखा रहे उससे तो लगता है कि किसी दूसरे खूँटे से लाकर आज ही बाँधे गए हैं। अभी एक छोत गोबर तक इस खूँटे पर नहीं किए। लड़का भी उनकी बेटी से हर लिहाज से उन्नीस है लेकिन सचमुच अगर नौकरी से लग गया तो समझो सब ठीक है।

-बदा की बात तो आखिरी है लेकिन अपने मन को तो खोलिए। कैसी शादी चाहते हैं? कुछ पता चले तो पहलवान भी अपने आपको तौलें।

इसी बीच लड़के के मामा एक थाली में रखकर तीन कप चाय ले आये।। सब लोग चाय पीने लगे। चाय पीते हुए झुन्नू बाबू ने अपने साले की ओर देख, फ़िर कुछ सोचने लगे, फ़िर खैखारने लगे।

तीरथ ने फ़िर प्रश्नवाचक नजर के झुन्नू बाबू को देखा तो झुन्नू बाबू बोले-पहली बात तो यह कि लड़की पसन्द आ जाये।

- मान लीजिए लड़की पसन्द आ गयी। इसके आगे बोलिए? कुछ दान-दहेज पाने का मंसूबा बाँधे हों तो वह भी जाहिर करिए।

अचानक बहुत गम्भीर हो गए झुन्नू बाबू। जैसे शतरंज का खिलाड़ी अगली चाल चलने के पहले घंटों सोचता है, कुछ इस तरह की मुद्रा बन गई। सिर झुक गया। सब उनके सिर उठाने का इन्तज़ार करने लगे।

धीरे-धीरे सिर ऊपर उठा देखिए, हम अपने लिए कुछ नहीं चाहते। हमारे लिए तो लड़की के बाप का एक पैसा भी हराम है। हाँ, लड़के की महतारी मौजूद है। लड़के के मामा भी संयोग से आ गए हैं जिनकी बदौलत हिल्ले से लगे हैं। इन लोगों का कोई अरमान हो तो ये लोग बतावें।

-मामा जी ही बतावें तीरथ ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

मामा जी बोले-आप का भी तो कुछ बजट होगी आप ही बतावें।

- हमारा बजट ग्यारह हज़ार का हो तो क्या आप मान जायेंगे? इसलिए आपका खुलासा करना ज़रुरी है। अटेंगे तो सटेंगे, नहीं तो अपना रास्ता पकड़ेंगे।

मामा जी सिर झुका लिए। फ़िर धीरे-धीरे ऊपर उठाते हुए बोले। यह तो जीजाजी का बड़प्पन है जो हमको बीच में डाल रहे हैं। आप लोगों के बीच में मेरा कुछ बोलना शोभा नहीं देता। लेकिन आप का आदेश हो तो बिना बोले भी नहीं रह सकते।

मामा जी फ़िर चुप हो गए। फ़िर उठे। आकर तीरथ का हाथ पकड़ा और इशारे से एक तरफ ले जाते हुए बोले- हम सब इसी समाज में रहते हैं है। सबको सब कुछ पता है। जीजाजी की बात इसलिए थोड़ी

अलग है कि बेटे के पीछे हुए खर्चे के कारण थोड़ा दब गए हैं। अचानक एक लाख का निकलना बहुत होता है। वही आप लोग समझ लेंगे तो इनका बोझ थोड़ा कम हो जायेगा। लड़के को मोटर साइकिल तो आजकल सभी दे रहें हैं। रही जीजाजी की बात तो अपने मुँह से तो वे कभी कुछ माँग ही नहीं सकते।

तीरथ लौटे और पहलवान को थोड़ी दूर ले जाकर बोले- एक लाख रुपये तिलक और मोटर साइकिल की माँग है, समझिए।

सुनकर पहलवान का मुँह लटक गया। दोनों लोग लौटकर चारपायी पर बैठ गए।

थोड़ी देर तक चुप्पी रही। सब एक दूसरे का मुँह देखते रहे। फ़िर मामाजी ही बोले आजकल तो सड़े गले बहेल्ला लड़कों का तिलक भी इक्यावन हज़ार से शुरु हो रहा है भइया। मोटर साइकिल के बिना तो बात ही आगे नहीं बढ़ती। वह गाना तो आप लोगों ने भी सुना होगा दुलहा का मुँह जैसे फैजाबादी बण्डा/चढ़े का माँगे हीरो होण्डा। जब बाण्डा जैसे मुँह वाले लड़के हीरो हाण्डा माँग रहें हैं तो हमारे भांजा तो लाखो में एक है। जीजाजी के मुँह खोलने की देर है, जो मांगेगे वही मिलेगा। रोज ही तो कोई न कोई आकर घर घेर रहा है।

पहलवान को घर घेरने वाली बात अखर गयी। हम इनका घर घेरने आये हैं? बातचीत में तनिक भी लिहाज नहीं। मुँह बाय इन्तज़ार में बैठे हैं कि कौन आकर कितनी बोली लगाता है। समझ गये कि यह दाना इनके दाँत से फूटने वाला नहीं है। तब क्यों न थोड़ा खुला-खुली बात कर ली जाये। तीरथ बता रहे थे कि पिछले साल ही इन्होनें भी अपनी बेटी ब्याही है। घर-दुआर देख कर तो नहीं लगता कि इक्कीस हज़ार भी तिलक दियें होंगे। उन्होंने खँखार कर शुरु किया सुना है आपने भी पिछल साल ही बेटी ब्याही है। लगता है लड़के वालों ने आपको भी काफी दबाया है।

- अच्छा रिश्ता पाने के लिए दबना भी पड़े तो खलता नहीं है। मामाजी बोले इकलौती बेटी थी। ऐसे वैसे घर तो भेज नहीं सकते थे। तभी तो खोजते-खोजते पाँच साल लग गये।

सूबा हैं? थोड़ी देर चुपचाप सिर हिलाते रहे पहलवान फ़िर फूछा- क्या करते हैं पाहुनजी? कहीं साहेब

-वही तो नहीं हैं लेकिन हो सकते थे। झुन्नू बाबू बोल पड़े किसी की नौकरी करना उनके खनदान भर में किसी को पसन्द नहीं है। अपना कारोबार है। ठेकेदारी करते हैं। दस-पन्द्रह साल की जमी जमायी

ठेकेदारी है। अगले इलेक्शन में विधायकी लड़ने वाले हैं। झुन्नू बाबू ने एक साथ कई रद्दे जमाये। जैसे कह रहें हों कि और पूछो क्या पूछना चाहते हो।

- किस पार्टी से? पहलवान ने जानना चाहा।

- किसी भी पार्टी से। सारी पार्टीयों में अपने ही आदमी है। उस समय जिसकी हवा गर्म रहेगी उसी से लड़ जायेंगे। वे तो निर्दल भी लड़ जायें तो सीट निकाल लेंगे। दस बीस लोग हमेशा आगे-पीछे चलते हैं। कहकर झुन्नू बाबू पहलवान की आँखों में सीधे देखते हुए मन्द-मन्द मुस्कुराने लगे।

- वाह क्या बात है! दस पन्द्रह लोगों से ठेकेदारी! तब तो उम्र भी ठीक-ठाक होगी। पहलवान ने पेच निकाला।

- ज्यादा नहीं। झुन्नू बाबू थोड़ा अटकेचालीस के अन्दर ही हैं।

-लेकिन आपकी बेटी तो आपके सुपुत्र से छोटी है। उन्नीस-बीस साल से ज्यादा क्या रही होगी। पहलवान हल्के-हल्के आगे पीछे सिर हिलाते हुए बोले।

झुन्नू बाबू झिड़की सी देते हुए बोलें अरे मर्द की कहीं उम्र देखी जाती है। सिर के बाल न झड़े तो पच्चीस के भी न लगते। फ़िर आवाज़ को थोड़ा मुलायम बनाते हुए बोले शहर गये थे अपने किसी दोस्त के घर। नहाते समय बालों में शैम्पू की जगह भूल से बालसफा लोशन लगा लिया इसलिए आगे के आधे बाल झड़ गये।

-बाल तो लबार होते हैं झुन्नू बाबू। पहलवान सन्तवाना देने वाले स्वर में बोले-छोटे-छोटे बच्चों के झड़े पके जा रहें। असली चीज है कमाई-धमाई। वह है ही। लेकिन दस-बीस लोग साथ लेकर क्यों चलना पड़ता है? कोई खतरे की बात?

- अरे नहीं भाई। झुन्नू बाबू प्रश्न के भोलेपन पर तरस खाते हुए हँसने लगे दस बीस लोग पीछे होने से धाक जमती है। लगता है कि आदमी पावर वाला है। कोई जल्दी उलझता नहीं। दफ्तरों में काम जल्दी हो जाता है। फील्ड में रहना है तो यह सब करना पड़ता है।

-तब तो राइफ्ल-बन्दूक भी लेकर चलते होंगे। गोली-बारुद वालों के लिए तो लोग दूर से ही रास्ता छोड़ देते हैं।

बात को भूलभुल्लैया में उलझते देख लड़के के मामा उठकर घर के अन्दर चल गये।

-वह तो जब चाहे खरीद लें लेकिन उनके बाप खरीदने की इजाज़त दें तब न। कहते हैं खतरे वाला सामान साथ लेकर नहीं चलना। लेकिन इधर डी. एम. साहब ने खुद बुलाकर लाइसेंस दे दिया। जैसे ही बाप की इजाज़त मिली खरीद लेंगे।

लड़के के मामा थोड़े दार बाद घर से बाल्टी लेकर निकले और कुएँ पर नहाने चले गए।

पहलवान समझ गये कि मामा मैदान छोड़ गये। बुढ़ऊ कितनी देर झेलते हैं यह देखना है।

-वैसे जमाई बाबू के पिताजी ठीक सोचते हैं। आजकल इज्जतदार लोग बन्दूक-रायफल रखने पर जोर नहीं दे रहे हैं। हाँ दिन बहुरता है तो आदमी पक्का मकान जरुर बनवाता है। दस-पन्द्रह साल में पक्की हवेली तो बना ही लिये होंगे।

22

लगा की इस तरह के सवालों से झुन्नू बाबू की बेचैनी बढ़ रही है। लेकिन उन्होंने अपने को सँभाल लिया और शांत स्वर में बोलेदो लाख ईंट का पंजावा पिछले साल लगवा दिया था। जब चाहेंगे बनवाना शुरु कर देंगे। बात यह है कि ठेकेदारी का काम इतना फैला लिया है कि और किसी काम के लिए फुरसत ही नहीं मिलती।

-आप बता रहें हैं कि खेती-बारी भी काफी जमाए हुए हैं। हरवाहों-चरवाहों की जैसी किल्लत है उसको देखते हुए तो ट्यूबवेल, ट्रैक्टर का इन्तज़ाम बहुत पहले करना पड़ा होगा।

-ट्यूबवेल की तो ज़रुरत तो इसलिए नहीं की सारे खेत नहर के किनारे हैं रही ट्रैक्टर की बात तो उनके बाप लोन ले कर खरीदने के पक्ष में नहीं हैं और खरीद भी लें तो उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। दामाद का ठेका-पट्टा सब शहर में है। कहने के साथ ही झुन्नू बाबू उठ खड़े हो गये। बोलेमैं घण्टे भर की मोहलत चाहता हूँ। आलू का बीज खरीदने बजार जाना बहुत जरुरी है। तब तक आप लोग राजेश के मामाजी के साथ बातचीत करें।

पहलवान समझ गये कि उनके सवालों से घबराकर ही बुढ़वा मैदान छोड़ कर भाग रहा है।

वे भी उठकर खड़े हो गये और होथ जोड़ कर बोले-आप इत्मीनान से बाजार करें। मामाजी भी स्नान-ध्यान करें। बातचीत जो होनी थी, हो गयी है। हमें भी चलने की आज्ञा दीजिए। राजेश का माता जी को बुला लें तो उनसे भी इजाजत ले लें।

लड़के की माता जी सिर का आँचल थोड़ा आगे खिसकाकर और आँचल का खूँट दाँत से दबाकर एक हाथ में पीढ़ा लिए हुए आई और पहलवान की चरपायी के आगे थोड़ी दूरी बनाकर पीढ़ा रख कर बैठ गई।

पहलवान बोले-आपके दरवाजे रिश्ता लेकर आयें हैं। चाहते हैं कि आप अपना भी फैसला सुनाएँ। कुछ सुनकर जाना चाहते हैं।

-हम क्या बोलेंगे मरद-मानुख के बीच में? वे लाज दिखाते हुए बोलीं।

-अरे बेटा आप का है। आपने पैदा किया है। सेया-पखेया है। कुल-खानदान देकर पतोहू लायेंगी तो हाथ-पैर दबाएगी। सेवा करेगी। सिर का जुआ निकालेगी। बिना आपके बोले कैसे काम चलेगा! बहुत लेन-देन की हैसियत में तो हम नहीं हैं, लेकिन लड़की आपको गुन-सुहूर वाली दे सकते हैं।

-गुन-सुहूर, रुप-रंग, कद-काठी कुल-खनदान तो चाहिए ही चाहिए भइया। उसमें कैसी कोताही! लेकिन इसके साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि कैसी गोड़ी लेकर ड्योढ़ी में परवेस करती है। रुपये-पैसे की लालच हमें एकदम नहीं है। भगवान ने बहुत दिया है। लेकिन किसी रईस के घर से आएगी तो उसके साथ रहीसी आयेगी। किसी दरिद्र के घर से आयेगी तो इस घर में भी उसके साथ-साथ दलिद्दर की पैसारी हो जायेगी। बस यही बचाना होगा। बाकी तो सारी बेटियाँ लक्ष्मी का अवतार होती हैं।

अरे, यह तो अपने भाई-भतार से भी दो कदम आगे है। पहलवान का रोयाँ-रोयाँ सुलगने लगा।

चिढ़कर बोले हुकुम हो तो घर का दुःख-दलिद्दर दूर भगाने का एक तरीका हम भी बता सकते हैं। सीधे-सीधे डुगडुगी पिटवाकर बाजार के दिन लड़के को निलामी पर क्यों नहीं चढ़ा देतीं? झुन्नू बाबू के बाप तो आपकी गोड़ी इस ड्योढ़ी के अन्दर पड़ने से नहीं बचा पाये। दलिद्दर की पैसारी हो ही गयी, जिसके चलते आपको अपनी बेटी अधेड़ दामाद के पल्ले बाँधना पड़ा। कच्चे घर में गुजारा करना पड़ रहा है। दरवाजे पर साबुत बैल तक नहीं हैं। घर की दिवारें दर्रा फाड़े हैं, छाजन बैठी हुई है। तीन लड़के हैं। तीनों को निलामी पर चढ़ा दीजिए तो घर में सात पुरखों से जड़ जमाये घुसा दलिद्दर भी भाग जायेगा और पक्की कोठी भी खड़ी हो जायेगी।

-ए भइया आप तो कुफार बोलने लगे। अरे बदा होगा तो कोठी भी खड़ी हो जायेगी। बाकी आप तो ऐसी बोली बोल रहें जैसे दीन-दुनिया में रहते ही नहीं। जो हीरा खरीदने आयेगा उसे हीरे की कीमत भी देनी पड़ेगी। हमारा बेटा नीचे-ऊपर से मिलाकर सात-आठ हजार पैदा कर रहा है तो यह किसके हाथ में जायेगा। जो बहू बनकर इस घर की ड्योढ़ी लाँघेगी उसी के हाथ में तो। इसमें नाराज होने या बोली बोलने की क्या बात है? हम भी वही कहेंगे जो दुनिया का दस्तूर है।

पहलवान हाथ जोड़कर चल पड़े। तीरथ पीछे-पीछे। पहलवान बहुत रंज में थे। नौ बजे आये थे। अब दो बजने वाले थे। एक कप चाय पिलाने के अलावा दुबारा पानी के लिए भी नहीं पूछा मक्खीचूसों ने। गाय बियाई थी। एक-एक गिलास मठ्ठा ही पिला देता ससुरा। अपनी बेटी का विवाह दूनी उमर के वर से किया है। दामाद की हैसियत क्या है, यह भी साफ हो गया इसके बावजूद दिमाग़ सातवें आसमान पर है।

भूख बहुत तेज़ लगी थी। खाना खाते ही सुस्ती ने घेर लिया। बिना कुछ बोले-चाले सो गये। जगे तो शाम उतर रही थी। चलने के लिए तैयार होने लगे तो तीरथ रोकने लगे देर हो गई है। सबेरे जाइएगा। लेकिन पहलवान नहीं माने। बोले-घण्टा डेढ़ घण्टा रात बीतते-बीतते आराम से पहुँच जाएगें।

सतनी के घर के पास पहुंचे तो इच्छा हुई कि उसके घर की ओर मुड़ जायें। क्या पता आई हो तो देखा-देखी हो जाये ! मन थोड़ा हुलसित हो जाये। लेकिन दुविधा में पड़े-पड़े ही साइकिल आगे बढ़ गयी।

फ़िर मन को समझा लिया की सतनी भी अब उन्हीं की तरह बिना फूल-पात की हो गयी होगी। वह खनखनाती हँसी और आँखों की चमक कब की ग़ायब हो चुकी होगी। न मिलना ही अच्छा।

आधे रास्ते आते-आते उन्हें डर लगने लगा। पत्नी ने आते समय सचेत किया था कि खुद आगे बढ़ बढ़कर मत बोलिएगा। तीरथ भइया को बोलने दीजिएगा लेकिन वे अपनी आदत से बाज नहीं आये। बोलकर काम बिगाड़ दिया। पत्नी ठीक कहती है कि मुझे अपनी जुबान पर कन्ट्रोल नहीं रहता। पहुँचते ही पूँछेगी। क्या बताऊँगा?

घर पहुँचते-पहुँचते खवायी-पियायी का समय निकल गया था। माँ बेटी-सोने की तैयारी कर रही थी। आज ही वापस आ जाएगे, ऐसा तो सोचा ही नहीं था। उन्हें देखकर पत्नी ने बेटी को रसोई का काम सौंपा और खुद एक बाल्टी पानी और लोटा ले आई। जब तक पहलवान ने हाथ-पैर धोया, वे चाय बना लाई। पहलवान डर रहे थे कि अब किसी भी समय पत्नी लड़के वालों का प्रसंग छेड़ेगी, लेकिन पत्नी ने ऐसा नहीं किया। वे तीरथ और उनके परिवार का हाल-चाल ही लेती रहीं। खाने-पीने के बाद पत्नी ने बेटी को अन्दर से दरवाजा बन्द करने के लिए कहा और गरम तेल की कटोरी लेकर मड़हें में लेटे पहलवान के

पास आई। पैर के तलुओं और टखनों में अच्छी तरह देर तक मालिश करती रहीं। लेकिन लड़के वालों के बारे में कोई बात नहीं शुरु की। वे जानती थीं कि कोई उम्मीद की बात होती तो पहलवान से बिना बताये घड़ी भर भी न रहा जाता। कुछ नहीं बता रहे हैं इसका मतलब है कि बताने लायक कुछ नहीं है। ऐसे में पूछताछ उनके अन्दर झुंझलाहट पैदा कर सकती है। पहलवान की नाक बजने लगी तो वे नीचे उतरने लगीं। इस बीच नाक की आवाज बन्द हो गई और पहलवान ने उनकी बाँह पकड़कर अपनी ओर खींचा तो कटोरी ताखे पर रखकर वे धीरे से बगल में लेट गयीं। बिना कुछ बोले दोनों प्राणी सामान्य से अधिक समय तक दाम्पात्य सुख में डूबते उतराते रहे। फ़िर पत्नी उठीं। पैताने फिकें कम्बल को उठाकर पहलवान के शरीर को अच्छी तरह बँका और हल्के से उनकी नाक हिलाकर बाहर निकल गई।

पहलवान की नींद भोर में ही खुल गई। लेकिन पता नहीं कितनी थकान चढ़ी थी कि उठने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मन कर रहा था कि इसी तरह पड़े रहें।

क्या यह साइकिल चलाने की थकान थी? या बुढ़ापे के अभिसार की? या झुन्नू बाबू के घर से टका-सा जवाब मिलने के चलते ?या पहले की बहुत सारी असफलताओं और निराशाओं के एक साथ सीने पर चढ़ बैठने के कारण।

लगती है। दिन में राई-सी लगने वाली समस्या भी अगर भोर में दिमाग़ में घुसती है तो पहाड़-सी लगने

क्यों बोल गये वे इतनी कड़वी बातें झुन्नू बाबू के घर पर? क्या जगह-जगह मिलने वाली निराशा उन्हें चिड़चिड़ी बना रही है? आख़िर कुछ देखकर ही तो पप्पू की अम्मा को यह आशंका होती है कि मैं बोलकर अपना काम बिगाड़ लेता हूँ।

वे दिशा मैदान के लिए निकले तो वहाँ से खेलावन के दरवाजे पर चले आए। खेलावन सिकरेटरी उनके लिए आधुनिक दुनिया की ओर खुलने वाली खिड़की की तरह हैं। एक तो पड़ोसी, दूसरे मिलनसार। तीसरे, हफ्ते में दो-एक दिन घर में फुर्सत में दिखते हैं। वे खेलावन को व्यावहारिक और दुनियावी सूझबूझ वाला आदमी मानते हैं। बाहर की दुनिया का हालचाल जानने और किसी समस्या का निदान जानने के लिए वे खेलावन के पास ही आते हैं। खेलावन आजकल अख़बार भी माँगने लगे हैं। पहलवान को अख़बार पढ़ने का चस्का है। पहले वे अख़बार पढ़ने के लिए बजार के निकास पर गाऊदीन की चाय की दुकान पर जाते थे। उसके लिए समय भी निकालना पड़ता था और चाय भी पीनी पड़ती थी। अब अख़बार पढ़ने के लिए भी खेलावन के दुआर पर चले जाते हैं। न रोज़ सही, रविवार को तो ज़रुर जाते हैं। अखबार में पढ़कर खेती किसानी में काम आने वाली जाने कितनी जानकारियाँ वे अपने पाकेट डायरी में नोट करते रहते हैं। सिकरेटरी की क्या तो तनख्वाह और क्या ओहदा! लेकिन उसी में खेलावन इस तरह रहते हैं कि गाँव के मान्निद लोगों में गिने जाते हैं।

पप्पू ने जब पिछले साल इंजीनियरिंग की पढ़ाई वाला इम्तहान पास किया तो चारों तरफ से मिलने वाली बधाई की खुशी में वे भी मगन हो गये, लेकिन जब साल भर की एक मुश्त जमा की जाने वाली फ़ीस की रकम सुनी तो उनकी घिघ्घी बँध गयी। उनके जैसा चार एकड़ की जोत वाला किसान अगर साल की दोनों फ़सलों की कुल पैदावार बेच दे तो भी खाद, बीज सिंचाई, मज़दूरी का खर्च घटाने के बाद जो कुछ हाथ लगेगा उससे एक साल की फ़ीस का इन्तज़ाम होना मुश्किल है। चार साल तक इस तरह की फ़ीस

भरिए तब कहीं बेटा इंजीनियर कहलाने लायक होगा। अगर लगातार पास करता चले तब। लगभग सभी ने माना कि आज के ज़माने में सिर्फ़ खेत के भरोसे किसी भी किसान के लिए बेटे को इंजीनियरिंग पढ़ाना सम्भव नहीं है। बहुत तेज़ है पढ़ने में, फर्स्ट आया है तो बी.एस.सी करवा दीजिए और हिम्मत पड़े तो एम.एस.सी करवा दीजिए, कहीं प्राइवेट कालेज में रोटी दाल का जुगाड़ लग जाएगा। तब खेलावन ने हिम्मत दिलायी थी कि किसी तरह कर्जा काढ़कर जोड़ बटोरकर भर्ती करा दीजिए फ़िर कोई न कोई रास्ता वक़्त के साथ निकल आयेगा। किसान का काम इसी तरह चल सकता है।

खेलावन दुआर पर ही मिल गये। मोटर साइकिल की सफ़ाई करने में जुटे थे। पहलवान को देखते ही हाथ जोड़कर स्वागत किया और बेटे को आवाज़ देकर कुर्सी निकालने के लिए कहा। बेटे ने कुर्सी पहलवान पास रखकर प्रणाम किया तो उसे ध्यान से देखते हुए बोलें तुम कब आये बाबू?

-कल ही चाचा।

पहलवान ने देखा खेलावन के बेटे का शरीर पाँच छः महीने में ही गबरु जवान सा निखर आया था। पाँच छः महीने पहले खेलावन ने जुगाड़ लगाकर उसे पी.एस.सी में भर्ती करवा दिया। लोगों का कहना था कि घूस का रेट एक से सवा लाख के बीच में चल रहा था, लेकिन खेलावन ने जुगाड़ लगाकर सत्तर-अस्सी हज़ार में ही काम बना लिया। वही लड़का पाँच-छः महीने तक सरकार की रोटी खाने के बाद उनके सामने खड़ा था और पहले से ड्योढ़ा तन्दुरुस्त और रोबिला लग रहा था।

-कल सवेरे सगरे से लौटने के बाद दिखे नहीं भइया। कहीं चले गये थे क्या?

- कल चले गये थे बुआ के गाँव? बेटी के लिए एक रिश्ते की बातचीत करने। लेकिन बातचीत बेनतीजा रही। आना-जाना डाँड़ गया।

पहलवान सारी बात विस्तार से बताते रहे। फ़िर बोले-जो काम लायक लड़के हैं उनका भाव तो आसमान पर है ही, जो किसी काम के नहीं हैं उनके माँ-बाप भी सीधे मुँह बात करने को तैयार नहीं दिखते।

- देखो भइया। लड़के के बारे में जो कुछ आपने बताया उसको सुनकर तो यही कहेंगे की लड़का हाथ से जाने के लायक नहीं है। अब रही बात की मिलेगा कैसे! तो इसके लिए दो उपाय करने होंगे। एक तो यह है कि लड़के के घर एक डमी उम्मीदवार भेजा जाए जो लड़के वालों के घर दो दिन तक टिकान

करके उसके बाप को घिसे। फ़िर ग्यारह हज़ार तिलक और एक स्कूटर की पेशकश करके लौट आवे। दूसरे हफ़्ते दूसरा डमी भेजा जाए जो बातचीत के दौरान इस अफवाह की चर्चा करे कि इधर सालभर के अन्दर जितने भी डेली-वेजज बालों को रेगुलर किया गया है। उनका मामला हाईकोर्ट में चैलेंज हो गया है और किसी भी समय कोर्ट का फैसला खिलाफ में आ सकता है। तब तो आपका बेटा दो पैसे के लिए भी महँगा हो जाएगा। हम तो यह जानकर आए थे कि रेगुलर सेलेक्शन के थ्रू आये हैं। यह भाव दिखावे की हमें ऐसा रिस्की रिश्ता नहीं करना है कि कल को बेटी-दामाद दोनों को बैठाकर खिलाना पड़े। तीसरे हफ़्ते हम लोग फ़िर चलेंगे तो एक मोटर साइकिल और पचास हज़ार तिलक पर आराम से सौदा पट जाएगा।

26

- आपने शायद मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। मैं अपनी बात से लड़के के माँ-बाप और मामा तीनों के चिढ़ा आया हूँ।

-दहेजू के लिए कैसा चिढ़ना और कैसा चिढ़ाना? बस उसकी डिमान्ड का इन्तज़ाम करना होगा। तब अगर पाँच जूते भी मारना चाहोगे तो झुन्नू बाबू सिर झुका देंगे।

-उसके लिए सोच लिए हैं। वह जो पश्चिमी सीवान पर ऊँचास वाला चक है पौन एकड़ के रकबे वाला, उसी को बेच देंगे। एक तो घर से दूर बहुत है, दूसरे उसमें नहर का पानी भी नहीं चढ़ता। तीसरे किराये के पम्पिंग सेट से सिंचाई करने में इतना खर्चा आ जाता है कि कोई बचत नहीं होती। गोंयड़ का रेहन वाला खेत भी छुड़ाना है। पप्पू की पचपन हज़ार फ़ीस भी भरनी है इसी साल की। दो लाख भी मिल जाये तो फ़ीस और विवाह का काम चल सकता है।रेहन अगले साल तक छुड़ाने की सोचेंगे। लेकिन डमी कहाँ मिलेंगे?

- उसका इन्तज़ाम मेरे ज़िम्मे छोड़िए।

खेलावन का बेटा पहलवान को मुँह धोने के लिए लोटे में पानी दे गया। वे दातून चीरकर जीभसाफ किए और कुल्ला करने लगे।

- लेकिन रेहन वाली जमान तो पहले ही निकल गयी। यह पौन एकड़ भी निकल गयी तो जोत घट कर तीन एकड़ से भी कम रह जायेगी। तब साल भर की रोटी कैसे चलेगी?

- आप क्या सोचते हैं, मैंने इस पर कभी सोचा नहीं? हज़ार दफे सोचा है लेकिन जितना सोचिए उतना ही आँखों के आगे अँधेरा छाने लगता है। कोई किसान अपनी जमीन बेचने के लिए क्या इतनी आसानी से तैयार होता है। लेकिन दूसरा रास्ता भी तो नहीं दिखता। बेटी ऐसे-वैसे घर में भेज दें? आये दिन रोते-कलपते दरवाजे पर जाहिर रहे तब भी तो नहीं देखा जायेगा।

- भौजी से सलाह किए हैं?

-अभी नहीं। सोचा पहले आप से चर्चा कर लें। तब उनसे बात करें।

खेलावन का बेटा चाय दे गया। फ़िर एक कुर्सी और लाया। दोनों लोग आमने-सामने बैठ कर चाय पीने लगे।

-भइया खेलावन एस बात पूछें? पहलवान चाय का घूँट उतारने के बाद कहते हैं- इस इलाके में दस पन्द्रह एकड़ जमीन वाले किसान तो चार छः गाँव में खोजने पर शायद एकाध ही मिलेंगे। सौ में पचीस-तीस घर एकदम भूमिहीन है। चालीस-पचास घरों के पास आधे से एक एकड़ तक जमीन है। हमारे जैसे चार-पाँच एकड़ की जोत वाले किसानों की गिनती ही यहाँ बड़े किसानों में होती है। सोचता हूँ कि जब हमें अपना पाँच-छः लोगों का परिवार पालना कठिन हो रहा है तो बाकी लोगों का गुजर-बसर कैसे होता है? हम पैदा होने के दिन से लेकर मरने के दिन तक क्यों परेशान रहते हैं? हमारी विपत्ति का कारण क्या है?

- पहलवान भइया। जो बिल्कुल अतात पंखी हैं, जिनके पास अपनी कहने को एक धूर भी जमीन नहीं है, जिनके नीचे धरती और ऊपर आसमान है, उनके ददुखों का भला क्या ओर-छोर? लेकिन जो जगह जमीन वाले हैं, उनके दुखों का भी कोई एक कारण नहीं है कि झट से बता दें।

-इसके लिए जिम्मेदार कौन है भइया?

-बाकी जो लोग जिम्मेदार हैं उनकी चर्चा बाद में। सबसे ज्यादा तो हम खुद ही जिम्मेदार हैं। पूछिए कैसे? सरकार की ओर से गाँवों को बिजली देने के लिए चौदह घण्टे का रोस्टर घोषित है। अख़बार और रेडियो आये दिन इसकी खबर देते रहते हैं। इस साल खरीफ की फ़सल सूखे के चलते आधी हो गयी

भादों-क्वार के सूखे के दिनों में भी कभी चार पाँच घण्टों से ज्यादा बिजली नहीं आयी। उसमें भी हर आधे घण्टे में कटती रही। कितनी बार कोशिश की गयी कि चार-छः गाँव के लोग सब स्टेशन तक चलकर अपना विरोध जताएं, घेराव करें ताकि फ़सल बच जाए। जिन्दा रहने का सहारा हो जाय। लेकिन कितने लोग इसके लिये बाहर आये? सब स्टेशन के आस-पास के ही चार-पाँच गाँवों की आबादी आठ-दस हज़ार से अधिक है लेकिन बहुत प्रयास करने पर भी एक बार लोग जुटे भी तो कितने ? ढाई तीन सौ। नहर विभाग के मुकदमें के खिलाफ प्रदर्शन के लिए परसों कितने लोग सगरे पर जुटे, यह आपने देख ही लिया। चीनी मिल के मालिक ने गन्ना ले लिया। तीन साल से भुगतान नहीं कर रहा। एक बार सब लोग बड़े प्रयास के बाद प्रदर्शन के लिए राजी हुए।

पुलिस ने गोली क्या चलायी की लोग भूल गये कि उनका कोई बकाया भी है। ब्लाक के कर्मचारियों ने गाँव में कम से कम आठ लोगों के नाम से बैंक वालों से मिलकर फर्जी लोन करया है। तहसील में वसूली गयी हुयी है। आये दिन कोई न कोई पकड़ कर हवालात में बन्द किया जा रहा है। जो पकड़ा जाता है वह अपनी बेकसूरी का रोना रोता है, पर यह नहीं होता कि सारा गाँव मिलकर धरना-प्रदर्शन के लिए निकले। बाजार का दुकानदार मिलावटी यूरिया और डाई बेचता है। यह सबको पता है। लेकिन उसके खिलाफ रिपोर्ट लिखाने यहाँ तक की कृषि अधिकारी के दफ्तर में की जाने वाली शिकायत पर दस्तखत करने तक के लिए कोई जल्दी तैयार नहीं होता। इससे सब जान जाते हैं कि बिना रीढ़ के हैं। केचुए हैं। इनसे डरने की जरुरत नहीं।

-बात तो आप ठीक कहते हैं। लेकिन आदमी खेती किसानी देखे की लड़ाई करने निकले? किससे-किससे लड़ें?

-नहीं लड़ेगा तो मरेगा, मर तो रहा ही है और जल्दी मरेगा। देश-दुनिया के नक्शे से गायब हो जायेगा। कोई रोक नहीं सकता। बहुत सारे मुद्दे हैं जिनसे लड़ना ज़रुरी है। जैसे सरकार की नीतियाँ। गेहूँ पैदा करने में लागत बारह रुपये किलो आती है लेकिन गेहूँ बिकता है सात रुपये किलो, आलू और प्याज किसान के घर पैदा होता है तो दो रुपये किलो बिकने लगता है। दो महीने बाद जैसे किसान के घर से बाहर निकला, दस रुपये किलो हो जाता है। पिछले पैतिंस साल में जमीन सौ सौ गुनी मँहगी हो गयी। सोना पचहत्तर गुना, डीजल पाचस गुना जबकि गेहूँ सिर्फ सात गुना। सारी मन्दी किसानों के लिए ही है। पिछले दिनों बजट की खबर अख़बार में छपी थी, उसमें जो चीजें सस्ती की गयी थीं उसमें थी कार, कम्प्यूटर, कालीन और कोकाकोला और जो चीजें मँहगी की गई थीं उनमें थीं बीड़ी-माचिस, चाय-बिस्कुट, पोस्टकार्ड। बड़े पूँजीपतियों के कारखाने में बनने वाली और अमीर लोगों के उपयोग में आने

वाली चीजें सस्ती हो गयीं और कुटीर उद्योग में बनने वाली या गरीब के काम में आने वाली चीजें महँगी। जिस सरकार की नियत

ऐसी गरीब विरोधी, किसान विरोधी हो, उसके खिलाफ गरीब नहीं खड़ा होगा, किसान नहीं खड़ा होगा तो कौन खड़ा होगा?

-खेलावन भाई हम में से कितनों को पता है कि बजट किस चिड़िया का नाम है और वह कैसे हम लोगों का जीवन मुहाल करता है?

-बात फ़िर घूम कर उसी जगह पहुँच रही है भइया। अरे, बाजार के मिलावटी दुकानदार का पता तो है? चीनी मिल के मालिक की पता तो है। फर्जी मुकदमा लिखने वाले ओवरसियर का पता तो है? बिना रोस्टर के बिजली काट देने वाले इंजीनियर का पता तो है? हफ्ते में केवल एक दिन स्कूल आने वाले प्राइमरी स्कूल के मास्टर का पता तो है? इनका आप क्या उखाड़ ले रहें हैं?

पहलवान से कुछ कहते नहीं बना। केवल सिर हिलाते रह गये।

-जगना तो पड़ेगा। लड़ना तो पड़ेगा। जिन्दा रहना है तो अपने मारने वालों के सामने डटना तो पड़ेगा। वरना जैसे हजारों जातियाँ, जनजातियाँ, पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ इस दुनिया से उछिन्न हो गई, वैसे ही किसान नाम की प्रजाति भी विलुप्त हो जायेगी।

तभी पहवान के घर से बेटी के पुकारने की आवाज़ आयी बाबू ऊ ऊ अम्मा बुला रही हैं।

खेलावन के घर से लौटते हुये पहलवान ने इतनी हिम्मत जुटा ली थी कि सारे मुद्दे पर इत्मीनान से पत्नी से सलाह-मश्विरा कर सकें। लेकिन पप्पू की अम्मा को बात शुरु करने का मौक़ा तभी मिला, जब नहा खाकर पहलवान आराम करने के लिये मुँहड़े में लेटे। हुक्का-पहलवान के हाथ में देकर वे कुछ देर तक खड़ी रहीं, फ़िर पैताने बैठ कर पाँव दबाते हुए शुरु किया।

-कल जाने का कोई फायदा हुआ कि बेकार ही रहा इतनी दूर गोड़ तुड़ाने जाना?

-लड़का तो ठीक है। नौकरी से भी लगा है, लेकिन वे लोग लालची बहुत हैं। एक मोटर साइकिल और इक्कायन हज़ार तिलक के लिए मुँह बाये हैं।

-छोड़िए। कहीं और पता लगाइए।

- लेकिन रिश्ता अच्छा है। यह बताओ, उचाँस वाला खेत अगर निकाल दिया जाये तो कैसा रहे? दो लाख के करीब मिल सकता है।

-क्या बोल रहें? आपके दो-दो बेटे हैं कल को समझदार होंगे तो क्या कहेंगे? उनके मुँह का कौर छीन लेने जैसा ही तो होगा खेत बेचना।

-कुछ पैदा तो कर नहीं पाते उसमें। नहर का पानी चढ़ता नहीं और पम्पिंग सेट से सींचने पर आमद से ज्यादा लागत आ जाती है।

-तब भी नहीं। अभी एक बीघा रेहन रखा गया। दो साल हो गये। छुड़ाने की नौबत नहीं आ रही है। ऊपर से यह सवा बीघा भी चला जायेगा।

-बेटों के लिए इतनी चिन्ता करने की ज़रुरत नहीं पड़ेगी। इंजीनियरिंग कर लेने के बाद बेटे को इतनी तनख्वाह मिलेगी कि सबकुछ फ़िर खरीदा जा सकता है। बेटी के लिए अच्छा घर-वर खोजना भी तो अपनी जिम्मेदारी है।

- भगवान कोई रास्ता सुझायेंगे। दुनिया में सब लालची ही नहीं हैं। खोजने पर भले लोग भी मिलेंगे। भगवान की दुनिया से कोई बिरवा खत्म नहीं होता।

जितनी आसानी से पत्नी के मान जाने की उम्मीद थी उतना आसान नहीं है-पहलवान ने सोचा। हो सकता है पत्नी का सोचना ही ठीक हो। पहलवान को अपने अनुभव से मालूम है कि जीत हमेशा पहलवानिन की ही होती है। घर-गृहस्थी के मामले में असली पहलवान पहलवानिन ही है। इसलिए चुप हो गए। उन्हें इस बात से अन्दर ही अन्दर राहत महसूस हो रही थी कि झुन्नू बाबू और उनकी पत्नी

के साथ हुई नोक-झोंक की चर्चा वे बचा ले गये। पत्नी को अगर झुन्नू बाबू के घर पर हुई बातचीत पता चल जाये तो शायद उनकी एक भी गत बाक़ी न लगायें।

कार्तिक एकादशी।

यानि दलिद्दर भगाने की रात।

और सूर्यास्त से पहले गन्ना पूजन।

पहलवान पीतल की थाली में आग, अगियार, हुसली, तेल और सिन्दूर लेकर गन्ना पूजने के लिए खेत जा रहें हैं। पीछे-पीछे आधी बाल्टी पानी, लोचा और गँड़ास लेकर पप्पू।

घर में हज़ारों साल से जड़ जमाकर बैठे दलिद्दर भगाने के लिए यों तो किसान का पूरा परिवार साल भर बैल की तरह खेत खलिहान में जूझता है लेकिन कार्तिक की एकादशी को हर परिवार इसे भगाने और ऐश्वर्य को अपनी ज़िन्दगी में प्रविष्ट कराने के लिए अनुष्ठानिक उद्यम करता है। सावन-भादों की मुफ़लिसी को पूरा परिवार सिकुड़कर, धीरज से काटता है। यह वह समय है जिसमें सुग्गे भी उपवास करते हैं। जबकि उनके पंख हैं और वे दूर-दूर तक उड़ सकते हैं। न कोई फल न फूल न फ़सल ।

क्वार-कार्तिक में धान तैयार हो गया। ज्वार, बाजरा, सावाँ, कोदो, मक्का भी। अब कुछ समय के लिए दुर्दिन खत्म। रोटी पक्की। लेकिन नगदी तो गन्ने से ही हासिल होगी। और दलिद्दर दूर होगा नगदी से। इसलिए ऐ गन्ना में वास करने वाली लक्ष्मी, इतनी नगदी दीजिए कि इस साल गृहलक्ष्मी को नयी हँसुली गढ़ायी जा सके।

इस कामना के साथ पहलवान गन्ने के एक मोटे थान को पहलवानिन की हँसुली पहनाकर सिन्दूर तेल का टीका करके कण्डे की आग पर गुड़ और अच्छत की अगियार करके माथा झुकाते हैं। यह और बात है कि पिछले सालों का गन्ने का बकाया चीनी मिलों द्वारा भुगतान न किए जाने के कारण गन्ना पूजन में पहले जैसा उत्साह नहीं रह गया है। खुद पहलवान ने गन्ने की खेती बहुत कम कर दी है। अपनी ज़रुरत भर का गुड़ तैयार हो जाये, इतना ही।

पूजन के बाद पहलवान नें गन्ने के चार-पाँच थान काटे। पप्पू ने उनकी सूखी पत्तियाँ छीलकर अलग किया। इस बीच अगियार सुलग कर ख़त्म हो गयी तो आग को पानी से अच्छी तरह बुझाकर गन्ने का बोझ लेकर बाप-पूत वापस लौटे।

आज के दिन से ही गन्ना चूसने या पेरने की पारम्परिक शुरुआत होती है। दलिद्दर को भी गन्ने से पीटकर भगाते हैं। इसलिए हर गृहिणी को आज के दिन गन्ने की ज़रुरत पड़ती है। जरुरी नहीं कि हर किसान हर साल गन्ना बोये। बहुत से भूमिहीन परिवार भी हैं गाँव में। दलिद्दर सभी को भगाना है। मुँह सभी का मीठा होना है। इसलिए हर गन्ना किसान अपने ऐसे पड़ोसियों के घर गन्ना भेजना अपना धरम समझता है जिन्होंने गन्ना नहीं बोया है। सहाई सिंह जब तक जिंदा थे, पूरे गाँव के गन्ना विहीन परिवारों के घर-सदस्यों की संख्या के बराबर गन्ना भिजवाते थे।

पहलवान ने अपने अड़ोस-पड़ोस के गन्ना विहीन परिवारों की गिनती करके पप्पू से उन लोगों के घर दो-दो गन्ने पँहुचाने के लिए कहा। पहलवान चाहते हैं कि उनके जीवन काल तो यह परम्परा चलती रहे। आगे की राम जाने।

कार्तिक एकादशी की शाम पहलवानिन चना दाल की पूड़ी और सूरन की सब्जी बनाती हैं। साथ में रसियाव यानी मीठा चावल। उनकी सास के ज़माने से चली आ रही है यह परम्परा।

पहलवान ने दाल की पूड़ी भरपेट खायी। ख़ासकर इसमें पड़ा जीरा उनको बहुत प्रिय है। मँड़हें में सोये तो भोर में चारो तरफ से आती ढप्प-ढप्प की आवाज़ से ही उनकी नीन्द टूटी। वे उठकर बैठ गये। हुक्का मिलना इतने सबेरे सम्भव नहीं था। उन्होंने सिरहाने की चुनौटी निकालकर थोड़ी-सी सुर्ती गदोरी पर रखी और चूना मिलाकर रगड़ने लगे।

उनके घर का दरवाजा खुला और पहलवानिन गन्ने की आगोढ़ी से दलिद्दर के प्रतीक सूप को पीटती हुई बाहर निकली। ढप्प-ढप्प के साथ आवाहन का स्वर-इस्सर (ऐश्वर्य) आवै, दलिद्दर जावै। एक-एक कोठरी, रसोई, भण्डार घर, कोठे, जानवरों की सरिया के कोने-अंतरे से पीट पीटकर दलिद्दर को बाहर भगाती हुई।

सूप पर पड़ती गन्ने की चोट से सारा इलाक़ा गूँज रहा है। हर गाँव से, गाँव के हर घर से निकलती ढप्प की आवाज़ और साथ में गृहलक्ष्मीयों का आवाहन इस्सर आवै दलिद्दर जावै।

दलिद्दर के प्रतीक पुराने सूप का हाथ-पैर तोड़कर उसे ऐसे गहरे गढ्ढे में फेंकना जहाँ से वह वापस न लौट सके।

पहलवान सोचने लगे कि जाने कितने युग बीत गये किसानों को अपने घर से दलिद्दर भगाने का जतन करते हुये। लेकिन दलिद्दर है कि जाने का नाम नहीं ले रहा। ऐश्वर्य के आने की बात तो दूर रही। हथेली की सूरती को दूसरी हथेली से पीटते हुये उन्होंने सूपों की ढप्प-ढप्प में अपना सुर मिलाया और उदास हो गये। पिछले कई वर्षों में दरिद्रता से छुटकारा पाने के लिए किए गए अपने निष्फल प्रयासों को याद करते हुए उन्होंने सोचा कि किसान और दरिद्रता का जन्म-जन्म का यह साथ क्या कभी छूट सकेगा? यह गठबंधन कभी टूट सकेगा?

31

सचमुच, क्या है किसान की ज़िन्दगी? एक कोना ढौंकिए तो दूसरा उघार हो जाता है। बचपन में, स्कूल के दिनों में कहाँ पता था कि कितने गाढ़े में ज़िन्दगी कटने वाली है।

उन्हें अपने स्कूली दिन याद आने लगे। उस समय 'जय जवान जय किसान' का नारा बहुत लोकप्रिय था। पहलवान का मन ललकता था कि वे भी फौज़ में भर्ती होते। सन् 62 की लड़ाई हो चुकी थी। सन् 65 की लड़ाई हो ई हो चुकी थी। गाँव देहात में फौज़ सरहद चीन, पाकिस्तान, पैटन टैंक आदि की बड़ी चर्चा थी। 71 की लड़ाई शुरु हुई तब पहलवान दर्जा सात में थे। मिडिल स्कूल में आने वाली पत्रिकाओं में तब 'धर्मयुग' का महत्व बहुत बढ़ गया था। उसमें बंगलादेश की लड़ाई के फोटो और रिपोर्ताज छप रहे थे। पत्रिकाएँ घर ले जाने की अनुमति नहीं थी। वे इंटरवल और ख़ाली घण्टों में बड़ी उत्सुकता से उसे आद्योपान्त पढ़ते थे। उन्हें पता था कि परिवार के अकेले पुत्र होने के कारण उन्हें गाँव में ही रहना होगा और खेताबारी संभालनी होगी। तब ऐसा ही सोचने का चलन था। पिता जी का देहान्त हो जाने के बाद तो इस भविष्य पर मुहर ही लग गई। लेकिन अच्छा किसान बनने की ललक हमेशा बनी रही। अपने जिम्मे खेतीबारी का काम लेने के बाद उन्होंने शुरु-शुरु में गाँव में सबसे अच्छी फ़सल पैदा करके दिखायी। जिस साल गाँव के किसान रामसुख को सबसे बड़े आकार की गोभी पैदा करने के लिए पुरस्कृत किया गया था, उसके अगले साल वे सबसे बड़ा आलू पैदा करके पुरस्कृत हुए थे। चार-पाँच साल तक वे अपने गाँव के प्रति एकड़ सबसे ज्यादा गन्ना पैदा करने वाले किसान रहे लेकिन गन्ने का भुगतान सालों साल लटक जाने के कारण गन्ने की खेती से उनका मन उखड़ गया। अगैती आलू बोने से उन्हें तीन साल ठीक-ठाक कमाई हुई थी लेकिन चौथे साल पता नहीं इलाके में ज़्यादा आलू पैदा हो

जाने के कारण या बिचौलियों की साज़िश के कारण आलू का भाव गिर कर चालीस-पचास पैसे किलो हो गया। उसकी खुदायी करने में जो मजदूरी देनी पड़ती, उतनी भी कीमत मिलने की उम्मीद नहीं थी। कोई अधिया पर भी खोदने को तैयार नहीं था। लिहाजा पश्चिम के जिलों में पता नहीं कितनों का आलू खोदा ही नहीं गया। खेतों में ही पड़ा रह गया। गाँव के भूमिहीन मज़दूर चैत-बैसाख तक खोद-खोद कर खाते रहे।

अभी तीन साल पहले संकर धान 6444 की 130 कुण्टल प्रति हेक्टेयर की पैदावार करके राज्य सरकार ने कृषि रत्न का पुरस्कार प्राप्त किए। लेकिन जब पहलवान इस पैदावार का खर्च और मेहनत की तुलना में पैदैवार की क़ीमत जोड़ते हैं तो वही ढाक के तीन पात वाली दशा प्राप्त होती है। मेहनत करके जतन करके जोर-जुगाड़ करके थक गये पहलवान, लेकिन दलिद्दर ससुरा ऐसा गोड़ तोड़कर घर में घुसा है कि निकलने का नाम नहीं लेता। उन्हें लगता है कि शायद गोसाई जी ने उन्हीं के लिए लिखा है सकल करम करि थकेउँ गोसाई....।

कभी-कभी पहलवान को बहुत तेज़ गुस्सा आता है, मन करता है कि लाठी उठा कर सब को पीट डालें। गाँव के हिस्से की बिजली शहर को पार्कों और सड़कों पर रात-रातभर जलाकर खत्म कर देने वालों को पीटें। गाँव के विकास का पैसा बीच में हड़प कर जाने वालों को पीटें। लाठी लेकर दौड़ते हुए जाएँ और पार्कों और सड़कों के किनारे लगे हज़ारों वाट के बल्ब और ट्यूब तोड़ फोड़ डालें। यही बल्ब तो उनके गाँव के हिस्से की सारी बिज़ली सोख ले रहें हैं। 15-16 रुपये का लागत से पैदा होने वाले गेहूँ का समर्थन मूल्य 8-10 रुपये तक करने वालों को पीटें। फ़िर उन्हें लगता है कि इन सब कामों के लिए उनकी लाठी बहुत छोटी है।

कभी-कभी पहलवान सोचते हैं कि काश उन्हें सही समय पर किसी ने आगह कर दिया होता कि खेतीबारी से पेट भरने का आसरा छोड़ कर पढ़ाई-लिखाई का भरोसा करें। मामूली चापरासी की

ज़िन्दगी भी औसत किसान की ज़िन्दगी से बेहतर होती है यह तब पता चल गया होता तो मिडिल, हाई स्कूल और इंटरमीडियट तीनों प्रथम श्रेणी में पास करने के बावजूद वे इस खानदानी दलदल में क्यों फँसते? पिंड छुड़ाकर वे भी किसी दिशा भाग खड़े होते।

दस पन्द्रह साल पहले तक बूढ़े बुजुर्गों की बात में निराशा और उदासी का पुट मिलने पर पहलवान को बड़ी कोफ़्त होती थी। पर इतने दिनों के अनुभव और नतीजों को देखत-देखते अब उन पर भी निराशा छाने लगी है। वे भी मानने लगे हैं कि किसानी के पेशे में बरकत नहीं होने वाली। अपनी लेई पूँजी लगा कर जो फ़सल वह घर लाता है उसे अज्ञानवश लाभ समझकर थोड़ी देर के लिए खुश हो जाता है। इसलिए कि उसे लागत और लाभ की परिभाषा का पता नहीं है। हाईस्कूल में पाइथागोरस की एक प्रमेय थी कर्ण पर बना वर्ग...। उसे सिद्ध करने में बड़ा दिमाग़ लगाना पड़ता था। पहलवान को लगता है कि किसान की गृहस्थी की प्रमेय पाइथागोरस की उस प्रमेय से भी कठिन है। कौन जाने इसका हल कब निकलेगा !

सूरज डूबने के साथ दो मोटर साइकिलें धड़धड़ाती हुई आकर पहलवान के दुआर पर रुकीं। पहलवानिन यानी पप्पू की अम्मा सूखने के लिए धूप में डाला गया सुखवन उठा रही थीं। एक तरह से उनके बगल में ही रुकीं। पेट्रोल की गन्ध उनके नथुनों में भर गयी। पहलवान बैलों को सानी-पानी दे रहे थे। चार लोगों को मोटर साइकिल से उतरते देखकर थोड़ा चौकें। एक ने लपक कर पप्पू की अम्मा के पैर छुए। फिर दूसरे, फिर तीसरे ने। चौथे जो बुजुर्ग थे, अपनी जगह पर खड़े-खड़े हाथ जोड़ रहे थे।

पप्पू की अम्मा अपने भाई को पहचान गई। तीनें पैर छूने वालों ने पहलवान के पास जाकर उनके पैर छुए। अब पहलवान ने पहचाना। एक तो पप्पू के मामा थे। दूसरे झुन्नू बाबू के साले थे जो उस दिन झुन्नू बाबू के घर पर मिले थे। हाथ में लगा भूसा-खली रगड़ते-झाड़ते हुए पास आकर पहलवान ने चौथे बुजुर्ग सज्जन को नमस्कार किया। पप्पू के मामा और तीसरे पैर छूने वाले ने लपक कर मँड़हें से दो चारपायी निकाली और दुआर पर बिछा दी। पहलवान ने बुजुर्ग सज्जन से अनुरोध कियापधारिये।

बुजुर्ग सज्जन और झुन्नू बाबू के साले एक चारपायी पर बैठ गये। पहलवान दूसरी चारपायी पर बैठे। पप्पू के मामा ने परिचय कराया ये लाल बाबू हैं। रेलवे में माल बाबू हैं। हाबड़ा में नौकरी करते हैं। झुन्नू बाबू के साले साहब के रिश्ते में आते हैं। और इन्हें तो पहचानते ही हैं। झुन्नू बाबू के साले साहब। उस दिन झुन्नू बाबू के घर पर आप लोगों की मुलाकात हुई थी। हम लोग हाईस्कूल में क्लासफेलो थे।

इस बीच चौथा आदमी माल बाबू के पैरों से जूते निकाल पास पड़े चिथड़े से उसे झाड़ने लगा।

पप्पू की अम्मा कुछ देर तक इन्तज़ार करती रहीं कि उनके भाई पास आवें तो अपने मायके का हालचाल पूछें। जब भाई का ध्यान उनकी तरफ़ नहीं गया तो वे अन्दर आ गई। बेटी को गुड़-चबैना निकालने और लोटा माँजने के लिए कहा।

पप्पू के बप्पा समझ गये कि उनके दरवाज़े पर आने वाले माल बाबू रईस और मानिन्द आदमी हैं। पर आये क्यों है? साथ में झुन्नू बाबू के साले और खुद उनके साले। क्या झुन्नू बाबू ने रिश्ता स्वीकार करने का सन्देश भेजा है। हो सकता है उनकी बेटी के रुप-गुण की चर्चा सुनी हो। खुद उनकी शोहरत भी इलाके में सिर्फ़ पहलवान होने के नाते ही नहीं, मानिन्द आदमी के रुप में भी है लेकिन लड़के का बाप खुद सन्देश भेजकर रिश्ता स्वीकार करे, ऐसा क्या इस दुनिया में सम्भव है? ख़ास कर जैसी तीखी बातें बोलकर

वे आये हैं, ऐसा किसी हालत में नहीं हो सकता। पप्पू एक बाल्टी पानी और लोटा लेकर आये और आगुन्तकों के पाँव छूकर चले गये। फ़िर एक मौनी में चबेना और गुड़ रख गये। पानी पीने का आग्रह के साथ-साथ पहलवान कुशलक्षेम पूछने लगे।

आगुन्तकों में इतना इत्मीनान दिख रहा था कि लगा ये लोग चाय-पानी करके विदा होने ही वाले नहीं हैं। तब सोने के लिए चार अतिरिक्त चारपाइयों की ज़रुरत पड़ेगी। दो ही अतिरिक्त हैं। पड़ोस से माँगनी पड़ेंगी। फ़िर याद पड़ा कि रजाइयाँ भी मांगनी पड़ेगी। अगहन बीत रहा है। जाड़ा शुरु हो चुका है। दो रजाइयाँ उनके घर में ज्यादा थीं मेहमानें के लिए। लेकिन इस साल एक रजाई बड़ा बेटा लेकर चला गया। छोटा बेटा पिछले साल तक जाड़े में उनके साथ ही सोता था। एक ही रजाई में काम चल जाता था। इस साल दूसरी रजाई ले कर वह अलग सोने लगा है। वे कम्बल ओढ़ लेंगे। इस तरह एक रजाई खाली हो जायेगी। पप्पू की अम्मा खुद कथरी ओढ़ कर एक रजाई खाली कर देंगी। फ़िर भी दो रजाईयों की जरुरत पड़ेगी।

पहले वे खुद अन्दर गये. फ़िर आवाज देकर बेटे को भी बुला लिया। बोले-वैसे तो मोटरसाइकिल से हैं। चाय पानी करके आराम से आधे घण्टे में अपने-अपने घर पहुँच सकते हैं... अरे हाँ चाय ! चाय पिलानी होगी। आजकल दरवाज़े पर आये मेहमान को अगर चाय नहीं पिलायी तो समझो कोई सत्कार ही नहीं किया। चीनी की चाह। तीन कप तो अभी टूटने से बच गये हैं न! मेरी चाय गलास में दे सकते हो। जो-जो समान न हो दुकान से दौड़कर ले आओ और हाँ, जो कहने के लिये आया था वह तो कहा ही नहीं। चाय पीने के बाद अगर वे लोग जाने का नाम नहीं लेते तो जिस समय मैं इन्हें दिशा मैदान के लिये बाहर ले कर जाऊँ, तुम जाकर किसी को घर से दो चारपायी और दो रजाई माँग लाना और दालान में पाँच बिस्तर लगा देना।... कहकर पहलवान बाहर निकल गये।

पप्पू की अम्मा ने मेहमानों के रंग-ढंग से पहले ही अंगाजा लगा लिया था कि ये टलने वाले मेहमान नहीं है। लेकिन वे यह अन्दाज़ा नहीं लगा पा रही थीं कि यह सब आये क्यों हैं? उनके भाई अभी तक अन्दर नहीं आये। आते तो सबसे पहले यही पूछतीं। उन्होंने बेटी को गगरी का आटा अन्दाजने के लिए कहा और बेटे को पैसा देते हुए बोलीं- चीनी चायपत्ती के साथ एक किलो आलू भी ले आना। और हाँ जाने के पहले खेत से दो गोभी के फूल काटकर दे देना।

वे जानती हैं कि बेटा रजाई और चारपाई माँगने सिकरेटरी के घर ही जायेगा। सिकरेटरी तो बात-व्यवहार में ठीक हैं। पप्पू के बाबू से पटती है लेकिन उनकी घर वाली से पप्पू की माँ की नहीं पटती। इधर काफ़ी गुमान में रहती है। फ़ोन लग गया है। रोज़ अख़बार आता है। बेटे को दहेज़ में मोटर साइकिल मिल गयी है। घूस देकर बेटे को सिपाही में भर्ती करा दिया है और शादी करके घूस का दुगना वसूल लिया है तो गुमान में नहीं रहेंगी ! ब्याहने के लिए कोई बेटी है नहीं तो पैर ज़मीन पर कैसे पड़ेंगे।

एक दिन भरसार में बैठे-बैठे उन्हीं को सुनाकर हवा-बतास से कह रही थी कि इंजीनियर बन जाने में बड़ाई नहीं है। नौकरी भी मिलनी चाहिए। अखबार में छपा था कि दिल्ली बम्बई में हजारों बेरोजगार इंजीनियर पेट्रोल पम्पों पर हज़ार-डेढ़ हज़ार की नौकरी करके पेट पाल रहे हैं। उन्हें पता है, अभी बेटा खटिया रजाई माँगने जायेगा तो बिना बोली बोले नहीं रहेंगीअरे अब इंजीनियर का घर हो गाय पप्पू। अपनी अम्मा से कहो हज़ार दो हज़ार गद्दा-रजाई में भी खर्च कर दें।

उनका वश चले तो उस घर से कभी कोई चीज़ माँगने न जाएँ। लेकिन पड़ोस में कोई दूसरा ऐसा घर है ही नहीं जहाँ ज़रुरत पड़ने पर यह चीजें माँगी जा सकें। और अब तो बड़ा बेटा भी कभी-कभार

उन्हीं के घर फोन करके कहता है- ज़रा मेरी अम्मा को बुलवा दीजिए चाची। बात करनी है। झख मारकर जाना पड़ता है। और गयी तो बिना उनका भाखन सुने लौटना मुश्किल। खैर किसी का गरब-गुमान ज़्यादा दिन नहीं चलता। सोचते-सोचते पप्पू की अम्मा उदास हो गई।

बेटा चीनीपत्ती लो आया तो उन्होंने बेटी को जल्दी चाय तैयार करने के लिए कहा फ़िर रींधने के लिए भंडारे से चावल-दाल निकाल लायीं। बेटा चाय लेकर गया तो बेटी को अदहन चढ़ाने के लिए बोल कर

खुद भी धुएँ से लाल होती आँखों को मींजती बाहर निकल आयीं। आजकल उनकी आँखों में धुआँ लगनेपर बहुत जल्दी पानी आने लगता है। बेटी की विदाई के बाद रसोई कैसे कर पायेंगी! कई बार मन में आया कि पप्पू के बाबू से कहें कि कहीं ले चलकर किसी डाक्टर को दिखाए लेकिन इस डर से कि कहीं डाक्टर भारी खर्चा वाला कोई इलाज न बता दें, वे चुप रह जाती हैं।

बाहर जो अधेड़ सज्जन थे, उनका सिर चौथा आदमी दबा रहा था। जेब से छोटी सी शीशी निकाल कर हथेली पर तेल उड़ेलता था, फ़िर सिर और मूँछों में लगाता था।

इसके पहले कि राशन रींधा जाय, पप्पू की अम्मा खुद अने कानों से सुनकर आश्वस्त हो जाना चाहती थीं कि मेहमानों ने रात उन्हीं के घर बिताने का निर्णय ले लिया है।

जब सिर दबाने वाले आदमी ने खैनी ठोंककर बुजुर्ग मेहमान के आगे हथेली फैलायी और उन्होंने एक चुटकी खैनी उठाकर गाल में बायीं तरफ दबा ली तो दिशा मैदान जाना तय हो गया। पप्पू के बाबू ने बताया कि पास में बहुत बड़ा तलाब है, उसके भीटे की झाड़ियाँ निपटाने के लिए बेहतर है, इसलिए लोटे में पानी लेकर चलने की ज़रुरत नहीं है। उन्होंने यह प्रस्ताव इसलिए भी रखा क्योंकि घर में कुल तीन ही लोटे थे। पाँच लोगों को एक साथ जाने पर दो लोटे कम पड़ रहे थे। बुजुर्ग सज्जन को छोड़कर बाक़ी लोग बिना लोटे के चलने पर सहमत हुए। हाथ-पैर दबाने वाले ने उनके लिए लोटा उठा लिया और उनके पीछे-पीछे चला। बाक़ी लोग ख़ाली हाथ।

पप्पू की अम्मा के सामने स्पष्ट हो गया कि मेहमानों का ठहरना तय है। मेहमानों के लौटने से पहले पप्पू चरपाइयाँ और रजाइयाँ माँग लाया। दालान को बुहारकर बिस्तर लगा दिया। फ़िर दालान के कोने में अलाव जलाने लगा। पप्पू की अम्मा ने बाहर निकलकर अलाव के चारों तरफ़ बैठने के लिए पीढ़ा या पुआल का बीड़ा रखने के लिए कहा और यह भी कि लौटते ही अपने मामा को अन्दर भेज देना।

दिशा मैदान से लौटकर सब अलाव के गोल में बैठे तो पप्पू के मामा अन्दर आये! माँ बाप का हाल-चाल पूछने के तुरन्त बाद भाई से पप्पू की अम्मा ने मेहमानों के बारे में पूछा कहाँ से आ रहे हैं इतने सारे लोग? कहाँ जाना है? किस काम से निकले हो? तुम्हें तो बिना बुलाए मेरे पास तक आने की फ़ुर्सत नहीं मिली।

पप्पू के मामा बताने लगे वे जो साँवले रंग के मूँछ वाले अधेड़ सज्जन हैं, झुन्नू बाबू के साले साहब के दूर के रिश्ते में आते हैं। रेलवे में माल बाबू हैं। पैसे और रसूख वाले आदमी हैं। गाँव और शहर दोनों जगह

कोठियाँ है। वे लम्बे कद के चेचक के दाग़ वाले जो मेरी उम्र के हैं झुन्नू बाबू के साले हैं। वही झुन्नू बाबू जिनके घर जीजा जी पिछले दिनों भाँजी के लिए वर देखने गये थे। तीसरा आदमी माल बाबू का घरेलू नौकर है। साथ ले कर चलते हैं। सोते समय हाथ-पैर दबाता है। उँगलियाँ चटकाता है। नहाने के पहले देह में तेल मालिश करता है। नहाने के बाद गीली धोती पखारता है। पानी भी पीना होता है माल बाबू को

तो वही उड़ेल कर देता है। काफ़ी ठाठ-बाट से रहते हैं मालबाबू। पैसे वाली पार्टी है।

फ़िर आगे बताया गये थे अपनी इकलौती बेटी के लिए लड़का देखने। हमेशा बाहर ही बाहर रहे इसलिए जवार में ज्यादा लोगों को जानते नहीं। जान-पहचान के लिए झुन्नू बाबू के साले को बुलाया था। झुन्नू बाबू का साला मेरे साथ पढ़ा है। मेरे पास मोटर साइकिल थी तो सुविधा के लिए मुझे भी साथ ले लिया। गये तो हम लोग दो-तीन जगह लेकिन कोई रिश्ता मालबाबू को अपनी हैसियत अनुसार नहीं लगा। वापसी में मैंने कहा कि मेरे जीजाजी का घर रास्ते में पड़ता है। जरा हाल-चाल लेते चलें। जीजाजी के बारे में बताया तो बोले- हाँ हाँ पहलवान का नाम तो सुना हुआ है। पहलवानी में दूर-दूर तक नाम किए हैं। मैंने बताया कि बेटा भी काबिल निकला है। इंजीनियरी का इम्तिहान पास कर गया है। लखनऊ

आना होगा। में पढ़ता है तो और खुश हुए। बोले- चलिए मैं भी दर्शन करता चलूँ। फ़िर कहाँ बार-बार

सुनकर खुश हुई पप्पू की अम्मा। लेकिन झुन्नू बाबू के साले के बारे में जानकर थोड़ा रंज भी हुआ। पूछा- यह जो झुन्नू बाबू के साले हैं, तुम्हारे साथ पढ़ें हैं? इन्हीं के चलते तो उस दिन झुन्नू बाबू के घर बात नहीं बन पाई। इन्होंने ही तो लम्बी चौड़ी हाँक मारकर मामले को उलझा दिया था।

- अच्छा मुझे तो जीजाजी ने बताया नहीं। न जाने के पहले न आन के बाद।

तभी माल बाबू को नौकर आया और एक बार फ़िर पप्पू की अम्मा का पैर छूकर हाथ जोड़ कर बोला मेरे लिए भी कोई काम बताइये मालकिन। और बेटी को लहसुन छिलता देखकर लहसुन की टोकरी अपनी तरफ खींच कर बैठ गया लाइए यह काम तो मैं कर ही दूँगा।

- अरे तुम रहने दो भइया। हम सब कर लेगें। पप्पू की अम्मा खुश हो कर बोलीं।

पप्पू के मामा बाहर निकल गये। बेटी चूल्हे की मन्द पड़ी रही आग तेज़ करने चली गयी। लौटी तो उसकी ओर प्रशंसा भरी नज़रों से देखते हुए नौकर बोला- रसोई का सारा काम अकेले निपटा रही हैं बिट्टी। वाह वाह। जैसा रुप है वैसी ही सुघड़ायी। सोचती होगी कितने दिन रहें माँ को तिनका भी न छूना पड़े। वाह! ऐसी कुलवन्ती बेटियाँ ज्यादा दिन थोड़े रहने पाती हैं मायके में। किसी पारखी की नजर में पड़ने की देर है, ले जाएगा कोई रतन का पारखी ब्याह कर।

माँ बेटी दोनों प्रसन्न हुई। माँ सोचने लगी कि कहीं झुन्नू बाबू ने ही तो नहीं भेजा है इन लोगों को कि जाकर चुपचाप लड़की का रुप-रंग, गुण-सहूर देख आओ। हो सकता है उस दिन बेमुरौवती से बोलकर बाद में पछताए हों।

-लहसुन चटनी में डालेंगी क्या बिटिया? अभी और छीलना होगा? किस चीज की चटनी बना रही हैं? हमारे मालिक की बेटी भी इतनी तरह की और इतनी स्वादिष्ट चटनी बनाती है कि

हाथ चाटते रह जाओ। बाप को ऐसा चटनीखोर बना दिया कि खाने में मालिक को चटनी न मिले तो समझो कुछ मिला ही नहीं। जितना रुप उतना ही गुण। चाहे रोटी पानी करा लीजिए चाहे सिलाई-कढ़ाई। अपनी माँ की तो ऐसी आदत खराब कर दी है कि बिना सिर में चम्पी कराये उन्हें नीन्द ही नहीं आती।

-इन्हीं की बेटी हैं? पप्पू की माँ ने उसका बोलना रोकने के लिये पूछा।

-हाँ मालकिन। देखिए तो देखती रह जाइये। हँसतीं हैं तो लगता है फूल झड़ते हैं। सफेद बत्तीसी खिल जाती है। जिस घर जायेगी उजाला कर देगी। इसके बावजूद घमण्ड तो छू तक नहीं गया है। जैसी अपनी ये बिट्टी है। देखकर आँख जुड़ाती है।

इतनी बड़ाई! अपने मालिक की बेटी के साथ-साथ उनकी बेटी की भी। उनके बेलने के लिए कुछ छोड़ ही नहीं रहा है।

सब्जी के लिए मसाला सिल पर रखा बेटी ने तो वह उठकर सिल के सामने बैठ गया-लाइये, मैं पीस देता हूँ।

अरे नहीं भइया तुम चलो बाहर। मर्दों में बैठो। यहाँ हम माँ-बेटी आराम से सब निपटा लेंगी।

बैठकर खाने के लिए थोड़े आया हूँ मालिकन! सिल पर लोढ़ा रगड़ते हुए वह हँसने लगा-बड़े वाले भइया कहाँ हैं? दिखाई नहीं दिए।

स्कूल में हैं, बाहर। छुट्टी में आते हैं।

- मास्टर साहेब बहुत तारीफ कर रहे थे हमारे मालिक से। रास्ते भर भइया की बात ही हो रही थी। जितने शरीर से लम्बे-चौड़े उतने ही बुद्धी के भी तेज़। इंजीनियरी वाली पढ़ायी पढ़ रहे हैं कि डाक्टरी वाली?

- इंजीनियरी वाली। माँ ने गर्व से बताया और पीढ़ा आगे खिसकाकर कलछुल से दाल का हाल लेने लगी।

- बहुत काम की पढ़ायी है यह तो। एक दम नगद नारायण वाली पढ़ायी। भाग्य के बहुत तेज़ हैं भइया, समझ लीजिए। हमारे गाँव में एक इंजीनियर हुए हैं। एक बीघे में तो पक्का मकान ही बना है। गाँव में ट्यूबवेल, ट्रैक्टर। सैकड़ों बीघे तो खेत ही खरीद डाले। शहर में भी बहुत बड़ी कोठी, मोटर गाड़ी। कितना पैसा कमाते हैं कोई थाह ही नहीं।

-वह तो जब होगा तब होगा भइया, लेकिन अभी जितनी नगद नारायण फ़ीस देनी पड़ रही है उसी से तिल्ला-तौबा मता हुआ है।

कहने को तो एक ढटके में कह गयी लेकिन तुरन्त ही उन्हें लगा कि बाहरी आदमी के सामने यह बात मुँह से नहीं निकालनी चाहिए थी। उन्होंने तुरन्त बात बदलने के लिए पूछ लिया किस चीज की चटनी पसन्द है तुम्हारे मालिक को?

किसी भी चीज की। टमाटर, आँवला, करौंदा सब तो रखा है आपके भण्डारे में।

-दरअसल चटनी के बारे में उन्होंने सोचा ही नहीं था। अच्छा हुआ इसने बता दिया। उनका मन हुआ पूछें कि खाने में क्या-क्या पसन्द है तुम्हारे मालिक को। लेकिन यह सोच कर पीछे हट गई कि क्या पता किसी ऐसी चीज का नाम बता दे जिसका इन्तज़ाम ही न हो पाये।

पकते चावल के साथ फैलती महक को लम्बी साँस लेकर भीतर खींचा नौकर ने, फ़िर बोला- बहुत महकौवा चावल रींधा है। क्या नाम है इस चावल का? अपने खेत का पैदा है? गजब! मोहन भोग? सचमुच मोहन भोग ही है। अरहर की तड़का लगी दाल के साथ इसका स्वाद? हुकुम हो तो कुछ कहूँ मालकिन? इसके साथ अगर आलू-बैगन का चोखा भी बन जाय। आलू है ही। बैगन खेत में देख आया हूँ। आलू गोभी की सब्जी तो है ही, लेकिन इतना अच्छा चोखा बनाऊँगा अदरक, लहसुन, प्याज, खटाई का मसाला और कडुआ तेल डालकर कि हमें उम्र भर याद करियेगा।

हँसने लगी मालकिन बनाओ भइया। हम क्यों मना करेंगे! सबकुछ तो है घर में।

-हम बैंगन लेकर आते हैं। कहकर वह बाहर निकल गया। उसके जाने के बाद बड़ी देर तक माँ-बेटी चूल्हे के पास बैठकर हँसती रहीं। अचानक पप्पू की अम्मा चुप हो गयीं। दो तीन बार लम्बी-लम्बी साँस खींची। बेटी ने पूछा- क्या हुआ माँ?

-गजब का तेज़ आदमी है मुआ। गजब की नाक है इसकी। खुफियागीरी करने घुसा है अन्दर? ठीक से बैठो। तुम्हारे पैर टखने तक उघाड़ थे। दाँत चियार कर मत हँसना। किस तरह दाँत की तारीफ कर रहा था। दाँत की बात उसके दिमाग में आयी कैसे? कीड़े से काले पड़े दाँत पर तो नजर नहीं पड़ गयी?

बेटी ने हाथ पैर सिकोड़ लिए। मुँह बन्द कर लिया।

अँधेरे में टटोलकर खेत से बैंगन तोड़ने के बाद वापस आते हुए लघुशंका के लिए निकले मालिक से रास्ते में भेंट हुई तो उसने कहा- एक ही मतलब की बात निकल पायी मालिक। बेटे की पढ़ाई की फ़ीस भरना इन लोगों को भारी पड़ रहा है। बाकी तो सब चकाचक है।

खाना खाने के बाद सब लोग रजाई में पैर डालकर हुक्का गुड़गुड़ाने लगे तो पप्पू के मामा ने बात छेड़ी जीजाजी! मैं बता रहा था कि लाल बाबू अपनी बेटी का रिश्ता खोजने के लिए निकले हैं. दो-एक जगह

बातचीत की शुरुआत भी हुई है लेकिन जब से यहाँ आए हैं, सबसे मेल मुलाकात हुई है तब से आपका घर परिवार इनकी नज़रों में चढ़ गया है। ये जोगी के साथ अपनी बेटी के रिश्ते का प्रस्ताव रख रहे हैं।

- जोगी के साथ? पहलवान चौंके।

-हाँ इनकी एक ही बेटी है। रुपवान, गुणवान। मैंने तो खुद अपनी आँखों से देखा है। जोगी भइया के साथ बहुत अच्छी जोड़ी रहेगी।

-सो तो ठीक है मास्टर साहेब, लेकिन जोगी पहले चार साल पढ़े, पास हो। फ़िर कहीं रोजी से लगे, तब न शादी की बात सोची जायेगी।

38

-जीजी। जोगी कोई लाला, बनिया थोड़े है कि कमायेंगे नहीं तो खाने का ठिकाना नहीं रहेगा।। भगवान का दिया इतना सीर सायर है...

-क्या बावलों जैसी बात करते हो राजपत! इंजीनियरी की पढ़ाई को मामूली समझे हो। बच्चे बारह-बारह घण्टे आँख पोड़ते हैं तब भी बैक आ जाती है। माने किसी न किसी पर्चे में लटक जाते हैं। फ़िर इम्तिहान देना पड़ता है। अपनी पढ़ाई सभालेंगे कि जोरु की दिलजोई करने के लिए भाग-भागकर घर आएगें। शादी की अभी कौन सी जल्दी पड़ी है। जब समय आयेगा तब शादी भी हो जाएगी।

-शादी तो एक रस्म है। लालबाबू ने बात का सूत्र अपने हाथ में ले लिया। पूरी हो जाती है तो लड़की के बाप को चैन आ जाता है, नहीं तो सोते-जागते, उठते-बैठते बेचैनी रहती है। बाकी, गौना तो तीन या पाँच साल बाद ही होता है, जैसी ज़रुरत हो। तब तक बबुआ पढ़ाई भी पूरी कर लेगें और कहीं नौकरी-चाकरी से भी लग जायेंगे। हमारे यहाँ रेलवे में ही जगह निकलती रहती है। साहब सूबा ने इतनी जान-पहचान बना रखी है, किस दिन काम आयेगी? कहीं न कहीं हिल्ले से लगाया जायेगा। अभी अकेले आप ही उनके बाप हैं, तब हम भी हो जायेंगे। नौकरी-चाकरी पाने के लिए भी आजकल सोर्स सिफारिश लेन-देन ज़रुरी हो गया है।

पहलवान समझ गये कि ये लोग पहले ही तय करके इसी मतलब से आये हैं। पप्पू के मामा का दबाव बनाने के लिए लाये हैं। पप्पू के मामा को भी देखिए, रिश्तेदार हमारे है और वकील उनके बनकर आये हैं। पहले कभी ज़िक्र तक नहीं किया।

उन्होंने बात को टालने के लिए कहा- हमारे घर खुद सयानी बेटी है। सयानी बेटी के बाप की बेचैनी हम भी झेल रहे हैं। आप हमारे दरवाजे तक आये हैं तो हम घर में सलाह-मशविरा करेंगे, लेकिन हर चीज का एक समय होता है।... फ़िर साले से बोले मुझसे बात करने के पहले तुम्हें अपनी बहन से बात करनी चाहिए राजपत।

-आप अपनी रजामन्दी दे दें। दीदी को मैं मना लूँगा।

रजामन्दी कोई अलग-अलग थोड़े होगी। जो भी तय होगा उसमें दोनों की, बल्कि तीनों की रजामन्दी होगी। जिसकी शादी की बात चला रहे हो उससे भी तो पूछोगे?

हुक्के की तम्बाकू पूरी तरह राख हो गयी थी। सब चुप हो गये।

सबेरे चायपानी से लेकर खाना तैयार होने तक पप्पू के मामा अपनी बहन को समझाते रहे तिलक में नगद पचास हज़ार और एक मोटर साइकिल तो लाल बाबू खुद अपने मुँह से देने को राजी हैं। जोर दिया जायेगा तो एक लाख दे सकते हैं। मेरे मन में एक बात आ रही है। इधर से नगदी और मोटरसाइकिल लीजिए और उधर झुन्नू बाबू को थमा कर बिटिया को निपटा दीजिए। गौना दो-चार साल बाद जब मर्जी तब लाइए। धन और पहुँच दोनों में हम लोगों से बहुत बढ़-चढ़ कर हैं लाल बाबू। ऐसे समर्थ रिश्तेदार रहते हैं तो वक़्त ज़रुरत काम आते हैं। दुनिया के चलन में यह सब भी देखा जाता है। ऐसा चांस किस्मत से मिलता है। दामाद बना लिए तो नौकरी का जुगाड़ ये खुद लगा देंगे। आप अकेले में जीजाजी को समझाइएगा। झुन्नू बाबू के साले को बीच में डालकर मैं नौकरी दिलाने वाली शर्त भी अभी से तय कर लूँगा।

39

ऐसा लासा फेंका उनके भाई ने की मालकिन सोच में पड़ गयीं। बिना खेती बारी बेचे बेटी के हाथ पीले हो सकते हैं। एक लाख मिल जाए तो उसी में ब्याह का बाक़ी खर्च भी निबट जायेगा। कुछ जोगी के फ़ीस के लिए भी बच सकता है।

उन्होंने अपने भाई से कहा- तुम जाकर जोगी का मन-मुँह लेने की कोशिश करो। मुझे नहीं लगता कि वे तैयार हो जायेंगे। तुम उन्हें तैयार कर लो तो हम लोगों को क्या दिक्कत !

मेहमानों के जाने के बाद पप्पू की अम्मा को पछतावा होने लगा कि जब लाल बाबू के टहलुए ने उनके पैर छुए तो उसके हाथ पर रुपये-दो रुपये रखने चाहिए थे। पद बनता था। पर भूल गयीं। बेचारा क्या सोचते हुए जा रहा होगा।

मेहमानों के जाने के बाद पप्पू की अम्मा और पहलवान ने एक दूसरे को देखा। दोनों ही के पास दूसरे से कहने के लिए बहुत कुछ था लेकिन पहले शुरु कौन करे। पप्पू स्कूल चले गये थे। बेटी खेलावन के घर रजाई वापस करने गयी थी। मालकिन बिना कहे हुक्का भर लाई। पहलवान हुक्का पुड़काते हुए नगरे पर बैठे तो मालकिन भी भी एक मचिया खींच कर सामने बैठ गयी। ज़रुरी बातचीत करने के लिए जैसा इत्मीनान और एकान्त चाहिए वह हासिल हुआ तो मालकिन ने ही शुरुआत की ये लोग और कहीं नहीं गये थे। सीधे अपने घर ही आये थे।

- ये दोनों कहाँ से इकट्ठे हो गये? झुन्नू बाबू के साले और तुम्हारे भाई? अभी तो जोगी बीस के भी पूरे नहीं हुए हैं।

-बीस कुछ कम थोड़े होता है। गौना आया तब तो आप भी बीस के नहीं थे।

- तब की बात दूसरी थी भाई! फ़िर भी देखो तुम्हारे आते ही मेरी पढ़ाई छूटी थी कि नहीं?

- तो मेरी वजह से छूटी?

-अरे, इसमें नाराज होने की क्या बात है? सोचने की बात है। तुम्हीं तो रात में हाथ से किताब छीन कर ढिबरी बुझा देती थी।

- अच्छा! मेरा मुँह मत खुलवाओ। पढ़ाई में मन लगता था आपका?

- तुम्हारी वजह से ही तो नहीं लगता था।

-छोड़िए। कह रहे थे राजपत कि जोगी को वे तैयार कर लेगें। जो पैसा और मोटर साइकिल लाल बाबू से मिलेगी, वही झुन्नू बाबू को देकर बेटी ब्याह सकते हैं। खेत बिकने ले बच जायेगा।

- पैसा तो जब भी बेटवा ब्याहोगी तब भी मिलेगा। बल्कि ज्यादा ही मिलेगा।

- लेकिन तब तक बेटी को तो घर में बैठाकर नहीं रखा जा सकता। और बैठा कर रखा भी जाए तो भी क्या पता झुन्नू बाबू के लड़के जैसा कमासुत लड़का फ़िर मिल पाये। अच्छा एक बात बताओ। झुन्नू

40

बाबू का बेटा किरानी है तब तो वे एक लाख की माँग कर रहे हैं, अपने 'जोगी' तो इंजीनियर हैं, तब लाल बाबू सिर्फ पचास हज़ार क्यों देंगे?

-तुम्हारा बेटा इंजीनियर है नहीं, होगा। तीन चार साल बाद और दो-ढाई लाख फ़ीस खोराकी भरने के बाद। झुन्नू बाबू का बेटा तो हर महीने चार-पाँच हजार पगार उठा रहा है। इतनी ही ऊपरी कमाई कर रहा है।

- ऊपरी कमाई कैसे?

- अरे कचहरी में किसी मुवक्किल की नकल निकलवा दी, अर्जी लिख दी। फाईल इधर से उधर करा दी। हम क्या उतनी अन्दर की बात जानते हैं। इतना जानते हैं कि सबके जीने खाने का रास्ता बना रहता है सरकारी दफ्तरों में।

- यह बात है कि लाल बाबू वाला रिश्ता मान लेने पर खेत भी नहीं बेचना पड़ता और बेटी भी खाते-पीते घर में पहुँच जाती मेरा मन कहता है कि पप्पू के मामा से कहा जाये तो वे लाल बाबू को जोगी की तीन-साल की फ़ीस भरने के लिए भी तैयार कर लेंगे।

- यानि तुम भी बेटे की ऊँची से ऊँची कीमत लगवाने का मनसूबा बाँध रही हो? पहलवान व्यंग्य से मुस्कराये।

चलेगा। पप्पू की अम्मा चिढ़ गयीं आखिर कोई रास्ता तो निकालोगे कि हरिश्चन्द्र बनने से काम

- तुम्हारे सुझाये रास्ते से तो हम सबको राहत मिलेगी लेकिन पहले आपका बेटा तो माने।

-बेटा क्यों नहीं मानेगा? वह नहीं देख रहा है कि कैसे हमलोग पेट काट कर, शौक श्रृंगार त्याग कर उसका खर्चा पूरा कर रहे हैं।

-क्या बात है भउजी, भइया को अकेली पाकर दिन-दहाड़े रगेद रही हो।... खेलावन की आवाज़ आयी। वे कब आकर सामने खड़े हो गये, पता ही नहीं चला।

-आओ आओ खेलावन भाई। हम लोग फ़िर एक साँसत में पड़ गये हैं।

खेलावन अन्दर आकर दूसरे नगरे पर बैठते हुए बोले- विद्या बता रही थी कि कल थोक के भाव मेहमान आ गये थे।

-वही तो। पहलवान मेहमानों के आगमन का उद्देश्य बताने लगे। फ़िर बोले-क्या करें? घर की हालत आप जानते ही हैं।

- लड़की क्या करती है?

-इसी साल इण्टर किया है।

-जोगी की क्या राय है?

- अभी उससे कहाँ बात हुई? खुद ही सोच-विचार कर रहे हैं।

-देखिए, पतोहू से अपनी भी सेवा पाती करानी हो, उससे सास का पैर दबवाना हो तब तो ऐसी ही बहू ठीक है लेकिन अगर जोगी का सही जोड़ लगाना हो, उनका हित देखना हो तब तो ठीक नहीं है।

-इस बहू से बेटे को सुख नहीं मिलेगा भइया? पप्पू की अम्मा ने पूछा। इस बीच खेलावन बहू भी उन्हें खोजते हुए अन्दर आ गयीं।

-उतना ही मिलेगा जितना आप लोगों से हम लोगों को मिल रहा है। चूल्हा-चौका सम्भालने, हाथ पैर दबाने, लरिका-फरिका सौचाने तक का। और पढ़ाई-लिखाई पूरी होने, नौकरी-चाकरी में आने के बाद

जोगी की तरह ही तकनीकी पढ़ाई वाली कोई लड़की बहू बनेगी तो बेटे के बराबर ही हर महीने मोटी पगार लायेगी। आज के जमाने में तो बेटे के लिए ऐसी ही बहू ठीक मानी जाती है।

-तो आप लोग भी हम लोग को घर से निकाल कर तकनीकी बहू लाओ भइया। पप्पू की अम्मा हँसते हुए बोली। खेलावन बहू भी हँसने लगी।

-देखिए, पिता को किस बेटे से सुख मिलता है? अपने गाँव में पी.सी. एस., जज, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, लेक्चरार मिलाकर करीब दर्जन भर है। कितनी बार साल भर में गाँव आते हैं? मुश्किल से एक बार। कितनों के माँ-बाप उनके साथ हैं? एक के भी नहीं। फ़िर लेखपाल ग्राम, सेवक, पंचायत सेक्रेटरी, प्राइमरी और मिडिल स्कूल के अध्यापक, लाइनमैन, पोस्टमैन, पेट्रोल मैन, क्लर्क और एल.आई.सी सहारा के एजेंटों की गिनती करिए। यह भी दर्जन भर से ज्यादा है और दिन भर काम करके शाम को गाँव आ जाते हैं। उनकी बहुएँ घर का काम सम्भालती हैं। माँ-बाप की देखभाल करती हैं। पक्का है कि जोगी भी पढ़-लिख लेने के बाद आप लोगों से दूर चले जाएंगे। फ़िर भी क्या यह सोच कर आप एक बार भी उन्हें इंजीनियरिंग पढ़ाने से पिछड़ने की सोचें? हर पिता का अरमान रहता है कि उसका बेटा दूर-दूर तक जाकर नाम करे। सिर्फ अरथी में कन्धा लगाने के लिए गाँव में न पड़ा रहे। तब बहू के बारे में इतने दकियानूसी ढंग से क्यों सोचा जाये? हम तो कहते हैं लड़का नौकरी-चाकरी करने इटली, जर्मनी, आस्ट्रेलिया जाये और वहाँ की सफेद चमड़ी वाली बहूलाये। आगे की नस्ले सुधरें। लेकिन अभी करेंगे। खेतीबाड़ी बेचने से बचायेंगे तब तेलाल बाबू की इण्टर पास बेटी से ही सन्तोष करना पड़ेगा। जोगी भी दो-चार दिन हाथ पैर पटकेंगे फ़िर चुप हो जायेंगे।

-इण्टर पास बहू में क्या खराबी है?... खेलावन बहू भी बातचीत में शामिल हो गई। हमारी बहू भी तो इण्टर पास है। क्या कमी है? लड़के को कुँवारा तो रखना नहीं है। शादी के तीन या पाँच साल बाद गौना आएगा। इस बीच जितना चाहो बहू को और पढ़ा लो। बेटे की कमाई से पूरा नहीं पड़ेगा तो बहू की कमाई से पड़ जायेगा? वही निहाद है कि माँ की चूँची से पेट नहीं भरा तो बाप के 'फलान चीन्ह' से भरेगा? हाँ नहीं तो! मैं तो कहूंगी कि अगर लड़की गुणवती है तो ब्याह मनाने में कोई खराबी नहीं है। बेटे का ब्याह मनाने से बेटी को भी अच्छा घर-वर मिल रहा है। खेती बारी बिकने से बच रही है।

इससे अच्छा क्या होगा?

खेलावन जी उठते हुए मुस्कराकर बोले-चलिए। जज साहब ने फैसला सुना दिया। फ़िर मुड़कर बोले-जिस काम आये थे वह तो बताया ही नहीं. पाँड़े बाबा की बरसी अगले इतवार को है। आसपास के दस बारह गाँव के लोगो का जुटान होगा। बाहर से भी विद्वान-विचारक आ रहे हैं। इस लुटन्त जुग में किसान कैसे जिन्दा रहे इसका रास्ता खोजना है। कुछ बोलना चाहे. दुख दर्द सुनाना चाहें तो आप भी अभी से तैयारी कर लें। चलना जरुर है।

-हम क्या बोलेंगे बड़े-बड़े विद्वानों के बीच में! लेकिन चलेंगे जरुर।

पाँड़े बाबा की याद आने से पहले पहलवान के मन लटक गया। खेलावन पति-पत्नी के जाने के बाद वे दलान में आकर चारपायी पर लेट गये।

थोड़ी देर में पप्पू की अम्मा भी आकर पैंताने बैठ गयीं। कुछ देर तक पहलवान को आँख मूँदे पड़े देखती रहीं फ़िर बोलीं हमें तो लगता है कि खेलावन को यह देखकर डाह हो रही है कि कैसे बिना खेती-बारी बेचे इनकी बेटी इतने अच्छे घर में पहुँच रही है। इसलिए उल्टी राय दे रहे हैं। हम कहते हैं किसी से पूछने की क्या ज़रुरत है? जो हमें सुतार लगेगा, करेंगे।

पहलवान कुछ बोले नहीं। पप्पू की अम्मा को लगा कि शायद उन्होंने सुना भी नहीं। किस सोच में डूबे हुए हैं। वे धीरे से उठकर बाहर चली गयीं।

ठीक सामने वाले गाँव में घर है पाँड़े बाबा का। उत्तरी निकास पर उनका साढ़े तीन एकड़ का चक था। खाते-पीते किसान माने जाते थे। पास-पड़ोस में सम्मानित थे। पचपन साठ की उम्र। सफेद मूंछें, चौड़ा ललाट, हँसमुख चेहरा। एकमात्र बेटे को दलाल ने ट्रैक्टर का लोन लेने के लिए ललकारा। जमीनी समझ के आदमी थे पाँड़े जी। फूंक-फूंककर क़दम रखने वाले। उनका मानना था कि खेती-किसानी से इतनी कमाई नहीं की जा सकती है कि ट्रैक्टर के लोन की क़िस्त अदा की जा सके। लेकिन दलालों ने समझा दिया कि जवान बेरोजगार पढ़ा-लिखा बेटा है। खुद चलायेगा तो काम की कमी नहीं रहेगी। एक बार बाज़ार में मिलने पर बैंक मैंनेजर ने भी उत्साहित किया। बस फँस गए। डेढ़-दो महीना कार्तिक और इतना ही आषाढ़। इसके अलावा ट्रैक्टर के लिए खेती में कौन सा काम धरा है! तो सोचा कि क्रिस्त निकालने के लिए भट्ठे पर ईंट ढोने के काम में लगा दिया जाए। उसके लिए ट्राली की ज़रुरत थी। तो दूसरे बैंक से पैंतिस हज़ार ट्राली के लिए लोन लिया। दो साल तक, जब तक ट्रैक्टर की मरम्मत में खर्च नहीं आ रहा था, क्रिस्त की रकम निकलती रही। बाद में नहीं हो सका। एक बार ट्राली पलट

गयी। पन्द्रह बीस दिन तक बेटा बिमार पड़ गया। कई क़िस्तें रुक गयीं। ब्याज सुरसा के मुँह की तरह बढ़ने लगा। ज़मीन बन्धक थी। अचानक बैंक वालों ने पीछे की तारीख़ में काग़जी खानापूरी करके ज़मीन नीलामी पर चढ़ा दी। सारी ज़मीन असल की एक चौथाई कीमत में नीलाम हो गयी। अब क्या होगा! न कोई दूसरा रोज़ी-रोजगार न कोई धंधा। छटपटाकर रह गये। सदमा इतना तेज़ था कि अर्द्धविक्षिप्त हो गये। जो भी मिलता उसी को पकड़ कर रोने लगते। पूछते अब मेरे बच्चों को रोटी कैसे मिलेगी? फ़िर अकेले बड़बड़ाने लगे। आँखों में सूनापन भर गया और एक दिन...

फाँसी पर लटके पाँड़े बाबा का दृश्य पहलवान की आँखों में कौंध गया। उनके चक के पूर्वी

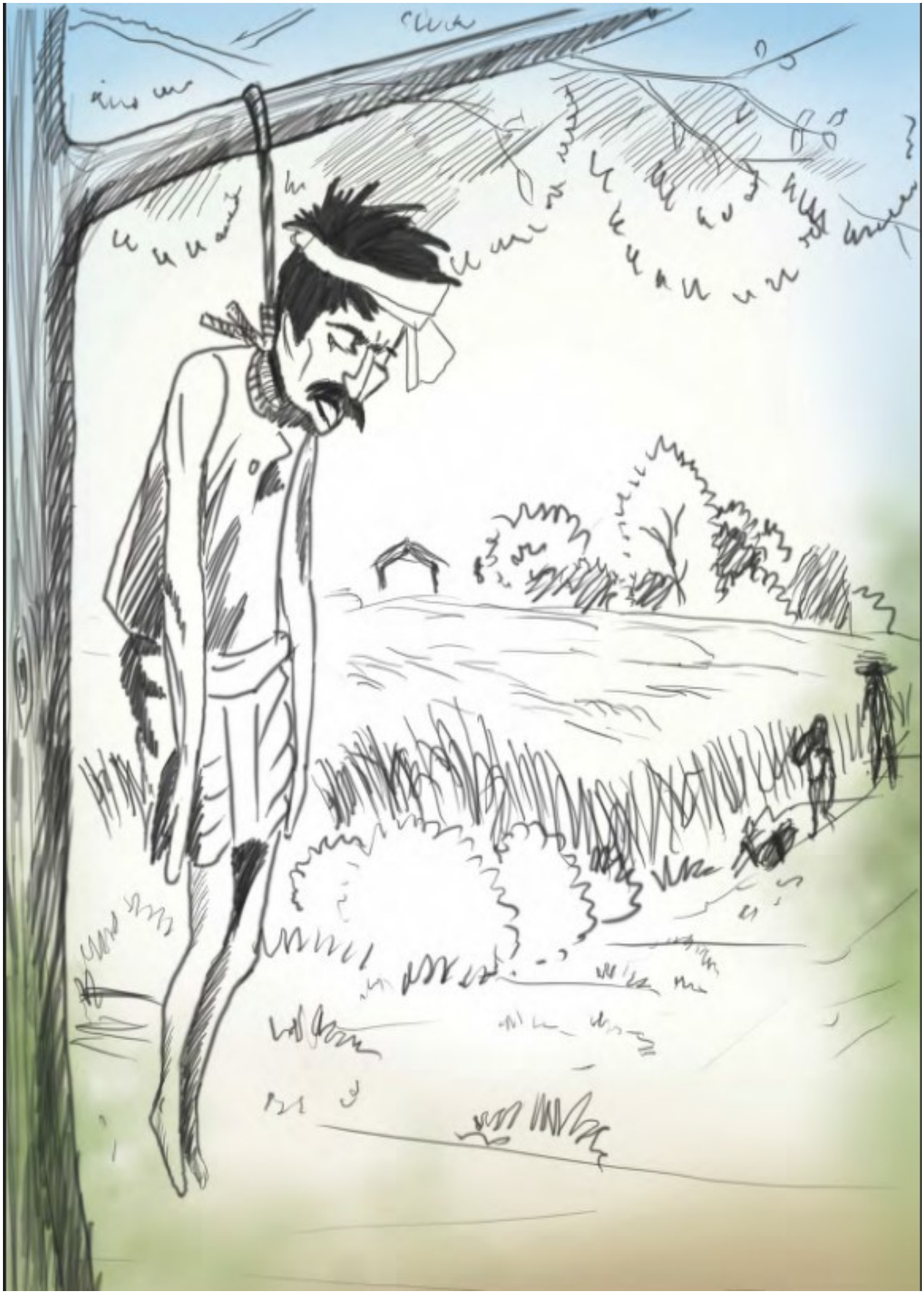

सिरे पर पीपल का एक पुराना पेड़ है। सारे गाँव के मृतकों के घण्ट इसी में बांधे जाते हैं। अलग-अलग डालों में लम्बी रस्सी से लटकते पानी से भरे घड़े। इन्हीं घड़ों के बीच भोर में किसी समय आकर पाँड़े बाबा भी एक डाल में फन्दा डालकर लटक गये। शोर सुनकर वे भी दौड़े गये थे। कई गाँव के लोग इकट्ठा हो गये थे। गर्दन खिंच गयी थी। सिर एक तरफ़ को लटक गया था। जीभ थोड़ी सी बाहर निकल आयी थी। होंठ के निचले कोने से चूती लार का पतला तार नीचे तक आकर टूट रहा था।

सारा पवस्त स्तब्ध था। सिर्फ़ पाँड़े जी की फाँसी से ही नहीं। यह सोच कर भी कि ट्रैक्टर-ट्यूबवेल का ऋण लेने वाले आधे किसानों की किस्तें रुकी हुई थीं। किसी दिन उनकी निलामी भी हो सकती है। पी.सी.एस ने पता नहीं कहाँ-कहाँ चिट्ठियाँ लिखीं। रिपोर्ट भेजी, पता नहीं कहाँ-कहाँ के लोगो ने पाँड़े बाबा के गाँव का दौरा किया। महीनों बड़ा हड़कम्प रहा। अख़बारों में और टी. वी चैनलों पर पाँड़े बाबा की आत्महत्या का मामला छाया रहा। माँग उठी कि किसानों की ऋण नीति की पड़ताल होनी चाहिए। जो ऋण किसानों की भलाई के लिए दिया जाता है वही उसके गले का फन्दा कैसे बन जाता है? जब खेती की आमदनी से इतनी भारी रकम की वापसी हे ही नहीं सकती तो उसे किसानों को अपने गले में बाँधने के लिए उत्साहित क्यों किया जाता है?

लेकिन वक़्त बीतने के साथ धीरे-धीरे सारा शोर थम गया। अब उनकी बरखी पर फ़िर जुटान

हो

पर रहा है। पिर सोच विचार होगा। क्या पता जिन्दा बचे रहने की कोई सूरत निकल ही आये।

पहलवान पति-पत्नी में तकरार हो रही है।

चौवालिस सौ रुपये दाम चढ़ाकर चारखाने की लुंगी लपेटे नीम के नीचे चबूतरे पर बैठा बीड़ी फूंकता बकरीदी पति-पत्नी के एकमत होने का इन्तज़ार कर रहा है।

पहलवान का कहना है सबकुछ जानते-बूझते कटने के लिए कसाई के हाथ नहीं बेचेंगे। कोई किसान जोतने के लिए ले जाना चाहे तो पाँच सौ कम पर भी दे सकते हैं।

जोगी की अम्मा का कहना हैछः महीने से तो इन्तज़ार कर रहे हैं, कोई आया? एक आया भी था तो पैंतीस सी के आगे बढ़ा नहीं। दुबारा वह भी झाँकने नहीं आया।

बकरीदी धुआँ छोड़ते हुए सामने बँधे बछड़े को तौल रहा है बड़ी-बड़ी चमकती काली आँखे। नुकीली गठीली काली मोटी जड़ वाली बित्ते-बित्ते भर की सींग। पुट्ठों पर चर्बी की मोटी परत। गले के नीचे लहराती लिलरी। मोटे घने बालों वाली काली लम्बी पूँछ। कन्धे पर आकार ग्रहण करती डील और नीचे लटकता वृहद गुलाबी अण्कोष। क्या धजा है! पूरे पँच हज़ार गिनने पड़े तब भी घाटे का सौदा नहीं है। बकरीदी आज तीसरी बार आया है इस सौदे के लिए।

जोगी की अम्मा पहलवान को समझा रही हैं आखिर आदमी गाय गोरु पालता क्यों है? मौके पर बेच-बिकिन कर गरज सकारने के लिए ही तो। गरज बावली होती है। बेटे को किराया-खोराकी भेजे बिना काम चलता तो न बेचते। खाद खरीदना तो और भी ज़रुरी है। बुवाई के समय नहीं डाल सके तो पहली सिंचाई पर तो पड़ जाय।

44

बीड़ी खत्म करके बकरीदी ने सिर उठाया और बड़ी हलीमी से बोला अच्छा चाचा, कोई किसान आपसे पाँच सौ सस्ते में खरीद ले और अगले दिन मेरे हाथ पाँच सी का नफ़ा लेकर बेच देतो आप क्य कर लेगें?

बकरीदी से ज़्यादा जोगी की अम्मा पहलवान के उत्तर का इन्तज़ार करने लगीं। लेकिन पहलवान बिना कोई उत्तर दिये कन्धे पर धोती रखकर नहाने चल पड़े।

उन्हें नहाने जाता देख जोगी की अम्मा भी खाने-पीने का इन्तज़ाम देखने घर के अन्दर चली गई।

बकरीदी ने दूसरी बीड़ी सुलगा ली।

दो घण्टे बाद जब पहलवान खाना खा कर मँड़हें में लेट गए और जोगी की अम्मा हुक्का भर कर उन्हें देने गई तो बकरीदी फ़िर आकर मँड़हें के द्वार पर खड़ा हुआ।

-क्या हुक्म है चाचा? आख़िरी बार बोल दीजिए।

पहलवान मैदान में आने से डर रहे थे क्योंकि पहलवानिन विपक्ष में थीं। दोनों के तर्कों का पहलवान के पास कोई जवाब न था।

-चाचा, सारे बछड़े कटने के लिए ही नहीं जाते। लोग बैलगाड़ी में जोतने के लिए भी ले जाते हैं। हल में जोतने के लिए भी। कटते तो वे हैं जो किसी काम के नहीं होते। और अगर उसकी किस्मत में कटना ही बदा होगा तो क्या हम रोक लेंगे?

कुछ देर तक मौन। फ़िर बकरीदी बोला आख़िरी बोली लगा रहा हूँ पूरे पैंतालिस सौ। इससे ज्यादा कोई नहीं दे सकता। भले ही छः महीना और बाँध कर खिलाइए। पहलवान कुछ बोले नहीं। हुक्का जोगी की अम्मा के पकड़ाकर करवट बदल ली।

बकरीदी ने आँखों-आँखों मनें जोगी की अम्मा से कुछ पूछा। कुछ समझा। फ़िर टेंट से रुपये की थैली निकाल कर गिनने लगा सर्र सर्र सर।

लीजिए गिन लीजिए।

लेकिन पहलवान ने आँखें नहीं खोली तो उसने जोगी की अम्मा की ओर हाथ बढ़ाया। जोगी की अम्मा ने इशारे से समझाया कि मेरा पकड़ना ठीक नहीं है। इन्हीं को पकड़ाओ।

बकरीदी ने चारपायी पर पहलवान की कमर के पास नोटों को रखते हुए पूरे पैंतालीस रखा है चाचा। गिन लीजिए और हुकुम कीजिए।

थोड़ी देर तक पहलवान के बोलने का इन्तज़ार करने के बाद वह बाहर निकल गया।

- क्या कर रहे हैं? रुपये चारपायी पर रखे हैं।

-जो चाहो कहो।

- मालिक मुख्तियार आप हैं। मैं क्या कहूँगी।

कहने के साथ पप्पू की अम्मा रुपये उठा कर गिनने लगीं। दोबारा गिना। फ़िर आँचल के खूँट में बाँध कर बोलीं कह देती हूँ, ले जाये।

फ़िर बाहर निकल कर बकरीदी से बोलीं गले में बँधा घुँघरुओं का पट्टा खोल कर रख दो और ले जाओ।

खूंटे से मुक्त होने की खुशी से बछड़ा चार-छः क़दम तो तेजी से चला लेकिन जब पीछे से गाय के होकड़ने की आवाज़ आयी तो उसे कुछ गड़बड़ होने का अन्देशा हुआ। उसने पैर रोप दिए। खींचने पर एक क़दम बढ़ाता फ़िर अड़ जाता। पप्पू की अम्मा दुआर पर खड़े-खड़े उसका जाना देख रही थी। पहले वह पेशाब के बहाने रुका फ़िर गोबर करने के बहाने। पप्पू की अम्मा से देखा नहीं गया। वे रुपये रखने के लिए अन्दर चली गयीं।

पहलवान लेटे ही रह गए। इन्तज़ार कर रहे थे कि बछड़ा कुछ दूर निकल जाये तो उठें।

पैदा होने के साथ ही यह पहलवान से परच गया था। उनके पीछे-दौड़ते कूदते खेतों तक चला जाता था। पप्पू से खूब हिला-मिला था। पप्पू ने रामगंज के मेले से खरीद कर इसे घुँघरुओं का एक पट्टा पहना दिया था. दौड़ता तो घुँघरुओं की घनघनाहट मन को मोह लेती। सीधे आँखों में आँखें डालकर देखता था। बड़ी-बड़ी कजरारी आँखें।

अचानक दौड़ने की आवाज़ आयी। पहलवान ने सिर उठा कर देखा आगे-आगे दौड़ कर आता बछड़ा, पीछे-पीछे मोटा डण्डा लिए बकरीदी। पहलवान उठ कर बैठ गये।

- पता नहीं कितना जोर है इसकी देह में! इतना तगड़ा झटका दिया कि मैं औंधे मुँह गिर पड़ा। आप उसका पगहा खुद मेरे हाथ में पकड़ाइये और थोड़ी दूर तक हँकवा दीजिए। इससे जानवर जान जायेगा कि मालिक ने अपनी मर्जी से उसे सौंपा है। तब उसका जोर अपने आप आधा हो जायेगा। फ़िर जाने में आनाकानी नहीं करेगा।

पहलवान बाँस का डण्डा लेकर हाँकने लगे। दो-तीन चोट खाने के बाद ज़मीन से मुँह लगभग सटाकर वह तीन बार होंकड़ा, फ़िर पीठ खलाकर सुस्त क़दम बढ़ाये।

प्रत्युत्तर में गाय और बौलों की आवाज़ आयी। उन्हें क्या पता चला? बछड़े ने क्या बताया? बताया कि हमेशा-हमेशा के लिए जा रहे हैं? फ़िर इस जनम में मिलना नहीं होगा?

पप्पू स्कूल से लौटे तो नगरे पर पड़े घुँघरुओं के पट्टे को देखकर माँ को खोजने दौड़े।

शाम को चूल्हा जलाने का मन नहीं कर रहा था पप्पू की माँ का।

बहुत दिनों बाद आज फ़िर पहलवान के सपने में आए पाँड़े बाबा।

46

पहली बार आए थे फाँसी लगाने के तीन-चार दिन बाद। उसी रुप में जिस रुप में पहलवान ने उन्हें फाँसी पर लटके देखा था। विभिन्न घण्टों के बीच। कुछ सरकारी अमले, जिनके चेहरे शिकारी जानवरों जैसे थे, पाँड़े बाबा को नीचे खींचने के लिए उनके लटकते पैर पकड़ने के लिए कूद रहे थे। पाँड़े बाबा पैर ऊपर सिकोड़ कर बचने का प्रयास कर रहे थे और भद्दी-भद्दी गालियाँ दे रहे थे।

उन्हें दूर खड़ा देख कर ललकारा था अरे पहलवान। एकठो लाठी लाकर भगाते क्यों नहीं इन हरामजादों को?

नहाने के लिए कुएँ की जगत पर बैठे-बैठे पहलवान यादों मे खो गये। अपने पिता की तरह निडर और स्पष्ट वक्ता थे पाँड़े बाबा। उनके पिता अवधी के नामी कवि थे। 'बाउर' उपनाम से लिखते थे। सन् 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय नौजवान थे तब अँग्रेज़ों और ज़मीदारों के जुल्म के खिलाफ़ लिखते थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद किसानों की दुर्दशा और स्वदेशी सरकार की गरीब विरोधी नीतियों के ख़िलाफ़ लिखने लगे। पड़ोसी गाँव गॅजेहड़ी के मशहूर शायर मजरुह सुल्तानपुरी को जब 'मार ले साथी जाने न पाये' गीत के लिए जेल हुई तो उनसे अपना समर्थन जताने के लिए बम्बई तक गये थे।

पहलवान के पिता जी समय-समय पर उनके बारे में बताते थे। 'बाउर जी' ने अपने दालान की एक कोठरी में पुस्कालय खोला था। उसका उदघाटन करने के लिए डुमराँव से पंडित श्याम नारायण पाण्डे आए थे। भीषण बारिश हो रही थी। दुर्गापुर बाज़ार से बाऊर जी के गाँव होकर जाने वाली कच्ची सड़क पर हाथ-हाथ भर पानी था। कविवर को बाज़ार से गाँव तक लाने के लिए भादर के एक ठाकुर साहब का हाथी माँगा गया था। पहलवान के पिता जी कविवर को हाथी पर बिठा कर लाए थे। रात में कवि सम्मेलन था। बादलों की गरज और चमक की परवाह न करते हुए उस छोटे से गाँव में डेढ़-दो हज़ार श्रोता जुटे थे।

क्या समझ थी! क्या पसन्द थी! क्या जीवन था!

ऐसे विद्या व्यसनी ग्रामीणों का जीवन और बेहतर होने की कौन कहे, और कठिन होता जा रहा

है।

पप्पू की अम्मा दो बार अन्दर से बाह आकर देख चुकी हैं। पहलवान घण्टों से जगत के नीचे पैर लटकाए बैठे हैं। धोती कन्धे पर पड़ी है। सामने पता नहीं कहाँ देख रहें हैं! कभी दहिना हाथ ऊपर उठता है और कभी उसकी उँगलियाँ हवा में कुछ लिखती जान पड़ती हैं।

-क्या सोच रहें हैं इतनी देर से बैठे-बैठे? नहाकर आते क्यों नहीं? बिटिया कबसे खाना तैयार करके राह देख रही है।

पहलवानिन सबेरे से दो बार याद दिलवा चुकी थीं कि बछड़ा बिक गया है। जाकर जोगी को दो महिने का खर्चा-खोराकी दे आइए। बोआई के समय ख़ाद का इन्तजाम नहीं हो पाया था तो सिंचाई के समय ही पड़ जाये। इससे पहले कि कोई तीसरा न टाला जा सकने वाला खर्चा पैदा हो जाये इसलिए जाकर दो बोरी यूरिया लाइये।

लेकिन पहलवान की ओर से कोई उत्तर न पाने के कारण उन्होंने पप्पू को पैसा देकर बाज़ार भेज दिया। यूरिया का क्या! एक बार बाज़ार से गायब हुई तो कहो महीनों न आये।

पहलवानिन को लगता है कि पिछली दो रातों से जागकर सिंचाई करने के कारण ही पहलवान की देह भारी हुई है। शुरुआती ठण्ड का पता नहीं चलता की कब लग गयी। रबी की सिंचाई के लिए दिन में बिजली आनी चाहिए लेकिन आ रही आधी रात को। और सबेरे सात बजते-बजते गायब। इसके पहले की दो रातों में महादेव ने सिंचाई किया और सर्दी खाकर लेट गये। जाड़े की रात में टार्च की रोशनी में खेत बेराना। छः सात घण्टे ठण्डे पानी और कीचड़ में हाथ पैर सानना। जवान आदमी का शरीर भी अकड़ जायेगा। आज की रात से पप्पू को लगाना पड़ेगा सिंचाई की ड्यूटी में।

दोपहर का खाना पहलवान ने बेमन से खाया और हुक्का लेकर सीधे माचे पर लेट गये।

घर के सामने वाले खेत में इस ख़रीफ़ में मक्के के साथ फूट (ककड़ी की एक मीठी प्रजाति) बोई गयी थी। पकी फूट की महक भादों की सुरसुराती हवा के साथ दूर-दूर तक फैलकर सियारों को न्यौता देती है। पन्द्रह-बीस दिन रातों दिन रखवाली करनी पड़ती है। इसीलिए माचा उस खेत में पहुँचाया गया। मक्का कब का कट गया, लेकिन माचा अभी भी वहीं खेत के किनारे पड़ा रह गया है।

पता नहीं आपने माचा देखा है या नहीं? यह कुछ बड़े आकार की खटिया ही है। पतले छोटे पायों की जगह ऊँचे मोटे पाये लग जाते हैं। कन्धे की ऊँचाई पर बुनाई कर दी जाती है। वर्षा और धूप से बचाव के लिये आठ-नौ फुट की ऊँचायी पर फूस की छाजन पड़ती है। भादों के महीने में कथरी-गुदरी ओढ़कर माचे पर बैठे-बैठे दूर-दूर तक बरसते पानी को देखते और तेज़ हवा के साथ चेहरे पर पड़ती फुहारों को महसूस करते हुए मन बैरागी होने लगता है।

जब-जब कोई गृहस्थ-गृहस्थी के भ्रम जाल से बेज़ार होता है, बेटे बहू और नाती-पोतों की संगत में चैन नहीं मिलता, वह सुकून की तलाश में माचे की शरण में जाता है। माचे की गोद में पनाह लेने वाले का एकान्त भरसक कोई भंग नहीं करता। माचे पर लेटे-लेटे दुःखी निराश उदास मन को अपने अन्तरतम में उतरने का मौक़ा मिलता है।

पप्पू की अम्मा जानती हे कि घर वाला माचे पर चला गया तो पत्नी परिवार ही नहीं देश-दुनिया की पहुँच से बाहर हो गया। इतने लम्बे दाम्पत्य में शुरुआती दिनों के ही एक-दो अपवाद होंगे जब पति के प्रबल आग्रह पर रात का खाना पहुँचाने के बहाने वे माचे तक आयी हों और पति द्वारा अभिसार के लिए पकड़कर ऊपर खींच ली गई हों।

बहुत दिन हुए एक बार चुटकी (भिक्षा) लेने आये बाबा जोखू दास ने पहलवान को बताया थामाचा गृहस्थाश्रम और संयास को जोड़ने वाला पुल है। गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों से भागना सम्भव नहीं है। लेकिन ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए भी मन को मोह माया के फन्दे में फँसने से बचाने की कोशिश करते रहना चाहिए। बाबा तुलसीदास ने माचे के लिए ही कहा है तुलसी घर बन बीच ही पर्ण कुटी रहु छाय।

माचा पर्णकुटी का ही चलायमान रुप है। इसीलिये यह घर और बन के बीच खेत में रहता है।

माचे पर लेटे-लेटे पहलवान याद करते हैं आज के सपने में पाँड़े बाबा हँस रहे थे। उनके साथ अलग-अलग रस्सियों में टँगेबीसों घण्ट भी हँस रहे थे। व्यंग्य की हँसी। किसी के सिर पर महाराष्ट्रियन पगड़ी थी। किसी के सिर पर काठियाबाड़ी। कोई ओड़िया बोल रहा था कोई कन्नड़।

- ये लोग कौन हैं बाबा? आप लोग इस तरह मुझे देखकर क्यों हँस रहें हैं?

-हम विभिन्न प्रान्तों के आत्महत्या करने वाले किसान हैं बच्चा। एक घट बोला हँस रहे हैं तुम्हारी इस बचकानी सोच पर कि तुम हिन्दुस्तान में रह कर किसानी जीवन के दुख और दरिद्रता से मुक्ति का सपना देख रहे हो। यह सपना कभी पूरा नहीं होने वाला बच्चा। बिना मरे इस बैडंड से मुक्ति नहीं मिल सकती। इसके लिए भावसागर पार करना होगा।

पहलवान अवाक सुन रहे थे।

पाँड़े बाबा फ़िर बोले हमारे पास आ जाओ। मृत्यु लोक के भ्रम जाल में क्यों पड़े हो बच्चा? छोड़ो सारा बैंडड

कहने के साथ पाँड़े बाबा ने अपने दोनों हाथ फैला दिये।

पहलवान डर गये। मुड़कर भागे। लेकिन यह क्या? जितना भी भागते, मुड़कर देखते तो पाँड़े बाबा को दोनों हाथ एकदम पीछे लगे हुए दिखते। वे भागते-भागते हाँफने लगे। आँख खुली तो साँस बहुत तेज चल रही थी। तो क्या पाँड़े बाबा उन्हें आत्महत्या के लिए उकसा रहे हैं?

आँख बन्द करके लेटे पहलवान के मन में शोक की एक मद्धिम धुन बज रही है। सवेरे जागने के साथ बजनी शुरु हुई है। पहले भी कई बार यह धुन बजी है, जब वे बहुत उदास निराश हुए हैं। बहुत पहले किसी नेता की मृत्यु पर उन्होंने रेडियो पर शहनाई की ऐसी धुन सुनी थी। इधर इस धुन से उन्हें डर लगने लगा है। डर लगता है कि किसी दिन बुद्धि उनका साथ न छोड़ दे। वे इस धुन के प्रभाव में न आ जायें। एक बार अख़बार में उन्होंने अँग्रेज़ी का एक शब्द पढ़ा था डिप्रेशन। यह शब्द भी कभी-कभी उन्हें डराता है।

ग्रामीणों में आत्महत्या की प्रवृत्ति नयी लग सकती है लेकिन पहलवान को लगता है कि यह इतनी नयी भी नहीं है। बदले रुप में यह लम्बे समय से मौजूद है। आस-पास के दस-पन्द्रह गाँवों का चालीस-पचास साल का हिसाब लगाया जाये तो पता चलेगा कि हर गाँव के दस-पाँच लोग घर-गृहस्थी मुसीबतों से हार मान कर साधू बनते रहें हैं। बाबा तुलसीदास भी अपने समय में इसका एक कारण सम्पत्ति का नष्ट होना बता गये हैं।

लेकिन सारे दुखों और कठिनाइयों के बावजूद वे आत्महत्या के लिए कैसे सोच सकते हैं? अच्छा होगा कि जो हमारी आत्महत्या की ज़मीन तैयार कर रहें हैं उनसे दो-दो हाथ किया जाये। पिछले साल जब पाँड़े बाबा की आत्महत्या का मामला टी. वी. और अख़बारों में गरमाया तो किसी बड़े नेता का बयान आया था। वह हैरान था कि किसानों की बेहतरी के लिए इतनी योजनाएँ लागू करने के बावजूद वे आत्महत्या क्यों कर रहें हैं? क्या इन्हें कोई दिमाग़ी बिमारी हो गयी है? जैसे सियार कुत्ते पागल होकर भागने लगते हैं, जैसे मुर्गियाँ पटापट मरने लगती हैं।

डिप्रेशन की इस लहर की पीछे कोई विदेशी साजिश तो नहीं है? जाँच कराना होगा।

ज़रुरत है ऐसे नासमझों को यह समझाने की कि दिमीग़ी बिमारी की जाँच किसानों की नहीं, किसानो के लिए योजनाकारों की कराने की ज़रुरत है जिनमें से खेलावन सिकरेटरी की मानें तो बहुतों

को यह भी पता नहीं होगा कि चने का पेड़ बड़ा होता है या अरहर का? आलू ज़मीन के नीचे फलता है या ऊपर ? ज़रुरत है कि ऐसे विशेषज्ञों को हटाकर वहाँ ज़मीनी आदमी बैठाने के लिए आवाज़ उठाने की। यही तो खेलावन भाई बहुत दिनों से कह रहे हैं। इसमें जो संतोष मिलेगा, वह जान देने में कैसे मिल सकता है?

उस दिन शाम को जोगी की अम्मा भरसार से सत्तू भुनाकर लौट रही थीं। सिकरेटरी जी के घर के सामने पहुंची ही थीं कि उनके छोटे बेटे ने आवाज़ लगायी चाची जोगी भइया का फोन है।

उनके पैर आप तेज़ हो गये। इस बार राशन खर्चा भेजने में देर हो गई। बेटा परेशान हो गया होगा। कहती हूँ कल ही तुम्हारे बप्पा पहुँचेंगे।

फोन ओसारे में ही रखा था। उन्होंने सत्तू की दौरी नीचे रखी चतो लड़के ने फोन का चोंगा उनके कान में लगा दिया।

-हाँ बेटवा। कइसे हो। खाना-पीना टैम से कर लेते हो? राशन खत्म हो गया होगा? बछवा बिक गया है। कल ही तुम्हारे बप्पा जा रहे है। अच्छा। तुम्हारे मामा दे गये? कब? और कुछ तो नहीं कह रहे थे?

- अम्मा. अभी मेरी शादी ब्याह की बात हरगिज मत कीजिए। मामा बहुत जोर दे रहे थे।

-हाँ बेटवा। आये तो थे यहाँ भी। ऐसा करो, तुम्हारे बप्पा को बुलवा लेते हैं। उन्होंने ऊँगली से खेलावन के बेटे को इशारा किया उन्हीं से जो कुछ कहना हो कह लो।

- अम्मा, बप्पा को मत बुलवाइए। हम उनसे नहीं कह पायेंगे। आपको बता दिया है। फोन काट रहे हैं। बिल बढ़ रहा है।

-ऐसा है बाबू, मालिक मुख्तियार तो तुम्हारे बप्पा ही हैं न! जैसा उनको ठीक लगे, जैसा करने में सबका उबार हो वही तो करना ठीक रहेगा बेटवा। आयँ, बोलो? बोलते क्यों नहीं?

फोन से हूँ-हूँ की आवाज़ आने लगी।

-आवाज नहीं आती।

खेलावन बहू ने फोन का चोंगा उनके हाथ से लेकर अपने कान में लगाया और बोलींकट गया। दूँ हूँ माने कट गया।... और चोंगा फोन पर रख दिया।

पहलवान के साथ खेलावन भी ओसारे मों आ गए। खेलावन बहू ने बताया- जोगी का फोन था। अभी-अभी कटा है।

- क्या कह रहा था? पहलवान ने पत्नी से पूछा।

-कह रहा था मामा आये थे। राशन किराया दे गए हैं। विवाह करने के लिए बोल रहे थे। उसने इनकार कर दिया। कह रहा था कि बप्पा को बोल देना, मेरी शादी-ब्याह की बात हरगिज न करें।

पाँड़े बाबा की बरखी पर इकट्ठी हुई भीड़ देखकर खेलावन को राहत महसूस हो रही है कि किसानों को अपने ऊपर मँडराने खतरे की आहट मिलने लगी है। आस-पास के दस-बारह गाँवों से ही चार-पाँच हज़ार की भीड़ इकट्ठी हो गयी।

खेलावन ने इसके लिए कम मेहनत नहीं की। पुराने अनुभव से सबक लेते हुए उन्होंने पाँड़े बाबा के गाँव के लोगों के साथ बैठकर आसपास में गाँव के हर बिरादरी के मातबर लोगों की सूची बनायी और

आदमी भेजकर न्यौता पहुँचाया। यह सचमुच संतोष की बात थी कि सारी जातियों के लोग एक मंच पर इकट्ठा हुए।

लोक नायक परवाना के गीतों का आकर्षण भी भीड़ को खींचने का एक कारण था। परवाना का ढोल सवेरे दस बजे से ही टनकने लगा था। पाँड़े बाबा के गाँव के पोखरे के सामने वाली उतनी बड़ी बाग़ न होती तो यह भीड़ कहाँ समाती? पोखरे में नहा-नहाकर तिलांजली देने का काम तीन बजे तक चला। भाषण का सिलसिला तो सूरज डूबने तक चलता रहा। लाई-चना बँटवाते और शरबत तैयार कराते हुए भी पहलवान के कान भाषण पर ही लगे रहे। कितना नयी-नयी बातों की जानकारी हुई!

पहलवान को उस वक्ता का भाषण बहुत अच्छा लगा जिसने किसानों की समस्याओं के लिए संघर्ष करने के लिए अपना संगठन खड़ा किया है। संगठन में शामिल होने के लिए किया गया उसका आवाहन कितना ज़ोरदार था जैसे सुराजियों में नाम लिखाने के लिए गाँधी जी ने आवाहन किया था, जैसे आज़ाद हिन्द फ़ौज में भर्ती होने के लिए नेताजी ने आवाज़ दी थी, जैसे जमीदारों के खिलाफ लामबल्द होने के लिए इसी धरती से बाबा रामचन्द्र ने पुकारा था, उसी तरह किसानों के साथ बेइन्साफ़ी करने वालों के ख़िलाफ़ लामबन्द होने के लिए हम आज आवाज़ देने आये हैं।

जब उसने दोनों हाथ उठाकर अवधी में पूछा बोला के तैयार बा?

तो हज़ारों कण्ठों से आवाज़ आयी सब केहू तैयार बा।

आवाज़ के साथ हज़ारों हाथ हवा में उठ गये थे।

पहलवान को याद आता है, एक वक्ता कह रहा था कि देवता-पित्तर को लपसी-सोहारी खिलाने और जल चढ़ाने से जान नहीं बचने वाली। जान बचेगी कमर कसकर जूझने से। पहलवान को लगता है जैसे वह वक्ता ख़ास उन्हीं पर व्यंग्य कर रहा था।

बरखी से पैदल गाँव लौटने वालों का दल सीधे खेत की मेड़ों से होकर लौट रहा है। पन्द्रह बीस लोगों का दल। पैदलियों की अगुआयी पहलवान कर रहे हैं। अँधेरा घिरने के साथ-साथ हवा में ठण्ड उतर आयी है।

-बोले तो अपने पी.सी.एस. बेटा भी लेकिन उनके भाषण पर ताली नहीं बजी। पीछे-पीछे आ रहे सूबेदार हरदयाल कहते हैं।

- तालियाँ तो तब बजती जब किसी के समझ में आता। बी.एस.सी., बी.एड. करके पाँच साल से प्राइवेट स्कूल में पाँच सौ रुपये पर मास्टरी करने वाले राधेश्याम कहते हैं कितनी तरह के खतरों से आगाह किया पी.सी.एस. ने। कोई समझ पाया? बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा बीज पेटेंट कराने से पैदा खतरा। किसानों की जमीन हड़पकर उद्योगपतियों को दिए जाने का खतरा। सड़कों का जाल बिछाने में किसान की जमीन माटी के मोल कब्जा करने का खतरा। किसानों के लिए जरुरी चीजों पर सब्सिडी बढ़ाने की बजाय घटाते चले जाने का खतरा। कितनी आँख खोल देने वाली बात बतायी कि दूसरे उत्पादकों के उत्पाद के लिए एम.आर.पी. तय होता है यानी मैक्सिमम रिटेल प्राईस। जबकि किसान के उत्पाद के लिए मिनिमम। सपोर्टिंग प्राइस न्यूनतम समर्थन मूल्य। बाकी के हिस्से में मैक्सिमम और किसान के हिस्से में मिनिमम। इतना मिनिमम कि लागत का आधा मिलना भी पहाड़। इन बातों की तह तक जो पहुँचेगा वही न ताली बजायेगा?

सब चुप हो गये।

सचमुच राजेश्वर की जानकारी ताज्जुब में डालती है, पहलवान सोचते हैं। जानकार भी है और जुझारु भी। उन्हें उसकी उस दिन की दिलेरी याद आती है जब अकेले दम पर उसने उन्हें अमीन की चुंगल से छुड़ाया था। जहाँ गाँव के ज़्यादातर लड़के कालेज और बाज़ार में लड़कियों का दुपट्टा खींचने और हा-हा, ठी-ठी करने में लगे हैं, झोपड़ी जैसे अपने घरों में ऐश्वर्या राय और शाहरुख खान का पोस्टर चिपकाने में लगे हैं, वहीं राजेश्वर जैसा लड़का भी उनके गाँव में पैदा हुआ है इस पर उन्हें गर्व है। वे ख़ुद किसी दिन फ़ुरसत में उसके पास बैठकर सारी बातें समझेंगे।

तभी फकीरे पूछता है काका आप क्यों नहीं बोले?

पहलवान हँसे उतने बड़े-बड़े विद्वानों के बीच मैं क्या बोलता फकीरे !

लेकिन ऐसा नहीं था। भाषण सुनते हुए पहलवान के मन में भी बोलने की ललक जगी थी। कई बार एक किनारे जाकर उन्होंने बोलने वाली बातों को मन ही मन दोहराया था। उस समय कोई कहता तो ज़रुर बोलते। बोलते कि जो बाहरी लोग लूट रहे हैं, चूस रहे हैं उससे बचाने के लिए तो इतने-इतने लोग तैयार हैं लेकिन जहाँ भाई ही भाई को लूट रहा है उससे कौन बचाएगा? कहते कि सारे लड़कों के

बाप इसी मीटिंग में हाथ में गंगाजल लेकर कसम खाएँ कि दहेज लेना हराम है। दहेज लें तो समझो अपनी बेटी पर काँछ खोले। बोलते तो बोलने के बाद सबसे पहले खुद कसम खाते।

तभी थोड़ी दूर से होकर गुजर रहे दूसरे गाँव के दल का कोई नौजवान ऊँचे स्वर में गाना शुरु करता है- अभी अभी मीटिंग में सुना हुआ लोकगीत-

देसवा होई गवा सुखारी हम भिखारी रहि गये।

सब चुप होकर सुनने लगते हैं। अपने भिखारी होने का बोध उन्हें निर्वाक कर देता है। पहलवान सोचते हैं सचमुच हम तब भी भिखारी थे जब अँग्रेज़ों का, नवाबों का, ज़मींदारों का राज था और आज भी भिखारी हैं, इस राज में भी जिसे सब सुराज कहते हैं।

पहलवान को अकेले देख पप्पू की अम्मा ने पूछा-जोगी के मामा कहाँ हैं?

-जोगी के मामा मेरे साथ कहाँ थे?

-उधर सबेरे आप पाँड़े बाबा के गाँव जाने के लिए निकले इधर वे आ गये। फ़िर दोपहर में खाना खाने के बाद बोले मुझे भी बरखी में जाना है। वहीं जीजा जी से भी भेंट हो जायेगी।

-भीड़ में खोज न पाये होंगे। किसलिए आये थे?

-बताने आये थे कि लाल बाबू जोगी की पढ़ाई का पूरा खर्चा उठाने को तैयार हैं। यह भी कह रहे थे कि जोगी की पढ़ाई पूरी होने तक वे इन्तज़ार करने को भी तैयार हैं। बस तय-तमाम हो जाये, तिलक-बरिच्छा का रस्म हो जाये।

- तो तुमने क्या कहा? पहलवान ने खटिया पर बैठते हुए पूछा।

पप्पू की अम्मा ने बेटी को गुड़-पानी और हुक्का भर लाने के लिए आवाज लगायी।

- मैं क्या कहती! छोटे भाई हैं। लेकिन पिछली बार जोगी के पास से लौट कर आप ही तो

बताये थे कितनी कठिन पढ़ाई है इंजीनियरी की। मोटी-मोटी किताबें पढ़नी पड़ती हैं। एक दो नहीं दर्जनों। आठ-दस घण्टे रोज की पढ़ाई। इतनी कि आँखों की ज्योति मन्द पड़ जाती है। चश्मा चढ़ जाता है। खुद पकाना खुद बर्तन धोना। फ़िर साइकिल से रोज आठ मील कालेज आना-जाना। पूरे कालेज में कुल दस-बारह लड़के ही हैं जो साइकिल से आते-जाते हैं। बाकी बस या मोटर साइकिल से। पूरी तपस्या है। यही बात मैंने उसके मामा से कही कि जब इतनी तपस्या में जुटा है मेरा बेटा तो उसकी मरजी के बगैर कैसे 'हाँ' कर दें? पता नहीं उसका क्या सपना है? वह क्या सोचता है?

-फ़िर?

-फ़िर बेटी के ब्याह की सहूलियत की बात करने लगे कि जोगी की फ़ीस का जो पैसा बचेगा उससे झुन्नू बाबू के लड़के को छेंक लेंगे। खेत बेचने की नौबत नहीं आएगी।

-फिर?

बेटियाँ - मैंने कहा कि क्या जिनके पास देने के लिये लाख पचास हज़ार नहीं है उनकी कुँवारी रह जाती हैं? नहीं मिलेगा ऊपर की कमाई वाला लड़का, न सही। हमारे जैसे हरजोतवा किसानों के घर भी तो लड़के पैदा हुए होंगे। उन्हें खोजेंगे।

-वाह भाई वाह! पहलवान नीचे उतर कर हाथ पैर धोते हुए बोले- फ़िर क्या बोले?

-मेरे भाई का मुँह एकदम लटक गया। कहने लगे कि आती हुई लक्ष्मी को ठोकर नहीं मारा जाता। मैंने कहा कि उम्र भर के लिए कमा कर कोई नहीं रख पाता। कमाते-खाते ही सबका बेड़ा पार होता है। समय आने पर बेटे की फ़ीस भी भर जायेगी, बेटी का ब्याह भी हो जायेगा। क्या पता जोगी और विद्य बेटी के भाग्य में इससे भी अच्छा रिश्ता लिखा हो!

- तब? गुड़ की डली मुँह में डालते हुए पहलवान उत्सुक हुए।

-तब मेरे भाई ने एक ऐसी बात कह दी कि मेरी बोलती बन्द हो गयी।

- आँय? क्या कह दिया?

- राजपत की बड़ी बेटी है न शशि, पन्द्रह-सोलह वर्ष की हो गयी है। लाल बाबू के साढू का एक लड़का है, अठारह-बीस बरस का। लाल बाबू ही अपने साथ रखकर उसे पढ़ा-लिखा रहे हैं। शशि के लिए राजपत की नजर उसी लड़के पर है। फ़िर कुछ रुक कर बोलीं राजपत के भी तीन बेटियाँ हो गयी हैं। अभी से चिन्ता में पड़े हैं कि कैसे निपटेंगी? बोले कि दीदी अगर जोगी का रिश्ता लाला बाबू के घर पक्का कर लीजिए तो समझिए विद्या बिटिया के साथ-साथ आपने शशि का भी उद्धार कर दिया।

पहलवान पानी पीकर देर तक सिर हिलाते रहे। फ़िर पूछा क्या लाल बाबू ने इसके लिये हामी भर ली है?

-अभी कैसे बात चला सकते हैं? लेकिन उम्मीद किए हैं कि धीरे-धीरे नजदीकी बढ़ेगी तो बात बन सकती है।

-इसलिए तुम्हारे भाई इतना पीछे पड़े हैं!

कुछ देर तक दोनों लोग चुप रहे। फ़िर पहलवान ही बोले- तब तुमने क्या कहा?

-तब मैं क्या कहती? आपके ऊपर टाल दिया कि अपने जीजा से कहिए। जैसा वे ठीक समझें। लेकिन आपसे तो वे वहाँ मिले ही नहीं। यहाँ भी लौट कर नहीं आये। लगता है, नाराज होकर चले गये।

पहलवान कुछ बोले नहीं। उन्हें हुक्का पकड़ाकर लेट गये तो पप्पू की अम्मा भी खाने-पीने का इन्तज़ाम करने अन्दर चली गयीं। पहलवान ने आते ही बताया था कि दिनभर खड़े-खड़े पैर दुखने लगे। इसलिए खाने-पीने के बाद वे गरम तेल की कटोरी लेकर मालिश करने पहुँची।

- बरखी का हालचाल बताइये। कैसी रही?

- बहुत अच्छा जुटान था पप्पू की अम्मा। बहुत अच्छी-अच्छी बातें जानने सुनने को मिली। किसानों की कब्र के लिए गड्ढा खोदने वाले बहुत हैं तो उनके जिन्दा रहने की राह खोजने वाले भी कम नहीं हैं।

पप्पू की अम्मा कुछ समझ नहीं पायीं फ़िर भी 'हूँ. हाँ' करती रहीं। अभी इनकी नाक बजने लगेगी, यह सोच कर बोलीं भाई नराज होकर लौट गया, यह सोच कर मन उदास हो गया पप्पू के बाबू। अगर एक के मानने से तीनों घरों में खुशी आती है तो आप जोगी को जाकर समझाइए।

-लेकिन मैंने तो कल बरखी से लौटते हुए कुछ और ही सोचा है।

-क्या?

- मैंने सोचा है कि बेटों की शादी में कोई दान-दहेज नहीं लेंगे।

- यह सब बातें भी वहाँ हुई थी क्या?

-हुई तो नहीं लेकिन होनी चाहिए थी। बेटी का बाप बन कर जितनी बार कोई किसी लड़के के बाप के दरवाजे जाता है, उतनी बार उसका चुल्लू भर खून घटता है। मैं चाहता हूँ कि मेरे दरवाजे आकर किसी बेटी के बाप का खून न घटे।

54
पप्पू की अम्मा तुरन्त नहीं समझ पायीं कि वे यह बात इस समय क्यों बता रहें हैं? लेकिन यह बात सुनकर उनके दिल की धड़कन थोड़ी तेज़ हो गयी।

-ले चाहें न लें. लेकिन देना तो पड़ेगा ही। चाहे थोड़ा, चाहे ज्यादा।

हाथ में है। -देने का मामला तो पूरी तरह अपने हाथ में नहीं है लेकिन लेने का तो सोलहो आना अपने

- जब तक देना नहीं रुकता तब तक लेना नहीं रुक सकता पप्पू के बाबू। रोकना है तो पहले देना रोकने की हिम्मत कीजिए।

आँय ! पहलवान उनका मुँह देखने लगे।

कहीं बात ऐसे मोड़ पर न पहुँच जाय कि वापसी सम्भव न रहे, इस आशंका से पहलवानिन तेल की ख़ाली कटोरी लेकर पर्लंग से नीचे उतर गयीं। पहलवान का मन हुआ कि हाथ बढ़ाकर पहलवानिन को रोकें और जलती हुई ढिबरी बुझा दें। ढिबरी तो बुझी लेकिन पहलवानिन के जाने के बाद।

अपनी खटिया पर पड़े-पड़े पहलवानिन सोच रही हैं कि जब से बरखी की सभा से लौटे हैं, पहलवान का रंग-ढंग उछाहिल लग रहा है। ज़्यादा बहस करके इस उछाह पर ग्रहण लगाना ठीक नहीं है।

मुँह अँधेरे उठकर पहलवान ने जानवरों की नाँद में चारा डाला और दिशा मैदान के लिए गये तो उधर से ही महादेव को बुलाने चले गये। आज आलू की खुदायी होनी थी। महादेव पति-पत्नी के साथ वे भी खेत में चले आये। धूप होने के पहले जितना काम लिपट जाये उतना अच्छा।

खेत से ग्यारह बजे के बाद लौटे तो पत्नी ने कहा बहुत देर कर दी। जल्दी से नहा कर मुँह में कुछ डाल लीजिए।

- नहायेंगे बाद में। मुँह में डालने के लिये जो कुछ हो ले आओ।

सुनकर पत्नी को आश्चर्य हुआ। इधर जबसे शंकर जी की स्थापना किए, बिना नहा कर जल चढ़ाए मुँह में पानी की बूंद तक नहीं डालते थे। आज सूरज पश्चिम में कैसे निकल रहा है!

वे लपक कर अन्दर गयीं और एक मौनी में लाई चना और नमक मिर्च दे गयीं। फ़िर जब तक पहलवान ने हाथ-पैर धोया, एक गिलास चाय दे गयीं।

चाय ख़त्म करके पहलवान ने जानवरों को पानी पिलाया, फ़िर धोती कन्धे पर रख कर सगरे की ओर चले गये।

पप्पू की अम्मा उन्हें सगरे की ओर जाते देख कर और खुश हुई। पता नहीं कितने दिन बाद आज सगरे का रुख किए हैं। पहले बिना दो बार सगरे के आर-पार तैरे उनका नहान नहीं पूरा होता था। उन्होंने बेटी को जल्दी से खाना तैयार करने के लिए कहा।

खाना खाते हुए पहलवान ने एक रोटी और मांगी। खाना खाते समय न बोलने की परिपाटी भी तोड़ दी।

पहलवानिन को लगा उनके मर्द की छाया में उनका मर्द वापस लौट रहा है, जैसे वनवास के दौरान आग में समाई सीता लंका विजय के बाद अपनी छाया में वापस आ गयी थीं। उस दिन पाँड़े बाबा की बरखी की सभा में ऐसा क्या हुआ?

कुत्ते को कौरा देकर और जानवरों के मुँह थोड़ी-थोड़ी रोटी डालकर दाँत खोदते हुए पहलवान दलान की ओर गये तो पीछे से पप्पू की अम्मा भी हुक्का लेकर पहुँच गयीं। पहलवान अधलेटे होकर हुक्का

पुड़काने लगे तो बोलीं आराम कर लीजिए तो जरा बाजार चले जाइये। मिट्टी का तेल खत्म है। नमक भी नहीं है। पैरों में लगाने के लिए थोड़ा महावर लाना है। थोड़ा चून पान भी लेते आइयेगा।

- इतना समान? तो तुम भी चली चलो।

- हम क्या करेंगे चल कर !

- चलो आज अपने हाथ से तुम्हें पान खिला कर लाते हैं।

-वह किस खुशी में?

-मेरी सोच में अपनी सोच मिलाने के लिए हमेशा तैयार रहती हो इसलिए।

-हुँह! वे मुस्करायीं-पान खिलाने चलें हैं। वह भी बीच बाजार में। जब पान खिलाने की उमर थी तो कभी अकेले में भी नहीं खिलाये।

-तब अकल नहीं थी। कदर नहीं जान पाये। पहलवान पत्नी की ठुड्डी ऊपर उठाते हुए मुस्करा कर बोले कूद कर साइकिल के कैरियर पर बैठ लेना, फ़िर देखना कैसे फरटि से ले चलता हूँ।

- और नहीं सँभाल पाये, गिरा दिए तो ?... वे मुस्कराई।

-पच्चीस साल से कोई और सँभाल रहा है क्या भाई?

-हटिए, इतनी उमर में साइकिल पर बैठाने चले हैं! कहते हुए लाज भी नहीं आती।

-लाज क्यों आयेगी? लोग तो दूसरियों को बैठाते हैं। मैं तो अपनी को बैठाऊँगा।

- दूसरियों को बैठाने के लिए सभी लपकते हैं। अपनी के लिए किसी के पास फुरसत नहीं रहती। पप्पू की अम्मा आँख नचा कर तिरछे देखते हुए बोलीं।

पहलवान मुस्कराते हुए बोले- इतनी मोटी न हो गयी होतीं तो आगे बैठाने लायक थीं।

-चुप रहिए। आज क्या हुआ है तुम्हें?... वे उठ कर बाहर जाते हुए बोलीं।

- तुम्हारी मरजी ! लाओ फ़िर पैसा-वैसा तो दो।

पप्पू की अम्मा ने लौटकर पहलवान की जेब में कुछ रुपये और चूना लाने के लिए चुनौटी डाली। मिट्टी का तेल लाने के लिए टिन का डिब्बा साइकिल के हैण्डिल से लटका दिया। एक बार फ़िर समानों की सूची गिनायी। फ़िर बोलीं मैं जा रही हूँ जरा सुनरी के घर तक। कल उसका गौना है। सबके साथ अभी डीह पूजने जाना है।

थोड़ी देर बाद पहलवान साइकिल पर बैठ कर निकले तो रास्ते में औरतों का झुण्ड गाते हुए जा रहा था। पप्पू की अम्मा लाल साड़ी पहने गाते हुए आगे आगे चल रही थीं-

रंग बिगड़ि गा मोर जालिम तोहरी फिकिर से।

पहलवान सोचने लगे क्या सचमुच मेरी, मेरी गृहस्थी की फ़िक्र से पप्पू की अम्मा का रंग बिगड़ गया है? ऐसा नहीं है। उम्र के साथ तो सभी का रंग थोड़ा हल्का पड़ता है लेकिन बिगड़ गया है, ऐसा नहीं कह सकते। पप्पू की अम्मा की आँखे, उनकी हँसी अभी भी जकड़ती है।

ख़रीदारी करके बाज़ार से निकल रहे थे कि आवाज़ आईअरे, पहलवान भइया हैं क्या?

उन्होंने मुढ़कर देखा। पान की गुमटी के सामने मिडिल स्कूल का उनका सहपाठी मुरली खड़ा था। वे हँसते हुए साइकिल मोड़ कर मुरली के पास आ गये। साइकिल स्टैण्ड पर खड़ी की। दोनों मित्र लपककर गले मिले फ़िर एक दूसरे का हाल-चाल पूछने लगे। पहलवान को याद आया कि मुरली कबड्डी बहुत अच्छी खेलता था। वही उनका जोड़ थाम पाता था. मुरली ने शिकायत की खाने-पीने में कंजूसी करने लगे क्या भाई? क्या देह थी। गला कर आधी कर दिए। मूँछे तक छोटी हो गयीं। पहले क्या बिच्छू के डंक जैसी घनी ऐंठी मूँछें थीं।

- अरे भाई, गृहस्थी का झोड़ तो तुम जानते ही हो। सबकुछ जुरता-जुहाता रहे तब भी समय से खा-पी नहीं पाता आदमी।

- जवानी का खाया पिया ही बुढ़ापे में काम आता है भइया। कहते हैं कि घोड़े का, पहलवान का और वेश्या का बुढ़ापा बहुत खराब गुजरता है।

पहलवान को वेश्या से तुलना किया जाना अच्छा नहीं लगा। बात बदलने के लिए पूछा अपनी सुनाओ। कहाँ हो आजकल?

- मैं तो सूरत की एक कपड़ा मिल में लगा हूँ। दो साल बाद गाँव लौटा हूँ। सुना तुम्हारा बेटा इंजीनियरी में आ गया। तबियत खुश हो गयी। लेकिन मिठाई खाने को नहीं मिली। आज दिखायी पड़े तो सोचा आवाज देकर एक बीड़ा पान ही खाया जाय।

-क्यों नहीं, क्यों नहीं आइये।

कहा। -दोनों लोग मुड़कर गुमटी के सामने खड़े हो गये। पहलवान ने गुमटी वाले से एक पान लगाने को

-एक क्यों?

- मैंने तो छोड़ दिया। तीन-चार साल हुए।

जोड़ा। अकेला पान तो दुश्मन को खिलाते हैं। मुरली हँसने लगा-दो भाई पहलवान को भी एक

फ़िर हैण्डिल में टँगे पहलवान के झोले के ऊपर महुए के पत्ते में लपेट कर रखे पान के बण्डल को देखकर बोला- फ़िर यह बण्डल किसका है?

- तुम्हारी भौजी के लिए।

हँसा मुरली-हाँ सेवा करते रहिए। बुढ़ापे में वही काम आयेंगी।

-अभी क्या कोई दूसरी काम आ रही है? हँसे पहलवान भी। फ़िर देर तक मुरली सहपाठी लड़कियों की चर्चा करके और हथेली उल्टी कराकर छड़ी मारने और मुर्गा बनाने वाले मौलवी साहब की बातें

सुनाकर हँसता रहा। गिलौरी भरे मुँह को ऊपर उठा कर गिरने से बचाते हुए दोनों हँस रहे थे, फ़िर भी पहलवान के कुर्ते पर पीक की कुछ बूँदें गिर गई। मन उत्साह और खुशी से भर गया।

लेकिन पहलवान के मन में एक संकट भी पल रहा था। ख़रीदारी करने में जेब के सारे पैसे ख़त्म हो गये थे। मुरली यदि विदा लेकर पहले चल पड़ता तब तो वे बाद में पान वाले से कह सकते थे कि पान का पैसा उधार रहेगा। मुरली को लगता है कोई जल्दी ही नहीं थी। देर होने लगी तो उन्होंने पान वाले से कहा-पान का पैसा लिख लो राधे। अगली बाज़ार के दिन दे देंगे।

- अरे क्यों, मैं दिए देता हूँ!

- तुम क्यों दोगे भाई? मुरली का हाथ पकड़कर उन्होंने सख्ती से मना कर दिया- हमारी राधे की लिखा पढ़ी कोई आज से चल रही है।

मुरली के जाने के बाद मित्र के सामने जेब ख़ाली होने की बात उजागर होने का मलाल उन्हें थोड़ी देर सालता रहता है। फ़िर उन्होंने इस मलाल को झटक दिया। मुरली उसकी तन्दुरुस्ती पर चिन्ता प्रकट कर रहा था। उन्होंने भी वह कहावत सुनी थी कि चिंता मुर्दे को जलाती है, जबकि चिन्ता आदमी को जिन्दा ही जला देती है। चिन्ता ही सारी बीमारियों की जड़ है। इसी से मन गिरता है। गठिया-बतास पकड़ता है।

ज़िन्दगी के झमेले तो मरते दम तक साथ नहीं छोड़ने वाले। उनके मन में कल से ही बरखी वाले नेता जी का भाषण, उनका बुलावा गूँज रहा है। उन्होंने तय किया कि वे भी नये सुराजियों में अपना नाम लिखायेंगे। ज़िन्दगी दस के, देश के काम आने से ही सार्थक होगी। इसके लिए फ़िर से जवान होने की ज़रुरत है। जवानी कहीं गयी थोड़े है। ज़रुरत है उसे महसूस करने की। मुरली कह रहा था- पहलवान का बुढ़ापा। कैसा बुढ़ापा? एक बार पहलवानिन ने हँसते हुए उन्हें जवाब दिया था मौका मिले तो मौर बाँधकर विवाह करने निकल पड़ोगे और कहते हो बुढ़ा गये।

बारी-बारी से उन्होंने दोनों हाथों, फ़िर दोनों पैरों को झटका और थोड़ा झूमकर साइकिल चलाने लगे। गाँव पहुँचने के पहले सड़क के बगल में वह बाग़ थी जिसमें उनके गाँव का अखाड़ा था। नागपंचमी के

दिन यहीं कुश्ती और लम्बी कूद की प्रतियोगिता होती है। अखाड़े के डेढ़ फ़ीट ऊँचा लम्बा ढलवा पूँछ वाला मुंढा मुंढा दूर दूर से दिखायी पड़ रहा था। इसी से छलाँग लगाकर वे लगातार तीन साल अपने गाँव में लम्बी कूद के चैम्पियन बने थे।

बाग़ सुनसान थी। मुढ़े के आस-पास घास उग आयी थी और सूखी पीली पत्तियाँ उदासी का माहौल बना रही थीं। इसी मुंढे से नाप कर वे चौदह हाथ लम्बी छलाँग लगाते थे। साइकिल पटरी से उतारकर एक पैर जमीन से टिकाकर वे कुछ देर टकटकी लगा मुंढे को देखते रहे। उन्हें लगा कि मुंडढा भी उन्हें देखकर उदास हो गया। पूछ रहा है भइया बहुत दिन हुए दरसन नहीं दिए। एकदम भूल गए क्या? नागपंचमी के बाद आजतक कोई उसके पास नहीं गाय होगा।

उनकी साइकिल का हैंडिल अपने आप बाग़ की ओर मुड़ गया। साइकिल स्टैण्ड पर खड़ी करके थोड़ा झुककर उन्होंने उस जगह की शिनाख्त की जहाँ उनकी ऐड़ी पड़ती थी। फ़िर टहलते हुए मुंढा के पास तक आये और उस पर गिरी पत्तियों को अँगोछे से झाड़कर उड़ा दिया। अब कूदें तो कहाँ तक पहुँचेंगे?

उन्होंने आस-पास देखा। कोई नहीं था। कोई हो भी तो क्या? सारी चिंता झोंको भाड़ में। खेत रेहन होने की चिन्ता। बेटी के ब्याह की चिन्ता। बेटे की फ़ीस की चिन्ता। ट्यूबवेल के बिल की चिन्ता। सबको झोंको भाड़ में। बाजुओं को तौलते हुए वे साँस खींचकर फेफड़ों में हवा भरते हैं। कितनी कुव्वत बची है देह में? आज कूदकर देख लेना चाहते हैं।

सूरज डूबने से पहले लाल हो रहा है। वे धोती की लाँग खींचकर पीछे खोंसते हैं। चार-पाँच बार बैठक लगाकर दोनों पैर झटकारते हैं। फ़िर दौड़ की लीक पर साठ-सत्तर फ़ीट पीछे जाते हैं। दौड़ते हैं तो लगता है पैर दौड़ाना भूल चुके हैं। लेकिन जल्दी ही रफ़्तार पकड़ लेते हैं। उन्हें लगता है कि उनके साथ उनचासों पवन दौड़ पड़े हैं। मुंढे से हुमककर हवा में छलाँग लगाते हैं तो उन्हें लंका के लिए छलाँग लगाते हनुमान जी याद आ जाते हैं।

पी.सी.एस. देखता तो कहता जैसे जाल पड़ने पर मछलियाँ उछलती हैं... यह मौत के ख़िलाफ़ लगायी गयी छलाँग है।... आख़िरी छलाँग।

***** समाप्त *****